Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

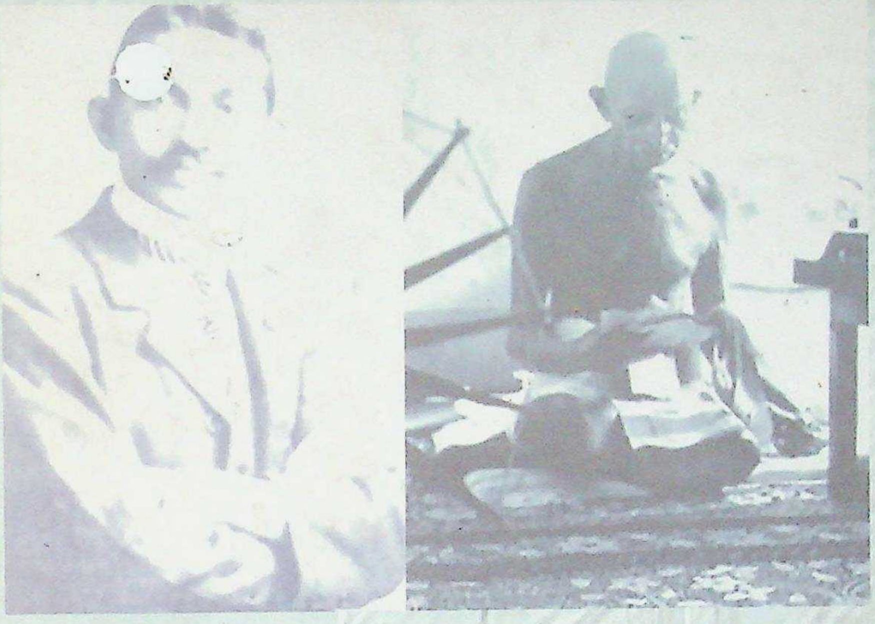

मोहन से महात्मा

तथा अन्य रूपक

सुनील केशव देवधर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्द, स्वर, आवाज और संगीत के सौन्दर्य को अर्जित करने के लिए एक लम्बी साधना की दरकार होती है। कहते हैं पके हुए कान और साधा हुआ मन चाहिए होता है तब कहीं जाकर सौन्दर्य के रहस्य खुलते हैं। यह रहस्य ही एक व्यक्ति को अवचेतन में एक रचना के निर्माण का रास्ता देता है। यह रास्ता लेखन से सम्पादन तक तय होता है। बात जब रेडियो रूपक विधा की हो तो विषय के अनुरूप शोध, अध्ययन और विश्लेषण की भी जरूरत होती है। जिसमें कथा खड़ी करना–उसके अनुरूप शब्दों का चयन, स्वर संधान, आवाजों का यथार्थ संग्रह और संगीत निर्माण ऐसे अपरिहार्य सृजनात्मक काम हैं जिसके लिए मेधा, संवेदना, ज्ञान और सम्पादन कला का एक ही व्यक्ति में होना आवश्यक है। बगैर इन तत्वों के एक रूपक या तो बनता नहीं या फिर वह लंगड़ा-लूला होता है।

रेडियो की विधाओं में 'रूपक' को एक अत्यन्त अहम दर्जा प्राप्त है ठीक वैसा जो फिल्म विधाओं में वृत्तचित्र को। वृत्तचित्र रेडियो विधा में भी प्रचलित स्थापित हैं किन्तु रूपक उससे जुदा विधा है लेकिन आत्मा डाक्यूमेंट्री की ही। एक जगह शुद्ध यथार्थ है तो रूपक में लेखक-निर्माता कल्पना और स्वप्न को भी भाषा में शामिल करता है विशेषतः अतीत और भविष्य के अदेखे प्रसंगों के सन्दर्भ में। फिल्म विधा रेडियो के बाद विकसित हुई अतः उसने रेडियो से तत्व ग्रहण किए।

सिर्फ श्रवणेन्द्रियों के बूते एक पूरी कथा को हू-ब-हू श्रोताओं की चेतना में खड़ा करना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(शेष अगले फ्लैप पर....)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदरणीय श्री अग्निशेखर
के प्रति
पूरे आत्मीयभाव से,

[signature]

9/1/12

(M) 09823546592

Book Donated
By
Agnishekhar & Kshama Kaul

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोहन से महात्मा

तथा अन्य रूपक

(रेडियो रूपक संग्रह)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोहन से महात्मा

तथा अन्य रूपक

डॉ. सुनील केशव देवधर

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No....5029....
Dated.......28/12/2024

शिल्पायन
दिल्ली-110032

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

© सुनील केशव देवधर

प्रकाशक
शिल्पायन
10295, लेन नं. 1, वैस्ट गोरखपार्क,
शाहदरा, दिल्ली-110032
दूरभाष : 011-22821174

मूल्य
120.00

संस्करण
2007

आवरण
सुचिंत मंडलोई

शब्द-संयोजन
उमेश लेजर प्रिंट्स, दिल्ली

मुद्रक
रुचिका प्रिण्टर्स, दिल्ली-110032

Mohan Se Mahatma Tatha Anya Roopak
by Sunil Keshav Devdhar

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोहन से महात्मा—एक दृष्टि

'मोहन से महात्मा' रूपकों की सामयिक और अनिवार्य पुस्तक के लेखक स्वयं आकाशवाणी के एक समर्थ अधिकारी हैं। अपनी कलम से लिखे रूपकों के आगे, उन्होंने जाने-माने रूपक लेखकों के रूपक देखे हैं, पढ़े हैं और उन्हें सम्पादित करके प्रसारित करने के आदेश दिए हैं। स्वाभाविक है कि इस प्रकार के सर्जक दृष्टिवाले व्यक्ति का रूपक लेखन कितना कुछ ललित, सोचपरक, प्रभावी और दिशादर्शक हो सकता है, ऐसा लगता है कि इस पुस्तक में ऐसा कुछ हो सका है।

लेखक इस पुस्तक के सन्दर्भ में स्वयं पहले लिख चलता है कि "कोई एक विषय, वस्तु या 'थीम' पर आधारित कार्यक्रम जिसकी प्रस्तुति का आधार नाटकीय हो लेकिन प्रस्तुति में वह नाटक न हो तो वह रूपक है।"

रेडियो रूपक के लिए यह एक अच्छी सटीक अभिव्यक्ति है, कहा जाए तो रेडियो रूपक की परिभाषा है।

रूपक में नाटकीयता है पर वह नाटक नहीं है इस प्रकार दृश्यजगत के इस रूप को, वाचन और सम्भाषण, कला संगीत और कलात्मक भावुक, पर स्पष्ट, श्रोता के हृदय में उसे सुनते-सुनते ऐसा चित्र उपस्थित करते, संवाद की विधा, रूपक की अपनी विशेषता हैं, रचनाधर्मिता है।

रेडियो के आविष्कार से नाटक के क्षेत्र में परिवर्तन आना स्वाभाविक था, जो हुआ। नाटक जो मंच पर देखा जाता था उसे रेडियो सैट पर सुना जाने लगा है। नाटक की कल्पना दृश्यों में जो की जाती रही है उसे ध्वनियों द्वारा संयोजित किया जाने लगा है। नाटक का रिश्ता जहाँ आँखों से हुआ करता था या है, वही रिश्ता अब उसका कानों से हो गया है। ध्वनियों, प्रसारण यन्त्रों, प्रभावों (इफैक्ट्स) द्वारा सँजोया जाने वाला दृश्य अब कानों द्वारा अपनी कल्पना की कुशलता से ठीक देखनेवाले नाटक की भाँति आत्मसात किया जाने लगा है।

पुराने रिश्ते टूटने, नए सम्बन्धों के जुड़ने से नाटक के ढाँचे पर, निर्माण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर और निर्माण के मूल्यांकन व सिद्धान्तों पर प्रभाव पड़ा है, इसके लिए नए शोध, सोच, संयोजन की आवश्यकता अनुभव की गई और रेडियो के समर्थ कला संयोजकों ने उसकी पूर्ति बखूबी की है।

नाटक के नए रूप को पहचानना उसके मूलभूत आधार का पता करना और इस प्रकार नए नाट्यशास्त्र का निर्माण करना कोई सरल बात नहीं है। इसके लिए पुराने नाट्यशास्त्र के ज्ञान से दूर जाकर उसके लिए ध्वनि के नए सिद्धान्तों, प्रसारण यन्त्रों और उनमें विशेषता उत्पन्न करने की नई तकनीक का विकास हुआ है। इस कला के प्रसारण के कितने प्रयोग होते आए हैं, हो रहे हैं। उनमें ध्वनि यन्त्रों से प्रभाव पैदा करने के जो उपाय किए गए हैं वे सब केवल अध्ययन और चिन्तन से नहीं उसके लिए स्टूडियो की दुनिया में जाकर, पता किए गए हैं। उनको वे ही कलाकार कुशलता से कर सके जिन्होंने नाट्यशास्त्र का ज्ञान होने पर भी नाटकों के प्रसारण का स्वयं का अनुभव प्राप्त किया है। जिन्होंने रेडियो साहित्य को समझा है, प्रयोग किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक रेडियो के कुशल कर्मठ कार्यक्रम अधिकारी हैं, इसी नाते उनके द्वारा ये सब सम्भव हुआ है। परिणाम ये कि उनके रूपकों में वे सभी कुशलताएँ, विशेषताएँ, हमें पढ़ने और पढ़ते-पढ़ते दृश्यों को सामने उपस्थित देखने में सफल होती मिली हैं, आनन्द देती हैं।

नाटक के तत्वों का जहाँ तक प्रश्न है, वे सभी रूपकों में भी अपनी रीति से समाए रह के आनन्द देते हैं। कथावस्तु जहाँ नाटक में पात्रों की नई वेशभूषा, कथोपकथन के और चरित्र के विकास-क्रम की, उनकी अनुभूतियाँ दर्शकों के साथ चलती हैं, एक होती दिखती हैं। वहीं रूपकों में श्रोताओं को सुनने-समझने के माध्यम से ये सब सम्भव होता है और ये पुष्ट होता है, भावनात्मक भाषाशैली की विविधता से, वाचन से, संगति से और संगीत की सरस प्रस्तुतिकरण के द्वारा, श्रोता शब्द-स्वर और भाषा सौष्ठव से रूपकों के जीवन को अपने में सँजोकर आनन्दित होता है। इसके लिए नाटक से कई गुना अधिक, रूपक का लेखन, वाचन, प्रभाव और प्रस्तुति की कुशलता अनिवार्य होती है और यह सम्भव होता है लेखक और प्रस्तुतकर्ता की पैनी दृष्टि से परखी चित्रात्मकता और उनका शब्दों द्वारा परखा हुआ प्रसारण।

रूपक एक कलाकृति है इसलिए उसका कुछ रूप तो होता ही है। यह सब होते हुए भी रूपक का कोई एक निश्चित आकार नहीं होता जैसा कि नाटक का। रूपक अर्मूत और मुक्त कृति को एकाग्र रखने वाली वस्तु होती है। केन्द्रीय विचार, नाटक की एकता, कथानक पर निर्भर, तो रूपक की विचार पर। नाटक से जहाँ घटनाक्रम का विकास होता है, वहीं रूपक में विचारों का। एक विषय को अनेक पैनी दृष्टियों से देखते हुए एक विचार प्रस्तुत किया जाता है, एक भाव व्यक्त किया जाता है इनमें एक रूपक के विचार और दृष्टि के अनुरूप इन विचारों, व्यवहारों और व्यक्तित्वों से जुड़े लोगों से साक्षात्कार भी सम्मिलित हो तो इससे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रूपक का प्रभाव विस्तृत होकर श्रोताओं को प्रेरणा देता है।

रूपक प्रचारात्मक विकासोन्मुख, रचनात्मक, शिक्षात्मक होकर विभिन्न गतिविधियों, सम्भावनाओं, व्यक्तियों, प्रकृति, उत्सव, महापुरुषों के जीवनदर्शन आदि प्रस्तुत करते, प्रासंगिक बने रहते हैं। साहित्यिक रूपक तो आकाशवाणी से प्रायः प्रसारित होते हैं। रूपक में अति कल्पना का विकास हमें देखने को मिलता है। ये सब सूक्ष्म संकेतों पर निर्भर होते हैं।

रूपकों में उद्घोषक के विविध स्वर, सूत्रधार का दिशा संकेत, अवकाश प्रभाव और संगीत का युक्ति-युक्तकरण, सामयिक स्वर, वाद्यों का संयोग, उद्भव, स्थिर विकास और विलय रूपक में एक गहरी भूमिका निभाता है।

श्री देवधर के प्रस्तुत रूपक संग्रह में यह पढ़ के उत्साहजनक प्रसन्नता है कि उन्होंने आकाशवाणी से प्रसारित रूपकों के क्रम को जानते हुए प्रायः उनके सभी रूपों में अपनी कलम का कौशल संजोया है।

उनके रूपकों का क्रम प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य वसन्त की आभा लिए 'आया फिर सुखमय वसन्त' से आरम्भ होता है। 'कलम का सिपाही', 'मेरे नगमों को नींद आती है' जैसे व्यक्तित्व प्रधान रूपक इस संकलन में हैं, तो 'जय नव भारत हे', 'जसुदा हरि पालनै झुलावै', 'चित्रकूट की महिमा', 'श्रद्धा के दीप', 'गीतों की गुनगुन' जैसे रूपक आस्था के स्वर संजोए, दृश्य लिए भी इसमें संजोए गए हैं, 'उनके पदचिह्नों पर' वाला रूपक अमर सपूत लोकनायक जयप्रकाश नारायण के व्यक्तित्व और कृतित्व का लुभावना ललित प्रेरक और विचारोत्तेजक रूपक है।

समन्वित रूपकों का आकाशवाणी की प्रसारण रीति-नीति में अपना महत्व है। ऐसे रूपक प्रदेश के किसी एक केन्द्र से सम्बद्ध प्रतिष्ठ रूपक लेखक से लिखाए जाकर उसका संयोजन उसी केन्द्र पर होकर अन्य सभी आकाशवाणी केन्द्रों से उसी एक समय प्रसारित होते हैं और आगे ऐसे रूपक देश के विभिन्न केन्द्रों जैसे विविध भारती आदि से भी प्रसारित होने हेतु राष्ट्रीय प्रसारण नीति के अधीन लिखवाए जाकर प्रसारित होते हैं। प्रसन्नता इस बात की है कि श्री सुनील केशव देवधर के इस संकलन के रूपकों में ऐसे रूपक भी हैं। इनसे रूपकों की सर्जना विधा और शैली को समझने-समझाने में नए लेखकों को, सर्जकों को प्रेरणा मिलेगी, ऐसी मेरी सोच है।

आकाशवाणी के रूपकों में देश के विकास के वर्णन का भी एक सुनिश्चित स्थान है। इनमें राष्ट्र की विभिन्न गतिविधियों पर उनके विकास के स्वरूप को साज-सज्जा और संगीत से सरस बनाते, प्रस्तुत करना, जनमानस में विकास की वास्तविकताओं को उजागर करते हुए प्रत्येक को इन गतिविधियों में सहयोगी बनने की प्रेरणा देना, उद्देश्य होता है।

'वन' और 'जीवन', 'जिले की तस्वीर' ऐसे ही विकास की विविधताओं को दिव्य रूप देकर दर्शाते हुए रूपक हैं तो 'अलविदा के साज पर स्वागत के स्वर' बीते वर्ष की विभुता को नमन करते नए वर्ष के स्वागत को स्वर देते दिखाई देते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। 'प्रतिपल मंगल' में आकाशवाणी, छतरपुर के स्थापना दिवसों का प्रतिपल मंगलमय, विकसित, सुनियोजित, सुशोभित, सुव्यवस्थित, कलात्मक विकास के विभिन्न सोपानों की सर्जना में केन्द्र के कौशल का, रोचक प्रस्तुतीकरण मन को प्रसन्न करता है।

'आया फिर सुखमय वसन्त' रूपक का शुभारम्भ संस्कृत के एक समर्थ सामयिक श्लोक से होकर वाचन का वैभव दर्शाता, ऋतुराज के आगमन का सुखद सन्देश, सुहावना भी है और मनभावन भी। "वाणी का पर्व है वसन्त, सरस्वती का उत्सव है वसन्त, नाद का सत्र है वसन्त और प्रकृति का उत्कर्ष है वसन्त, ऋतु का उन्माद है वसन्त।

"वसन्त रस का उत्सव है राग और अनुराग जो बह रहा है, वसन्त में, मन में उमंग, तन में तरंग और वाणी में छन्द भर देता है।"

इस काव्यात्मक गद्य की सशक्त वाचन शैली जहाँ हमें प्रभावित करती है वही गीत के स्वर—'आया फिर सुखमय वसन्त'—श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करने में सफल है, यही रूपक की विशेषता है। आगे भी वाचन में, वसन्त का पौराणिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक और ज्योतिषशास्त्र के अंगों से उभरता विविध रूप पाठक के मन के साथ उसके ज्ञानतन्तु को भी तुष्ट करेगा, ऐसा लगता है।

'कलम का सिपाही' रूपक में मुंशी प्रेमचन्द के व्यक्तित्व का वाचन स्वरों से सजाकर उनके कृतित्व का कुशल उल्लेख है। यहाँ वाचन की विविधता के साथ वार्ता और वक्तव्य के साथ संगीत का, गीत के बोलों का होना कुछ आवश्यक लगता है।

"हिन्दी के साहित्यक उपन्यास तथा कहानी की विकास यात्रा, सामयिक जीवन की विशालता, अभिव्यक्ति का खरापन, पात्रों की विविधता, सामाजिक अन्याय का विरोध, मानवीय मूल्यों की मित्रता और संवेदना, साहित्य की साधना, धन का शत्रु और किसानों का मसीहा यानी 'मुंशी प्रेमचन्द'।"

अपने आप में मुंशी प्रेमचन्द के पुरुषार्थ, प्रतिभा, उत्कृष्टता और विचार वैभव की कथा है। रूपक सहज वाचन से आरम्भ होता है। अच्छा होता है, आकर्षक होता है, रूपक का आरम्भ, किसी उल्लेख, संगीत, गीत, ध्वनि से परिचय देता आगे बढ़ना, जो है बहुत प्रभावी है।

इस रूपक में मुंशी प्रेमचन्द के कथानकों को मार्मिकता से प्रस्तुत किया गया है, ग्रामीण वातावरण मानसिकता, दीन-हीन शोषितों के संघर्ष, बैलगाड़ियों का ध्वनि प्रभाव सुखद है, सुरुचिपूर्ण है। अन्त में—

"प्रेमचन्द का साहित्य ही कालजयी नहीं वे स्वयं जीवन में कालजयी हैं। श्रोताओं को आश्वस्त करता आ रहा यह रूपक अब पाठकों की मानस की पूर्ति करेगा ऐसी आशा है।"

'जय नव भारत हे' देश के स्वतन्त्रता दिवस पर रूपक की विशेष प्रस्तुति है—सम्पूर्ण विश्व के लिए रहस्य, ज्ञान और अपार ऐश्वर्य की भूमि है भारत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और इसी स्वतन्त्र भारत जननी, नव जीवनमय, नव जाग्रत, नवीन रथ, नवगति नव पथ, नव जनमन के नवभारत की प्रशस्ति, कोटि-कोटि कंठों ने गाई है, दुहराई है—

'जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी', जय नव भारत हे।

'जय जननी, जय नव भारत हे'

स्वतन्त्रता की वन्दना की ये विरुदावली युक्त-युक्त है, पूर्ण है।

'मेरे नगमों को नींद आती है' रघुपति सहाय फिराक गोरखपुरी पर केन्द्रित यह रूपक अपनी विविधता, विशेषता और फिराक साहब की अलमस्ती, ज्ञान, विचार, व्यक्ति और उनकी सर्जना की कसौटी पर खरा उतरा है।

एक ऐसी शख़्सियत, जिसमें हर खासोआम की बेचैनी और दर्द समाया है। उनकी हर ग़ज़ल उनके व्यक्तित्व का इजहार (प्रतिबिम्बत) करती है—

''शामे गम कुछ उस निगाहे नाज की बातें करो।
बेख़ुदी बढ़ती चली है राज की बातें करो॥''

यही नहीं उनका हर कदम उनके विचारक का, शिक्षाविद का, स्वाभिमानी का, ज्ञानी का, उदारचेतना का स्वर अन्तिम साँस तक साजे ग़ज़ल को सजाने, सँवारने और सम्भालने का सन्देश देता चला गया—

''अब तुमसे रूखसत होता हूँ आओ सम्भालो साजे ग़ज़ल।
नए तराने छेड़ो कि मेरे नगमों को नींद आती है।''

फिराक साहब की यह निद्रा 'काव्य जगत' की तहजीब को कितना जगाती गई, यह रूपक उसे कहने में सफल हो सका है।

'जसोदा हरि पालनै झुलावै' यह रूपक अपने आप में कृष्ण जन्म की गाथा को पौराणिक पूर्णता, नई चेतना और समसामयिक सन्देशों से सजा दिखता है।

''यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम....॥''

अधर्म के नाश और धर्म की संस्थापना के लिए अवतरित, भगवान् कृष्ण का जीवन आदि से आरम्भ होकर उनको सच्चिदानन्द नित्यस्वरूप में, स्थापित करने में, लेखक ने कलम को सार्थक किया है। अनन्त है कृष्ण का चरित्र, अगाध है उनका गीतोपदेश, गीता जीवन का सत्य उद्घाटित करती है, यह जीवन का जाग्रत अध्याय है। श्रीकृष्ण काल से परे हैं, काल उनसे ही उपजता है। भारतीय मानस में, लौकिक-अलौकिक के बीच कृष्ण ही हैं, और अन्त में एक गीत से इस लीला रूपक का सुखद समारोपण हुआ है।

''वसुदेव देवकी नन्दना हे गोप गोपी रंजना
हे योग-योग योगेश्वरा, हे मेघश्याम मयूरेश्वरा
रूक्मिणीवस शारंगधरा हे ब्रह्मपूर्ण परमेश्वरा।''

'मोहन से महात्मा' शीर्षक-रूपक में वैष्णव जन तो तेने कहिए की सार्थकता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बापू के जीवन की उपासना, साधना सिद्धि से जुड़ी आदर्श गाथा है, आरम्भ और समापन तक उसके एक-एक शब्द से, बापू के विराट व्यक्तित्व, अमर आत्मा और विश्ववंद्यय, महात्मा गांधी की महिमा मंडित हुई है।

'तेजोमय पुरुषोत्तम राम' विजयादशमी के अवसर पर प्रस्तुत किया गया रूपक है। लेखक ने समय की माँग को समझबूझ से साधा है। रूपक की विशेषता उसके वाचन की भाषा, आकर्षक, श्रोताओं को एक-एक शब्द उनके अर्थों से रूपक के नायक के चारित्रिक विकास के क्रम जोड़ती हुई, तो बीच-बीच में ध्वनि प्रभाव, सुसंगीत का सरस आयोजन अपनी विशेषता रखता है। रूपक को उबाऊपन से बचाता है। महापुरुषों के प्रसंग में उनके मूल चरित्र का चतुरतापूर्ण चित्रण आवश्यक होता है। विजयादशमी के सन्दर्भ में पुरुषोत्तम राम की इस रूपक में हर दृष्टि से, सोची-समझी अभिव्यक्ति हुई है।

''शक्ति तथा भक्ति के सामंजस्य का दिवस है, विजयादशमी''

आराधना शक्ति की और शक्ति द्वारा परीक्षा भक्ति की, श्रीराम का 108 नीलकमल के अर्पण का संकल्प और अन्तिम कमल हाथ न लगाने पर उसका विकल्प—

''कहती थीं माता मुझे राजीवनयन,
दो नील कमल हैं शेष, अभी ये पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन''

महाप्राण निराला की 'राम की शक्ति पूजा' का यह उद्धरण समूल रूपक का मन-मन में रमता गया स्वभाव है, साधारणीकरण है।

'चित्रकूट महिमा अनन्त' मन्दिरों के घण्टों और शंख ध्वनि के प्रभावों के बीच रहीम के दोहे—

चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेस
जापै विपदा परत है सौ आवत एहि देस।

के द्वारा परम धारा की अनन्त महिमा का दर्पण, अपने आप में साधना की सोच का एक सुन्दर उदाहरण है।

भगवान् राम को शक्ति और सिद्धि मिलने के स्थान को महर्षि वाल्मीकि से पूछने पर उनका उत्तर—

''कहि मुनि सुनहु भानु कुल नायक
आश्रम कहहु सकल सुख दायक
चित्रकूट महिमा अमित कही कथा मुनि गाई
आए नहाए सरित वर सिय समेत दोउ भाई।''

इस प्रसंग में चित्रकूट के महन्त प्रेम पुजारीदास जी का साक्षात्कार उनके प्रवचन का अंश चित्रकूट की महिमा के गुणगान के साथ रूपक की सशक्त विधा के प्रयोग का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

'श्रद्धा के दीप'—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रद्धा के दीप जले, पूजा के फूल खिले।
आस्था की अक्षत है अर्पित।
जय देवी कमले॥

दीपावली के अवसर पर दीपमालिका की छटा को उकेरता, बिखेरता, विविधता से सजा रूपक है

एक स्वर–सौम्य प्रभा और दीपों के उल्लास का पर्व है दीपावली।

अन्धकार, अज्ञान और दरिद्रता के शमन का पर्व है दीपावली, भगवान महावीर स्वामी रामतीर्थ, महर्षि दयानन्द के पुण्य स्मरण का पर्व दीपावली और भूदेवी जगधात्री, वैभव की अधिष्ठात्री, सुलक्षणा कल्याणी, शेषशाणी भगवान् विष्णु की वामांगी देवी नारायणी के पूजन का दिवस दीपावली–अपने आप में पूर्ण है–

सर्व मंगल मांगल्यै सिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते॥

के गुंजन के साथ श्रद्धा के दीप जले गीत की, सामयिक राग और सुरों में प्रस्तुति, स्तुत्य है।

'अलविदा के साज पर स्वागत के स्वर' आगत का स्वागत और विगत के वैभव का, प्रदेय का, अभिवादन, हमारी संस्कृति की साधना से सजा रूपक है।

'वन और जीवन' भौतिक विकास के क्रम को कला कौशल से, सजा के, सरसता से सराबोर आकर्षक होते हुए मनुष्य का वन और वन्य जीवन के प्रति उसके दायित्वबोध का उपक्रम है, सुन्दर है, सहज है।

'जिले की तस्वीर' आकाशवाणी की प्रसारण नीति के अधीन छतरपुर केन्द्र के अर्न्तगत टीकमगढ़ जिले की तस्वीर का हर दिशा में विकसित, सुगम रूप प्रस्तुत किया गया है। स्पष्ट है कि मीडिया का यह योगदान अनिवार्यता का अंग बना है।

'प्रतिपल मंगल' का अनुदान बाँटने वाले आकाशवाणी, छतरपुर के उद्‌घाटन का, शुभारम्भ का, सुनहरा, शोभायमान सुअवसर है जिसे लेखक ने अपनी कला साधना की कुशलता से उकेरा है, उभारा है, सजाया है, सँवारा है और इस व्यवहारिक रूपक को कलात्मक कौशल से प्रस्तुत करके इसके सन्दर्भों से, सदा को समृद्ध किया है।

'गीतों का गुनगुन' रूपक में लेखक के, कवि, साहित्यकार, गीतकार और गीतकारों की गरिमा के जानकार का, रूप स्पष्ट हुआ है। सरस संगीत से इसका शुभारम्भ होकर, गीत की परिभाषा करता, जयदेव, प्रसाद, महादेवी जी, पंत और नरेन्द्र शर्मा जैसे गरिमामय गीतकारों की रचनाओं में यह रूपक छन्द, लय, ताल और संगीत का सुन्दर संयोजन है।

'उनके पदचिह्नों पर' भारतीय त्याग बलिदान, ज्ञान, ओज, साहस और समर्पण के सशक्त हस्ताक्षर लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जन्म शताब्दी पर प्रस्तुत विशेष रूपक है, गायन से शुभारम्भ है उसका–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'है जय प्रकाश वह नाम जिसे इतिहास समादर देता है
बढ़ कर जिसके पद चिह्नों को, उर पर अंकित कर लेता है
वह सुनो भविष्य पुकार रहा वह दलित देश का त्राता है
स्वप्नों का दृष्टा जय प्रकाश भारत का भाग्य विधाता है।'

जीवन के प्रारम्भ से अन्त तक लोकनायक पर प्रस्तुत यह रूपक सदा-सदा को, सबको, मन से, आत्मा से, अभिभूत करता नए कर्तव्यों की प्रेरणा देगा।

प्रभाजी की प्रतिभा, समर्पण और पूज्य बापू के आशीर्वाद से उभरा ये युगल, दाम्पत्य में बँधा, सेवा संयम का आजीवन आचरण बना, तदापि गृहस्थ नहीं, सदा संन्यासी, ये युगल अपने आप में भारतीय विभुता है। अनुकरणीय अनुपम। लेखक ने इस रूपक को स्मरणीय, सहज, प्रेरक बनाने में, सन्दर्भों को, साजों से सजा के, बड़ा उपकार किया है।

"प्रभा तुम देश के लिए ब्रह्मचर्य व्रत ले सकती हो तो क्या मैं इतना दुर्बल हूँ। मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा और सहज रूप से अपने संकल्प पर टिका रहूँगा।" भारतीय जीवन के ये सुदृढ़ शाश्वत संकल्प, विश्व के लिए आश्चर्य के साथ, अनूठे अनुदान हैं। समग्र रूप में जयप्रकाश जी के जीवन के प्रत्येक प्रसंग से पूर्ण ये रूपक प्रेरक है।

श्री सुनील केशव देवधर द्वारा प्रस्तुत ये रूपक और अब उनका पुस्तकाकार प्रेषण न केवल पाठकों को आकर्षित करेगा वरन् आकाशवाणी के इतिहास में रूपक की विधा के ज्ञान, मार्गदर्शन और नए लेखन को दिशा देगा। रूपकों का यह रूप चित्र नए विशेषणों से सजता सबको साहित्य की सच्ची समझ देता रहेगा ऐसा विश्वास है, लेखक को बधाई और आशीर्वाद भी।

शुभेच्छु
विंध्य कोकिल भैया लाल व्यास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेडियो रूपक : उच्चरित शब्द का मुद्रित रूप

रेडियो एक क्षणजीवी माध्यम है। एक बात यदि रेडियो से बोली जाए और वही यदि छाप भी दी जाए, तो हम पाते हैं कि रेडियो की बात प्रसारण के साथ ही शून्य में विलीन हो गई, पर छप जाने पर उसी की उम्र अनन्त भी हो सकती है। जिन लोगों ने अपना जीवन रेडियो को समर्पित किया है उनकी रचनाशीलता समाज के विस्मृति-गह्वर में सदा-सदा के लिए समा जाने के लिए शापित है। परन्तु, यदा-कदा इस शाप का निवारण होते हुए भी देखा गया है। जब कोई रचनाधर्मी अपनी रचना को रेडियो के साथ-साथ मुद्रण को भी दे देता है तो मुद्रण-माध्यम की अनन्त जीविता उस रचना को प्राप्त हो जाती है। इसके उदाहरण विरल अवश्य हैं, पर हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने रेडियो के लिए अनेक नाटक लिखे जो प्रसारण के बाद प्रकाशित भी हुए। वे दोनों माध्यमों में चर्चित हुए। दूसरा उदाहरण जो मुझे याद आ रहा है वह है डॉ. सम्पूर्णानन्द का। जब वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री थे तब उन्होंने आकाशवाणी, लखनऊ से सौरमण्डल के नौ ग्रहों में प्रत्येक पर एक-एक वार्ता प्रसारित की। बाद में वे नौ वार्त्ताएँ पुस्तकाकार छप गईं और चर्चित हुईं।

मैं अनेक वर्षों से रेडियो के निकट सम्पर्क में नहीं हूँ इसलिए ऐसे अन्य दृष्टान्त ध्यान में नहीं आ रहे किन्तु इतना कह सकता हूँ कि श्री सुनील केशव देवधर का यह 'रेडियो-रूपक-संग्रह' इसी परम्परा की एक कड़ी है।

रेडियो कार्यक्रम जीवन के हर पहलू को स्पर्श करते हैं अतः उनके किसी भी संग्रह में व्यापकता का गुण दिखेगा ही, जैसा कि इस रूपक-संग्रह में हुआ है। ऋतु, वर्णन, धर्म, जीवनवृत्त, भक्ति, साहित्य, विकास और नव-वर्षाभिनन्दन आदि एक दूसरे से सर्वथा अलग विषय इस छोटे से संग्रह के रूपकों में रूपायित हुए हैं। रेडियो प्रसारणों के सफल होने की एक अन्य अनिवार्य शर्त है उनका सहज बोधगम्य होना। रेडियो में पलटकर पूर्व सन्दर्भ देखने की सुविधा नहीं और न ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीच में रुक कर कुछ विचारने की गुंजाइश ही है। इसलिए यदि रेडियो प्रोग्राम सहज और बोधगम्य नहीं हुआ तो उसके अन्य सभी गुण व्यर्थ हो जाते हैं। प्रसन्नता की बात है कि इन रूपकों की बोधगम्यता इन्हें पढ़ने में पठनीय और सुनने में श्रवणीय बनाती है।

वास्तविकता-परक रूपकों में भेंटवार्त्ताओं का समावेश विषय के सम्यक निरूपण का अत्यावश्यक साधन है। संग्रह में 'चित्रकूट महिमा अनन्त', 'प्रतिपल मंगल', 'कलम का सिपाही', 'उनके पद चिह्नों पर' आदि में स्थान-स्थान पर भेंटवार्ताओं के अंशों का प्रभावी ढंग से उल्लेख किया गया है। जिससे रूपकों की पठनीयता सम्पूर्ण हो गई है। वाचन-स्वर की अपेक्षा भेंटवार्ताओं का महत्व अनेक गुना अधिक है।

'जिले की तस्वीर' में टीकमगढ़ जिले का याद रह जाने योग्य परिचय मिलता है। जिले की जितनी जानकारी इस छोटे से प्रोग्राम में आ गई है उतनी शायद इसके दुगुने कलेवर के लेख में भी न आ पाती। 'उनके पद चिह्नों पर' रूपक में जयप्रकाश जी के जीवन के उन तथ्यों पर प्रकाश पड़ा है, सामान्य जन को जिनका ज्ञान नहीं। मेरी स्वयं की जानकारी में, इसने काफी वृद्धि की है।

मैं इस प्रयास हेतु श्री देवधर को बधाई देना चाहूँगा और चाहूँगा कि रेडियो से जुड़े अन्य प्रबुद्ध लोग भी क्षणजीवी पर उत्कृष्ट रेडियो कार्यक्रमों को प्रकाशन के द्वारा चिरजीवी करें।

–राजेन्द्र प्रसाद

सेवानिवृत्त उपमहानिदेशक

भूतपूर्व केन्द्र निदेशक

आकाशवाणी, छतरपुर (म.प्र.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्भावनाओं से परिपूर्ण रेडियो रूपक

डॉ. सुनील केशव देवधर का रेडियो रूपक संग्रह 'मोहन से महात्मा' हिन्दी साहित्य में अपनी अलग पहचान के रूप में है। वे आकाशवाणी के न सिर्फ महत्वपूर्ण अधिकारी हैं, बल्कि साहित्य के क्षेत्र में भी उनका गरिमापूर्ण स्थान है। इसीलिए रेडियो रूपक की रचना करते हुए उन्होंने इस विधा को एक विशिष्ट आयाम दिया है।

आज टी.वी. के रूप में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का जो स्थान बन गया है वह सर्वविदित है। लेकिन आज भी रेडियो की अहमियत और उसकी विशिष्टता से कोई इन्कार नहीं कर सकता। रेडियो ने भारतीय जनमानस को एक लम्बे समय से ज्ञान, मनोरंजन और समाचारों से रूबरू किया है। रेडियो रूपक विशेष आकर्षण के केन्द्र में रहे हैं। विशिष्ट अवसरों पर विशेष रूप से लिखे गए ये रूपक केवल उन अवसर तक ही सीमित न रहकर श्रोताओं के मन में रच-बस गए हैं। डॉ. सुनील केशव देवधर ने इन रूपकों के माध्यम से हमारी विरासत, हमारी परम्पराओं और हमारे वर्तमान को बखूबी रेखांकित किया है। उन्होंने संवादों के माध्यम से, स्वरों के माध्यम से पात्रों को साकार किया है। कविताओं, महत्वपूर्ण वाक्यांशों के उद्धरण संगीत में पिरोकर उसकी स्वीकार्यता को उन्होंने एक विशिष्ट ऊँचाई दी है। रेडियो रूपक वही श्रेष्ठ होता है जो कानों के माध्यम से दृश्यों को दिखाए। डॉ. देवधर ने कलाकार का यह लेखकीय दायित्व बखूबी निभाया है।

कई बार ऐसा होता है कि किसी अवसर विशेष के लिए कुछ कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। अपने आप में उनका स्वतन्त्र अस्तित्व कुछ धूमिल लगता है। लेकिन 'मोहन से महात्मा' संग्रह में संकलित सभी रेडियो रूपक हर समय के लिए अपनी व्यापकता रखते हैं। संग्रह के रूप में उनके प्रकाशित होना अपने आप में एक विशिष्ट घटना है। इससे यह भी उभरकर आता है कि आदर्श

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेडियो रूपक लेखन कैसा होना चाहिए। जिन शब्दों को सुनकर आँख के सामने दृश्य उभरते हैं, उन्हीं शब्दों को पढ़कर भी अनुभूतियाँ सहजता से साकार हो जाती हैं। इसलिए इसका प्रकाशन अपने आप में अन्यान्य सम्भावनाओं से परिपूर्ण है।

–डॉ. दामोदर खडसे

डी/डी-8, वृन्दावन कॉम्प्लेक्स,

शान्तिवन के पास, कोथरूड,

पुणे-411029

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिमत

व्यक्ति डॉ. सुनील केशव देवधर का औपचारिक परिचय यदि अनजाने ही, केवल एक-दो बार की भेंट में, अन्तराल-विहीन अपनेपन में बदल गया, तो इसका श्रेय उनके अपने खुले स्वभाव को है। मेरे लिए यह और भी आह्लादक बन गया, जब मैं उनके रचनाकार को जान पाया। अभी-अभी बसन्त-पंचमी पर आकाशवाणी से प्रसारित उनको रेडियो रूपक 'आया फिर सुखमय बसन्त' सुना तो मन हरा हो गया। रूपक के रचयिता के रूप में ही नहीं, उनके कवि-रूप से परिचय पाने का सुख, शीतकाल की गुनगुनी धूप के स्पर्श-सुख जैसा लगा। मेरा विश्वास है कि आकाशवाणी के नियमित श्रोताओं का अनुभव इससे भिन्न न होगा।

प्रसन्नता का विषय है कि श्री देवधर के जो रूपक अभी तक श्राव्य ही थे, वे अब पठ्य रूप में भी सुलभ हो रहे हैं। 'मोहन से महात्मा' में श्री देवधर के पन्द्रह रूपक संगृहीत हैं, जो अपने आकार-प्रकार में विस्तृत और लघु या संगीत रूपक और विशेष रूपक तो हैं ही, मूल वर्ण्य के आधार पर भी जो विविधायामी हैं। रचनाकार, राजनेता, अवतारी पुरुष, राष्ट्र, ऋतु, त्योहार-पर्व, श्रद्धा-स्थल, वन और जीवन, उद्घाटनावसर तथा जनपद-विशेष का परिचय, सब कुछ इन रूपकों के वृत्त में समाविष्ट है।

निश्चय ही ये रूपक रचनाकार से विषयानुकूल भिन्न मानसिकता की अपेक्षा रखते हैं। जैसे इनका उल्लास, राग-रंग, कुतूहल, गाम्भीर्य या सहज परिचय, इन्हें भिन्नमुखता प्रदान करता है, वैसे ही इनकी शैलियाँ भी भिन्नमुखी होती जाती हैं। कहीं भावात्मक, कहीं वर्णनात्मक और कहीं विवरणात्मक। जो इनमें विशेष है, वह है वर्ण्य का चयन और संयोजन।

कहने को ये रूपक हैं, अर्थात् सर्जनात्मक प्रतिभा की गरज इन्हें है, पर चूँकि ये ध्वनि-नाटक या रेडियो-नाटक नहीं हैं, फीचर या डाक्यूमेंट्री हैं इसलिए रचनाकार से शोधधर्मिता और चयनधर्मिता की भी इन्हें उतनी ही, बल्कि कभी-कभी कुछ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधिक ही, अपेक्षा है। संगीत रूपकों में तो ध्वनि-प्रभाव, भावमयता, उपयुक्त काव्य या गीत-चयन के साथ-साथ गद्य में भी भाव की, लय की, विमोहक स्वरता विशेषतया आकांक्षित होती है। ऐसे में रूपक-रचयिता शोधकर्ता, संगीतज्ञ, मर्मग्राही, भावुक और कवि, सब एक-साथ ही होता है। श्री देवधर में ये सब गुण हैं। व्यक्ति, स्थान तथा ऋतु सम्बन्धी रूपकों में उनका यह रूप विशेषतया उभरकर सामने आता है। उनके रूपक यथावश्यक संस्कृत, हिन्दी के प्राचीन और आधुनिक कवियों की श्लोक एवं गीत-पंक्तियों से मुखरित हैं। उनका अपना कवि भी उनके बीच कहीं-कहीं विद्यमान है।

आकाशवाणी से प्रसारित इन रूपकों की सफलता, निस्सन्देह पूर्व-प्रमाणित है। इनके पाठक उसे पुनः प्रमाणित करेंगे, इस विश्वास के साथ हम इनके प्रकाशन का स्वागत करते हैं और इनके रचनाकार श्री देवधर का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

–डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित
सुप्रतिष्ठ आचार्य, हिन्दी विभाग,
पुणे विद्यापीठ, पुणे-7

'कलापी', 162/5ब-1स
डी.पी.रोड, औंध,
पुणे-7

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूपक—जो लिखे नहीं गए

प्रामाणिकता और वास्तविकता के साथ कल्पना और कलात्मकता का मेल ही है रेडियो रूपक। मूल रूप से लिखने से कहीं अधिक बाँधने की कला। बी.बी.सी. क्वार्टरली 1951 के एक लेख 'रिफ्लेक्शन्स ऑन रेडियो फीचर्स' में कहा गया है—The Feature is the Radio-art and all other forms are slightly ezsatz. To write for radio (in distinction from writing something that can be broadcast) means to write a Feature...). यही बात प्रकारान्तर से कही थी, तत्कालीन कार्यक्रम अधिकारी श्री इलाशंकर गुहा ने। जब, उन्होंने मुझसे लक्ष्मीबाई व्यायामशाला झाँसी पर पहला रूपक लिखवाया था।

रेडियो में मेरा प्रवेश एक कवि के रूप में तो छतरपुर केन्द्र के पहले ही प्रसारण यानी 7 अगस्त, 1976 से ही हो चुका था। लेकिन सन् 1978 में उद्घोषक के रूप में चयन होने के बाद लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर झाँसी पर रूपक लिखना मेरा पहला अनुभव था। हम लोग झाँसी गए थे। कुछ भेंटवार्ताएँ ध्वनि अंकित की थीं, कुछ सन्दर्भ सामग्री एकत्र की थी। तब से यानी सन् 1978 से रूपक लिखने का अभ्यास आरम्भ किया। मेरा सौभाग्य रहा कि लिखने और प्रस्तुत करने के भरपूर अवसर मिले। संग्रह के प्रत्येक रूपक के साथ कुछ न कुछ, कोई न कोई घटना और सन्दर्भ अवश्य है।

'उनके पदचिह्नों पर' रूपक का शीर्षक चेन्नई में सहज मार्ग के आध्यात्मिक शिविर में 'मास्टर' (आध्यात्मिक गुरु) के एक बड़े से पोस्टर पर अंकित चिह्न और पंक्ति से सीधा का सीधा ले लिया। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के व्यक्तित्व पर केन्द्रित इस रूपक की भेटवार्ताओं की रिकॉर्डिंग हेतु पटना यात्रा हुई। साथ में थे तत्कालीन केन्द्र निदेशक श्री गुलाबचन्द। पटना में मेरे मित्र कार्यक्रम अधिकारी डॉ. किशोर सिन्हा ने भेंटवार्ताएँ रिकॉर्ड कराने में भरपूर सहयोग किया। कुल 15 मिनट की रिकॉर्डिंग के लिए लगभग 12 भेंटवार्ताएँ रिकॉर्ड कीं। और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रत्येक लगभग 7 से 13 मिनिट, इसके अलावा संग्रहालय की रिकॉर्डिंग्स अलग। यह सब कहने का आशय सिर्फ इतना है कि भेंटवार्ताओं पर आधारित रूपक का संकलन और लेखन कहीं अधिक मेहनत, कल्पनाशक्ति और कुशल प्रस्तुति की अपेक्षा करता है।

'श्रद्धा के दीप' (दीपावली पर केन्द्रित), 'आया फिर सुखमय वसन्त', 'जसौदा हरि पालने झुलावै' और 'तेजोमय पुरुषोत्तम राम' आश्चर्यजनक ढंग से गीतों को छोड़कर एक ही बैठक में लिखे गए रूपक हैं। और इन आलेखों की प्रथम श्रोता मेरी आई (माँ) ही होती थी। सिर्फ श्रोता ही नहीं संस्कृत के श्लोकों, वाक्यों का संशोधन और सुधार करनेवाली भी। मुझे प्रसन्नता है कि वही कार्य बाद के वर्षों में पत्नी सौ. (डॉ.) मेधा ने भी किया। इसे पुस्तक रूप में देखने के लिए आज वो नहीं है, काश ऐसा होता। सभी रूपकों के विषय में एक बात जो समान रही है, वह है प्रस्तुतिकरण की हमारी टीम। संगीत कम्पोजर और गायक रमेश इन्दुबासु तथा रवीन्द्र दीक्षित के सहयोग का स्मरण सहज हो आता है क्योंकि धुनों को लेकर हमारी वह मतभिन्नता संगीत में स्वयं अधिक कुछ न जानते हुए भी मेरी माँग पर फिर-फिर बदलाव वह सब कला के प्रति समर्पण और मित्रभाव के बिना सम्भव नहीं था।

रूपक में वाचन एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि नाटक न होते हुए भी नाटकीयता है और नाटकीयता होते हुए भी वास्तविकता का पक्ष हर पल है। क्योंकि तथ्य का स्पष्ट सम्प्रेषण पहली शर्त है, रूपक प्रस्तुति में। इस दृष्टि से भी वाचक स्वरों का चयन महत्वपूर्ण होता है।

प्रस्तुत संग्रह में मेरे अब तक के लिखे रूपकों में से 15 का चयन करके आपके हाथ सौंपने का ही अकिंचन प्रयास है—यह संग्रह।

इन रूपकों में अन्य रचनाकारों/साहित्यकारों की पंक्तियों/वाक्यांशों का समावेश यत्र-तत्र हुआ है (गीत या पद में यथास्थान नामोल्लेख हैं ही।) जिससे रूपक निखरा और संवरा है। उन सब रचनाकारों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। विशेषकर धर्म और संस्कृति से सम्बद्ध रूपकों हेतु आचार्य विद्यानिवास मिश्र के समय-समय पर प्रकाशित लेख और कल्याण मासिक के अंक सन्दर्भ सामग्री बने हैं।

यह संग्रह आपके हाथ में सन् 2003 में ही आ जाना था, क्योंकि मेरे आग्रह पर रेडियो की इस विधा के मर्मज्ञ उदारमना परम आदरणीय भैयालाल व्यास ने अपना समीक्षा आलेख 16 मार्च, 2003 को ही मुझे सौंप दिया था। किन्तु जैसा कहते हैं कि हर घटना का एक समय है, वह तभी घटित होती है, इसे स्वीकार करते हुए अब रेडियो के लिए समर्पित तमाम कलाकारों/लेखकों और सृजनधर्मियों के प्रति इस संग्रह के माध्यम से आदर व्यक्त करता हूँ। इस रूपक संग्रह की प्रेस प्रति तैयार करने में चि. आनन्द रजक ने जो तत्परता दिखाई वह प्रशंसनीय है, उसे अनेक मंगल आशीर्वाद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परम श्रद्धेय श्री राजेन्द्र प्रसाद, आदरणीय लीलाधर मंडलोई, डॉ. दामोदर खड़से और सुप्रतिष्ठ आचार्य आनन्दप्रकाश दीक्षित की सहजता को क्या कहूँ, अपने लेखों में जितनी उदारता इन लोगों ने व्यक्त की है, पता नहीं, यह उनका स्वभाव है या मेरे प्रति स्नेहभाव।

पुस्तक के प्रकाशक श्री ललित कुमार शर्मा को धन्यवाद कहना मेरी भावना और मेरे मन का वह शब्दरूप है, जो इसे संग्रहरूप में देखने का अभिलाषी रहा है। श्री ललित कुमार शर्मा जी की तत्परता के प्रति विनम्र आभार। भेंटवार्ताओं पर आधारित रूपकों में भेंटवार्ता के अंश यथास्थान हैं। 'जिले की तस्वीर' रूपक में सभी भेंटकर्ताओं के अंश छोड़ दिए हैं, क्योंकि इस तरह के विकास रूपकों में तात्कालिकता अधिक होती है और अधिकारी भी स्थानान्तरित हो जाते हैं। अतः उद्देश्य प्रस्तुतिकरण और लेखन की शैली को रेखांकित करना रहा है।

आज एक बार फिर रेडियो के प्रति रूझान बढ़ा है, इसके पीछे एक कारण यह भी हो सकता है कि कार्यक्रमों की जितनी विविधता, स्वरूप और व्याप्ति (फारमेट और स्कोप) के स्तर पर, रेडियो के पास है, उतनी अन्य माध्यमों ने अंगीकार नहीं की है। शायद यही कारण है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित प्रयोजनमूलक पाठ्यक्रमों में रेडियो लेखन, रेडियो पत्रकारिता, रेडियो प्रस्तुतिकरण आदि विषयों का समावेश होने लगा है।

रेडियो के श्रोताओं ने इन रूपकों को चाहा और सराहा है, पाठकों और अभ्यासकों के लिए भी यह उतने ही आकर्षक, उपयोगी और अध्ययन में मददगार हो सकें तो अपना श्रम सार्थक और सफल समझूँगा। आपके मार्गदर्शन और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में।

—डॉ. सुनीरा केशव देवधर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रम

आया फिर सुखमय वसन्त	25
कलम का सिपाही	31
जय नव भारत हे	37
मेरे नगमों को नींद आती है	44
जसोदा हरि पालने झुलावै	48
मोहन से महात्मा	54
उनके पदचिह्नों पर	61
तेजोमय पुरुषोत्तम राम	70
श्रद्धा के दीप	77
अलविदा के साज पर स्वागत के स्वर	83
गीतों का गुनगुन	91
वन और जीवन	97
प्रतिपल मंगल	100
चित्रकूट महिमा अनन्त	103
जिले की तस्वीर	108

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आया फिर सुखमय वसन्त

(संगीत रूपक)

आरम्भ श्लोक से–

सस्वर : द्रुमा सपुष्पा सलिलं सपद्मम्
स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः
सुख प्रदोषा दिवसाश्च रम्या
सर्वे प्रिये चारूतरे वसन्ते॥

प्रथम स्वर : वाणी का पर्व है वसन्त, सरस्वती का उत्सव है वसन्त, नाद सत्र है वसन्त, प्रकृति का उत्कर्ष है वसन्त और ऋतु का उन्माद है वसन्त।

द्वितीय स्वर : इसीलिए वसन्त में प्रकृति का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है और प्रकृति में चेतना शक्ति और भावों की छाया स्पष्ट दिखाई देने लगती है।

प्रथम स्वर : डोलती हुई पत्तियों में प्राणों का स्पन्दन, प्रवाहित सरिता में जीवन का संगीत, पवन में शक्ति का वेग और आकाश में जाज्वल्यमान तारों में जीवन की कौंध दिखाई देती है, इस वसन्त में।

द्वितीय स्वर : मानव चेतना के साथ प्रकृति, मानवीय जीवन के रूप में अभिव्यक्त होती है।

प्रथम स्वर : पुरुष अपनी तृप्ति के लिए प्रकृति की ओर देखता है और प्रकृति अपनी पूर्ति के लिए पुरुष को निहारती है।

द्वितीय स्वर : फूल खिलते हैं, तितलियों और भौंरों को लुभाने के लिए, जो सुन्दर है, वह आकर्षक भी है। आकर्षण प्रसन्नता की प्रेरणा है।

प्रथम स्वर : उल्लास यानि हास, उल्लास यानि जीवनधारा के बहने की पहचान, सो वसन्त जीवन का हास है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : वसन्त, रस का उत्सव है राग और अनुराग जो बह रहा है वसन्त में, वही मन में उमंग, तन में तरंग और वाणी में छन्द भर देता है।

गीत : आया फिर सुखमय वसन्त
फैली फिर मधुगंध अनन्त।
आया फिर सुखमय वसन्त॥

खुले केश शोभा अशेष
उल्लास यौवन का विशेष
किसलय-सा शुचि हास मंद।
आया फिर–

श्याम तन नत नयन मनोहर
अन्तस प्रिय का सरस सरोवर
सुरभित संध्या नव-नव छन्द।
आया फिर–

पवन चढ़ चली नव यान पर
उठ रही उषा मंद स्मित भर
हँसता-सा सब दिग् दिगन्त
आया फिर–

नव अरुण नव राग नवल है
इंदु नवल अनुराग नवल है
गा स्वर भर कमनीय कंठ,
आया फिर सुखमय वसन्त
फैली फिर मधु गंध अनन्त।

प्रथम स्वर : वसन्त आनन्द और सौन्दर्य का प्रतीक है और इस ऋतु में प्रकृति हमारे सामने व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्धों में स्थिर होकर उपस्थित होती है।

द्वितीय स्वर : उसके गतिशील और प्रवाहित रूप सजीव और सप्राण हो जाते हैं।

प्रथम स्वर : प्रकृति के क्रियाकलापों में मानवीय जीवन व्यापार की झलक व्यक्त होती है।

द्वितीय स्वर : वृक्ष पुरुष के रूप में और लता स्त्री के रूप में एक दूसरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का आलिंगन करते हैं, सरिता प्रियतमा के रूप में नीरनिधि से मिलने आतुर हो दौड़ती है। पुरुष उत्सुक नेत्रों से किसी की प्रतीक्षा करते हैं।

प्रथम स्वर : कामदेव की पूजा इसी ऋतु में होती है, जीवन की आग का नाम है काम, नित्य नवीन उल्लासमय काम का नाम मदन है। और वसन्त मदन महोत्सव है।

द्वितीय स्वर : वसन्त पंचमी से ही मदनोत्सव का प्रारम्भ होता है। और चैत्र की रंग पंचमी तक अपना रंग बिखेरता है।

प्रथम स्वर : भारतीय परम्परा में श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व बहुविध और बहुरंग है, कृष्ण शुद्ध काम का स्वरूप हैं। इसी कारण प्रेम का स्वरूप है।

द्वितीय स्वर : वसन्त के साथ ही आराधन होता है, पूजन होता है प्रद्युम्न का। प्रद्युम्न श्रीकृष्ण के अंश हैं, वे मानसिक सृष्टि के अधिष्ठाता हैं। वे प्रकृति से जीव का विवेचन करने वाले हैं।

प्रथम स्वर : साक्षात् कामदेव हैं वे। और हैं आनन्द के प्रतिरूप, वे पुत्र देते हैं प्रसन्न होकर, गीत और वाद्य के देवता हैं वे।

द्वितीय स्वर : हमारे मन में ये स्मृतियाँ कहीं गहरे में मौजूद हैं इसीलिए प्राणों में आता है ज्वार और कसमसाता है मन, आन्दोलित होता है तन, और रोम-रोम गा उठता है।

गीत : **साँवलिया मधु छवि सुरभि भरो,**
मेरे अगन मगन में प्रिय तुम
विचरण निरत करो,
मधु छवि सुरभि भरो।

यह बसन्त मन, यह अपनापन
प्रीत भवन का उजला दर्पण
हर्ष सहर्ष वरो।
साँवलिया मधु छवि सुरभि....

तज भव बन्धन हर्षित जीवन
यह उद्दीपन यह नव चेतन
भय तुम सकल हरो।
साँवलिया मधु छवि सुरभि भरो।

सुन्दर श्रुति स्वर, भाव भरे उर
जीवन निर्झर कमल भरे सर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सागर पार करो।
साँवलिया मधु छवि सुरभि भरो

मेरे अगन-मगन में प्रिय तुम
विचरण निरत करो

प्रथम स्वर : ऋतुओं की नामावली में वसन्त ऋतुराज है। नए संवत्सर का आरम्भ वसन्त से ही होता है।

द्वितीय स्वर : वसन्तागमन का उत्सव माघ महीने की शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाते हैं।

प्रथम स्वर : कारण ये है कि संवत्सरों के विचारों में ये निर्णय पाया गया कि संवत्सर, परिवत्सर, अनुवत्सर, इदावत्सर और इदवत्सर।

द्वितीय स्वर : इन पाँचों संवत्सर चक्रों में सूर्य माघ शुक्ल में ही उत्तर की ओर मुड़ेगा। वसन्त उत्तरायण का प्रारम्भ काल है।

प्रथम स्वर : वसन्त, ऋतुओं में, स्वर्ग का द्वार है यानि आनन्द में प्रवेश की बेला। वसन्त यज्ञ की ऋतु थी वैदिक काल में।

द्वितीय स्वर : इस दिन सरस्वती का पूजन होता था। आज भी होता है, सरस्वती को चेतन्ती सुमतिनाम् यानि मन की सत्यावस्था और चेतना को जागृत करने वाली कहा है।

प्रथम स्वर : वसन्त में यह सरस्वती अनुभूति की तीव्रता को यानि अर्थ को अधिक गहराई से उन्मीलित करती है। और मन उल्लसित हो उठता है।

द्वितीय स्वर : सरस्वती यानि ऋत और सत्य दोनों रसों से युक्त। साहित्य और संगीत सरस्वती के दो स्तन हैं। और भूखे शिशु की भाँति वैदिक ऋषि ने इनका पान करना चाहा है। वो कहता है–

यस्ते स्तनाः शशयो यो मयोभुः

प्रथम स्वर : सरस्वती का स्तोत्र बह उठता है वसन्त में, हम इसे श्री पंचमी कहें, सरस्वती जयन्ती कहें या वसन्त पंचमी कहें कोई अन्तर नहीं पड़ता।

द्वितीय स्वर : सरस्वती की प्रतिमा में वीणा और पुस्तक, संगीत और शास्त्र के प्रतीक हैं।

प्रथम स्वर : इसीलिए वीणा के नाद में, काव्य के रस में, राग के प्रसंग में, रति और रंग में, सब स्थानों पर गहरा जाती है जीवन की धारा वसन्त में–

गीत : वासन्ती मौसम से रंग कुछ उधार लिए,
कैसा वन उपवन-सा रूप ये सजा लिया
रस भीने दिन की सौगंध तुम्हें प्राणप्रिय
मैंने मन आंगन में तुम्हें है बसा लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संध्या सिंदूरी में पवन गीत गाती है
भँवरों को कली-कली दूर से लुभाती है
राग के प्रसंगों में रति और रंगों में
ऋतु के इस उत्सव ने सबको लुभा लिया।
वासन्ती मौसम से–

फूलों से लदे वृक्ष बेलों से हिले-मिले
जल में कमल भी हैं सुन्दर खिले-खिले
मुस्काती चाँदनी भी करती सी मनमानी
सारे जड़ चेतन ने गन्ध में नहा लिया।
वासन्ती मौसम से–

प्रथम स्वर : प्राकृतिक शोभा अद्वितीय होती है वसन्त में। प्रकृति की कूची रस से भीगकर अपने फलक पर स्पर्श देती है।

द्वितीय स्वर : और इस स्पर्श से देखी-परखी और जानी-पहचानी वस्तुएँ अनदेखी, अनजानी अनहोनी और सुन्दर-सी लगने लगती हैं।

(पक्षियों के कलरव, कोयल की कूक, संगीत। ध्वनि प्रभाव।)

प्रथम स्वर : कोयल का स्वर अमराइयों में गूँज उठता है और आमों की डालियाँ मंजरियों से लद जाती हैं। मौलश्री और माधवी लता आनन्द से झूम उठती हैं।

द्वितीय स्वर : कहीं चम्पा चमेली और केतकी के फूल मनोहर सुगन्ध फैलाते हैं तो कहीं गेंदा और गुलाब सौन्दर्य की शोभा बिखेर देते हैं।

(केतकी गुलाब...., गीत की पंक्ति। ध्वनि प्रभाव)

प्रथम स्वर : कहीं रंग-बिरंगी तितलियाँ उड़ती हैं तो कहीं भौंरे गुँजार करते हैं।

द्वितीय स्वर : दूर तक फैले खेतों में सरसों के पीले फूलों की शोभा निराली होती है, झूमती हुई गेहूँ की बालें इठलाती हैं।

प्रथम स्वर : गीत गाती ये फसलें किसान के मन में अनुपम उल्लास का संचार करती हैं।

द्वितीय स्वर : वासन्ती प्रभात की आभा, वासन्ती संध्या का सौन्दर्य और वासन्ती रजनी की मादकता जीवन को अनुराग और यौवन को अनन्त ऐश्वर्य प्रदान करती है।

प्रथम स्वर : अनजाने ही वर्ष का यौवन उन्माद गली-गली और कली-कली में प्रवहमान हो उठता है। उसके रस से वायु की लहर-लहर में नाद गूँज उठता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : बयार गंधव बन जाती है, नदियों के प्रवाह में मधु घुल जाता है, वे मादक हो जाते हैं और मन मौजी हो, गा उठता है।

गीत : वासंती मौसम के पीछे
अद्भुत कोई भेद है
लिपि खुली जो फूलों की
तो वन-वन नूतन वेद है,
अर्थ भरा भौंरों का गुन-गुन
व्यर्थ कभी न ये होता
नदियों के कलकल निनाद में शेष न कोई खेद है।

(धीरे-धीरे गीत मंद होकर समाप्त)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कलम का सिपाही

(मुंशी प्रेमचन्द पर केन्द्रित रूपक)

लोकसंगीत के ध्वनि प्रभाव के साथ स्वर का उभरना।

प्रथम स्वर : हिन्दी के साहित्यिक उपन्यास तथा कहानी की विकास यात्रा, सामयिक जीवन की विशालता, अभिव्यक्ति का खरापन, पात्रों की विविधता, सामाजिक अन्याय का घोर विरोध, मानवीय मूल्यों की मित्रता और संवेदना, साहित्य की साधना, धन का शत्रु और किसान वर्ग का मसीहा—यानि मुंशी प्रेमचन्द।

द्वितीय स्वर : मुंशी प्रेमचन्द जिन्होंने अपनी युग की चुनौतियों को सामाजिक धरातल पर स्वीकारा और नकारा। उन्होंने इन समस्याओं और मान्यताओं के जीते-जागते चित्र उपस्थित किए जो मध्यम वर्ग, किसान, मजदूर, पूँजीपति और समाज के दलित और शोषित व्यक्तियों के जीवन को संचालित करती हैं।

प्रथम स्वर : उनका साहित्य सृजन विपुल था लेकिन विपुलता ने उनके लेखन की गुणवत्ता को कभी ठेस नहीं पहुँचाई—उसमें कहीं भी कोई कमी नहीं आने दी।

द्वितीय स्वर : समय की धड़कनों से जुड़े, सजग आदर्शवादी और साथ ही प्रामाणिकता के संवेग को अपने आप में धारण करनेवाले, इस कलम के सिपाही के कृतित्व की, स्थायी देन ऐसी मुहावरेदार और सहज भाषा है, जो पहले कभी नहीं थी।

प्रथम स्वर : उनके साहित्य का मूल स्वर है—मा भैः 'डरो मत' और जो साहित्यकार अपने युग को अभय नहीं देता, वह किसी भी अन्याय से जूझने की शक्ति नहीं देता, और जो ऐसी शक्ति नहीं देता वो युग जीवन का संगी नहीं हो सकता।

द्वितीय स्वर : लेकिन प्रेमचन्द आज भी जीवन से जुड़े हुए हैं, वे युगजीवी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं और युगान्तर तक मानवसंगी दीख पड़ते हैं—यही कारण है कि आज प्रेमचन्द और उनका साहित्य सभी जगह परिसंवाद परिचर्चा का विषय है।

प्रथम स्वर : चाहे शालेय आयोजन हो या विचार गोष्ठी अथवा सम्भाषण, प्रेमचन्द की विचारधारा, उनके साहित्य व प्रासंगिकता पर जरूर ही बात की जाती है।

ध्वनिप्रभाव.....(तालियाँ)

प्रवक्ता : (वक्तव्य की शैली में) आज जब हम प्रेमचन्द की बात करते हैं तो अपने आप ही सामाजिक व्यवस्था के कई पहलू भी हमारे सामने आ जाते हैं जो कि प्रेमचन्द की प्रासंगिकता को उजागर करते हैं। प्रेमचन्द यदि आज भी प्रासंगिक और महान हैं तो वो इसलिए कि उन्होंने किसानों के मानसिक गठन और मध्यम वर्ग तथा दलित और पिछड़े हुए लोगों के दृष्टिकोण को उस समय गहरे विश्वास और उत्साह के साथ वाणी दी जिस समय इस देश के सामाजिक और राजनैतिक जीवन में इसकी आवश्यकता अनुभव की जा रही थी और उथल-पुथल हो रही थी। वो तब का समय था—लेकिन तब से आज तक लगातार हम किसान-पिछड़े वर्ग और शोषित वर्ग के कल्याण की जिम्मेदारी अनुभव कर रहे हैं, तो क्या आज की स्थिति पर प्रेमचन्द पहले से ही विचार करते हुए नहीं दिखाई देते। उनकी कृतियों में आर्थिक शोषण और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध कृषक वर्ग की घृणा और कटुता की झलक मिलती है।

प्रेमचन्द का व्यक्तित्व तब सबसे अधिक विकसित होता है जब वह निम्न मध्यवर्ग और कृषक वर्ग का चित्रण करते हुए अपने युग की प्रतिगामी शक्तियों का भी विरोध करते हैं और एक श्रेष्ठ विचारक और समाज सुधारक के रूप में प्रकट होते हैं। इनका विचारक जिसे इनके साहित्यकार से अलग नहीं किया जा सकता—बदलती परिस्थितियों के अनुरूप तथा निजी अनुभूतियों के कारण बदलता भी रहा है। और इसीलिए ये मूलतः सामाजिक होकर भी अपना कलेवर बदलता रहता है। प्रेमचन्द का जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण है, वो पूस की रात और कफन कहानियों में एक नया मोड़ लेता है इनकी संवेदना गोदान उपन्यास में, नए साँचे में ढलने लगती है। प्रेमचन्द ने कभी अपने को किसी सीमा में नहीं बाँधा, इनकी जीवन दृष्टि बदलती रही इसीलिए कभी वे मानवतावादी, कभी वे सुधारवादी, कभी प्रगतिवादी, तो कभी गाँधीवादी मालूम पड़ते हैं लेकिन सत्य तो ये है कि प्रेमचन्द कभी किसी वाद को लेकर नहीं चले—न तो वादी होकर जिये और न ही वादी होकर मरे। सच तो ये है कि वे सतत् गतिशील रहे हैं कहीं भी चुकते नजर नहीं आते, निःशेष नहीं होते।

....(तालियाँ).... संगीत—

प्रथम : प्रेमचन्द उन सामाजिक परिस्थितियों और मानव वृत्तियों से बखूबी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
परिचित थे जो जीवन में सदैव ही घटित होती रहती हैं। उन्होंने देखा था कि किस प्रकार गैर-कानूनी तरीके से किसानों को उनके खेतों से बेदखल किया जाता है—किस तरह वे महाजनों और पुलिस के सिपाहियों से घिरे हैं।

द्वितीय : गोदान का होरी ऐसे ही किसान का जीवन चरित्र है जो भूख, बीमारी, उपेक्षा, पीड़ा और मौत से लड़ता रहा है।

प्रथम : लेकिन दूसरी ओर—पंडित अलोपीदीन जैसे कालाबाजारी समाज के ठेकेदार और शोषक को गिरफ्तार करने वाला नमक का दरोगा भी है जो किसी भी हाल में अपने ईमान को बेचता नहीं है और पुलिस महकमे की सत्यनिष्ठा और दृढ़ता को उभारता है।

(नाटक) ध्वनिप्रभाव (बैलगाड़ी—बैलों की घंटी)

पंडित : बाबूजी आशीर्वाद—कहिये हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ जो गाड़ियाँ रोक दीं—हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा होनी चाहिए।

वंशीधर : ये सरकारी हुकुम है, गाड़ियाँ नहीं जाएँगी।

पंडित (हँसकर) : हम सरकारी हुक्म को नहीं मानते और न ही सरकार को। हमारे सरकार तो आप हैं, ये तो घर की बात है भला हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं—ऐसा कैसे सम्भव है कि हम इस घाट से गुजरें और देवता को कुछ न चढ़ाएँ। आपने व्यर्थ कष्ट किया—मैं तो खुद ही आपके पास आ रहा था।

वंशीधर : हम उन नमकहरामों में नहीं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेच दें, आप इस समय मेरी हिरासत में हैं—आपका चालान होगा।

पंडित (गिड़गिड़ाकर) : बाबू साहब ऐसा मत कहिए हम मिट जाएँगे। इज्जत माटी में मिल जाएगी, हमारा अपमान करके आपको क्या मिल जाएगा।

वंशीधर (कठोर स्वर) : मैं ऐसी कोई बात सुंनना नहीं चाहता।

पंडित (करुण स्वर) : मुख्तारजी 1000 के नोट बाबू साहब को भेंट करो।

वंशीधर (कड़ककर) : पंडित अलोपीदीन एक हजार नहीं एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।

पंडित : आपकी मर्जी—इससे ज्यादा का मेरा सामर्थ्य नहीं।

वंशीधर : बदलूसिंह तुम देखते क्या हो हिरासत में लो।

पंडित : बाबू साहब ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिए—मैं पच्चीस हजार पर निपटारा करने के लिए तैयार हूँ।

वंशीधर : मैंने कहा न असम्भव बात है।

पंडित : तीस हजार।

वंशीधर : नहीं नामुमकिन है।

पंडित : क्या कहा हुजूर चालीस पर भी नहीं।

वंशीधर : चालीस हजार नहीं चालीस लाख पर भी नहीं—बदलूसिंह इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदमी को अभी हिरासत में लो। मैं एक शब्द भी सुनना नहीं चाहता।

(ध्वनिप्रभाव बैलगाड़ियों का)

प्रथम स्वर : तो ऐसा है—प्रेमचन्द का पात्र, कहानी का नायक जिसे कोई भी प्रलोभन आकर्षित नहीं कर पाता। क्या आज भी हम ऐसी दृढ़ता और ईमानदारी की अपेक्षा नहीं करते।

द्वितीय स्वर : कहते हैं—साहित्यकार के साहित्य पर उसके व्यक्तित्व की छाप होती है, तो क्या प्रेमचन्द अपने व्यक्तिगत जीवन में इतने ही दृढ़ सत्य और सहज थे—

प्रथम स्वर : निःसन्देह वे लेखक के नाते तो महान हैं ही मनुष्य के नाते तो वे और भी महान हैं। देखने में वे किसी भी तरह बड़े नहीं मालूम पड़ते थे। उनकी दुबली-पतली साधारण-सी देह, उनके द्वारा झेले गए कष्टों की सूचना देती थी। भाग्य कभी उनके अनुकूल नहीं रहा।

द्वितीय स्वर : दूसरों के हृदय को मोह लेने वाला उनका आचरण सीधा-सादा ढंग—सहज बर्ताव इन सब बातों ने उनको अपरिचित और परिचित की दृष्टि में उठा दिया था। उनमें सदैव बालकों जैसा भोलापन सरलता थी। उनके जीवन की सहजता और व्यवहार की मधुरता की बात—हम सुनें उनकी सुपुत्री श्रीमती देवी की जुबानी—

....भेंटवार्ता....

प्रथम स्वर : प्रेमचन्द की सबसे बड़ी विशेषता और सफलता है, उनकी कहानियों और नाटकों में व्याप्त मानवीय संवेदना।

द्वितीय स्वर : अमर कथासाहित्य की रचना के साथ-साथ उन्होंने युग जीवन के सभी पक्षों पर अपनी नजर डाली। युग चेतना के लिए जागरण निकाला—विभिन्न भाषाओं के साहित्य को एक-दूसरे से परिचित कराने के लिए—हंस का प्रकाशन किया।

प्रथम स्वर : उनका प्रगतिशील आन्दोलन—विचारोत्तेजक निबन्ध—व्याख्यान आदि ने साहित्य-भाषा और साहित्यकार के दायित्व की ओर जनसाधारण का ध्यान आकर्षित किया—और साथ ही साथ सन्दर्भ और समाधान भी दिए।

द्वितीय स्वर : और यही कारण है कि—जहाँ कहीं भी साहित्य प्रेमी मिल बैठते हैं—वहाँ प्रेमचन्द के व्यक्तित्व, कृतित्व प्रासंगिकता उनके उपन्यास, कहानियों और पात्रों के अलावा उनकी विचारधारा, प्रगतिशीलता आदि पर खुली बहस होती है।

(परिवर्तन संगीत)

(परिचर्चा शैली में बातचीत)

सुधीर (अ) : जहाँ तक मैंने प्रेमचन्द को पढ़ा है तो भाई मैं तो यही कहूँगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कि उन्होंने अपने साहित्य में किसी निरुद्देश्य रूप का सृजन नहीं किया। अपनी प्रत्येक रचना में किसी न किसी समस्या को उठाया है। और यहाँ तक की अपने विचार के अनुसार उसके समाधान की ओर भी इशारा किया है।

. **मधु (ब) :** मैं आपके विचार से सहमत अवश्य हूँ मगर एक बात जो मेरे देखने में आती है वो ये कि प्रेमचन्द बहुत कम अवसरों पर अपने तजुर्बे से बाहर गए, प्रेमचन्द स्वयं देहात में पले, पैदा हुए—गरीबी में जिये, और उनके उपन्यासों में देहाती जीवन का ही चित्रण है। चाहे उनका उपन्यास गोदान हो या कहानियों में कफन, गोरा, मृतकभोज या बूढ़ी काकी। कहिए संजय जी आपका क्या ख्याल है—

संजय (स) : ये बात तो सच है कि—मुख्य चित्रण तो ग्रामीण जीवन का ही है मगर प्रतिज्ञा, निर्मला और सेवासदन—कुछ ऐसे उपन्यास भी हैं जो मुख्यतः शहरी जीवन को लेकर ही चलते हैं।

मधु : आपने निर्मला उपन्यास का नाम लिया तो मुझे, प्रेमचन्द का नारी के प्रति क्या दृष्टिकोण है, और वे उसे कैसा प्रस्तुत करते हैं—इस बारे में भी थोड़ा ख्याल आ गया।

सुधीर : आपने ठीक कहा मधुजी—इस उपन्यास में हम भारतीय नारी की समस्या को मूर्त पाते हैं। निर्मला कोई खराव स्त्री नहीं है लेकिन परम्पराओं, रूढ़ियों, धर्म और कर्मकाण्डों में वो जकड़ी हुई है। और वह किसी भी तरह अपनी मुक्ति नहीं कर पाती।

मधु : और आज भी क्या भारतीय नारी उतनी स्वतन्त्र है नहीं, जितनी समझी जाती है।

संजय : लगता है—अब मधु जी अन्य बातों पर तो बोलने ही नहीं देंगी अच्छा मधुजी आप ही बताइए क्या प्रेमचन्द को आप किसी वाद से जुड़ा पाती हैं।

मधु : जहाँ तक मैं सोचती हूँ कि कोई भी साहित्यकार अपने सामयिक वातावरण से प्रभावित होता अवश्य है मगर प्रेमचन्द किसी एक धारा या वाद में बँधकर नहीं चले।

सुधीर : इस सम्बन्ध में मैं तो ये कहूँगा कि वो वास्तविकता की ओर अग्रसर हो रहे थे उनकी रचनाओं में वास्तविकता की ओर क्रमिक यात्रा हम देख सकते हैं। तो फिर यों तो उन्हें वस्तुवादी भी कहा जा सकता है।

—हाँ ये तो ठीक ही है।

(परिवर्तन सूचक ध्वनिप्रभाव)

प्रथम स्वर : प्रेमचन्द ने पाठकों की वासना या प्रेम सम्बन्धी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए उपन्यास और कहानियों की रचना नहीं की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : कला के बारे में उनकी भावना उदात्त थी, जीवन की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के सम्बन्ध में उनके जो विचार थे, उनको व्यक्त करने का साधन ही वो कला को मानते थे।

प्रथम स्वर : वे सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को प्रमुखता देते हैं, और ये समस्याएँ उनके वर्णन, पात्र कथावस्तु या कहानी के अन्य तत्वों पर शासन करती हैं। वे सामाजिक जीवन के चितेरे हैं, उनका मूल उद्देश्य–उस समाज के क्रमिक विकास का दर्शन कराना है–जो सामाजिक रूढ़ियों पर आधारित है।

द्वितीय स्वर : वे एक ऐसी समाज व्यवस्था का निर्माण चाहते हैं जिसमें जरूरतें पूरी करने के अवसर होंगे और विकास की सुविधाएँ। इसी सामाजिक उद्देश्य से उनका चिन्तन प्रेरित था और इसी से उनकी कला अनुप्राणित थी।

प्रथम स्वर : उन्होंने साहित्य समाज और राजनीति के क्षेत्र में जो क्रान्ति का बीज बोया था–वो आज प्रस्फुटित हो चुका है। जो आगे चलकर विशाल वटवृक्ष में परिणित होगा। जिसकी शीतल छाया में सुखी राष्ट्र का निर्माण होगा। उनके साहित्य में जागृति की औषधि है, जिसकी नींव पर साहित्य का विशाल भवन खड़ा होगा।

द्वितीय स्वर : प्रेमचन्द का साहित्य ही कालजयी नहीं वे स्वयं भी अपने जीवन से कालजयी हैं।

(संगीत के ध्वनि प्रभाव से समाप्त)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जय नव भारत हे

(15 अगस्त स्वाधीनता दिवस पर विशेष रूपक)

सस्वर : **कहीं न ऐसी सुबहा देखी, जैसे बालक की मुस्कान।**
या फिर दूर कहीं मन्दिर में, हल्की-सी मुरली की तान॥
गुरुवाणी गुरुद्वारे में तो मस्जिद से उठती अजान।
आत्मा और परमात्मा मिले जहाँ, यही है वो स्थान॥

(सुपर इम्पोज करते हुए शब्द आरम्भ–)

महिला : सम्पूर्ण विश्व के लिए रहस्य, ज्ञान और अपार ऐश्वर्य की भूमि भारत।

पुरुष : अनन्तकाल से पर्यटकों, तीर्थयात्रियों, विजेताओं, व्यापारियों और अन्वेषकों का आकर्षण केन्द्र भारत।

महिला : इसी भारत के विषय में प्रसिद्ध जर्मन भारतविद् मैक्समूलर का कहना था–

अन्य स्वर : यदि मुझसे पूछा जाए कि सारे विश्व में वह कौन-सा देश है, जिस पर प्रकृति ने अपनी सारी शक्ति, अपना सारा सौन्दर्य, और अपनी सारी समृद्धि उड़ेल दी तो मैं कहूँगा वह है भारत, यदि मुझसे पूछा जाए कि आकाश के नीचे किस कोने में मानव मस्तिष्क ने अपनी उत्कृष्टतम प्रतिभाओं का अधिकतम विकास किया, जीवन की गुत्थियों पर विशद विवेचन किया और उनमें से कुछ को सुलझा भी लिया–तो मैं कहूँगा वह है भारत।

महिला : और इसी स्वतन्त्र भारत जननी, नव जीवनमय, नव जाग्रत, नवीनरथ नव गति नवपथ, नवजनमन के नवभारत की प्रशस्ति कोटि-कोटि कण्ठों ने गाई है। दुहराई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत :

जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी
जय नव भारत हे, जय नवभारत हे
जय नवीन आकाश धरा नव
चंचल, अंचल हर्ष भरा भव
जय विमुक्त विहगों के कलरव
नव जीवनमय नव चेतनमय जय नव जाग्रत हे
जय जननी जय नव भारत हे....4....
जय नवीन ऊषा नव चन्द्रा
नव सपनों की रजनी गन्धा
जय हिमाद्रि नव जय नव वृन्दा
जय नवीनरथ, जय नवीन पथ जय नवगतिरत हे
जय जननी जय नव भारत हे....4....
जय नवस्वर की नवल गर्जना
जय नवस्वर की नवल सर्जना
जय नव शिव की नवल अर्चना
जय नव जनमत, जय नव पद शर जनमन उन्नत हे
जय जननी जय नव भारत हे....4....

(पं. सोहनलाल द्विवेदी)

पुरुष : और भारत की यही नवलता-धवलता-श्रेष्ठता और सुन्दरता-आकर्षण के साथ ही, विदेशी शक्तियों के लिए ईर्ष्या का भी कारण बनी।

महिला : भारत को जीतने, भारत को लूटने विदेशी आते रहे, उन्हीं में थे गोरे फिरंगी भी। उन्होंने प्रवेश तो किया व्यापारी बनकर लेकिन फिर अचानक हवा बदल गई।

पुरुष : शान्ति भंग हो गई, अत्याचार बढ़ने लगे, कुचले जाने लगे लोग, रौंदा जाने लगा देश।

(करुण संगीत)

महिला : लेकिन ये दौर भी कब तक चलता?

पुरुष : पहली आग भड़की सन् 1857 में जब रानी लक्ष्मीबाई ने खुला विद्रोह किया। अल्लाह ओ अकबर और हर-हर महादेव के नारों से आकाश गूँज उठा।

महिला : सोचा गया कि अगर आजादी का इतिहास लिखना है तो खून से लिखना होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिल्म रानी रूपमति का गीत :

इतिहास अगर लिखना चाहो, आजादी के मजमून से।
तो सींचो अपनी धरती को वीरो तुम अपने खून से॥
हर-हर महादेव....2....अल्लाहो अकबर....2....
आपस में लड़ना छोड़ो, भेदभाव का सर तोड़ो।
वतन पे आफत आई हो तो, तार दिल का दिल से जोड़ो॥
अगर बाँधना चाहे कोई, जुल्म भरे कानून से।
तो सींचो अपनी धरती को वीरो अपने खून से॥
हर-हर महादेव....2....अल्लाहो अकबर....2....
हमें अबला न समझे कोई, हम भारत की नारी हैं।
कोमल-कोमल फूल नहीं हम ज्वाला हैं चिंगारी हैं॥
छोड़ दो पायल की झंकार, हाथ में लो तीखी तलवार।
ढहा दो घूँघट का सिंगार, बनो रणचंडी का अवतार॥
जय अम्बे जगदम्बे....4....
अगर जो चाहो वतन हमारा हँसता रहे सुकून से।
तो सींचो अपनी धरती को, वीरो अपने खून से॥
इतिहास अगर लिखना चाहो आजादी के मजमून से।
तो सींचो अपनी धरती को वीरों अपने खून से॥

(पं. भरत व्यास)

पुरुष : 1857 में भड़की ये आग सुलगती रही। कभी शोले बन भड़कती और चिनगारियाँ बिखेर देती।

महिला : चिनगारियाँ बढ़ती गईं।

पुरुष : फिर 7 अगस्त, 1942 को बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का युगान्तरकारी अधिवेशन हुआ।

महिला : जो 8 अगस्त को रात साढ़े 10 बजे के लगभग समाप्त हुआ।

महिला : अपने भाषण में गाँधीजी ने कहा–

अन्य स्वर : यदि आज मैं निष्क्रिय हो चुपचाप बैठ जाऊँ–जबकि समस्त विश्व ज्वाला की लपेट में है तो भगवान् मुझे क्षमा नहीं करेगा।

महिला : उन्होंने कहा–

अन्य स्वर : क्या मैं जापानियों से कुछ देर ठहर जाने के लिए निवेदन करूँगा, क्या हम सारे चीन का रौंदा जाना देखते रहे....। यदि विश्व के सारे राष्ट्र मेरा विरोध करें, यदि सारा भारत मुझे ये मनवाने की कोशिश करे, कि मैं भूल कर रहा हूँ, फिर भी मैं आगे बढ़ता ही रहूँगा, केवल भारत के हित में नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के हित के लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महिला : वो समय ही ऐसा था भारत तो भारत सम्पूर्ण विश्व में आग ही आग थी। माहौल ऐसा कि—

अन्य स्वर : नागाह लहकते खेतों से, टापों की सदाएँ आने लगीं।
बारूद की बोझल बू लेकर, पच्छम से हवाएँ आने लगीं।
तामीर के रौशन चेहरे पर, तख़दीब का बादल फैल गया।
हर गाँव में दहशत नाच उठी, हर शहर में जंगल फैल गया।
मगरिब के मुहज्जब मुल्कों से, कुछ खाकी वर्दी पोश आए।
इठलाते हुए मगरूर आए, लहराते हुए मदहोश आए।
खामोश जमीं के सीनों में, खेमों की तनावे लड़ने लगीं।
मक्खन-सी मुलायम राहों पर, बूटों की खराशें पड़ने लगीं।
फौजों के भयानक बैण्ड तले, चर्खों की सदाए डूब गईं।
जीपों की सुलगती धूप तले, फूलों की कबाएँ डूब गईं।
इंसान की कीमत गिरने लगी, अजनास के भावों चढ़ने लगे।
चौपाल की रौनक घटने लगी, भरती के दफातर बढ़ने लगे।
बस्ती के सजीले शोख जवां बन-बन के सिपाही जाने लगे।
जिस राह से कम ही लौट सके उस राह पे राही जाने लगे।
इन जाने वाले दस्तों में गैरत भी गई बरनाई भी।
माँओं के जवाँ बेटे भी गए, बहनों के चहेते भाई भी।
बस्ती पे उदासी छाने लगी, मेलों की बहारें खत्म हुईं।
आमों की लचकती शाखों से झूलों की कतारें खत्म हुईं।
धूल उड़ने लगी बाजारों से भूख उगने लगी खलिहानों में।
हर चीज दुकानों से उठकर रूपोश हुई तहखानों में।
बदहाल घरों की बदहाली बढ़ते-बढ़ते जंजाल बनी
महँगाई बढ़कर काल बनी सारी बस्ती कंगाल बनी
चरवाहियाँ रस्ता भूल गईं, पनहारियाँ पनघट छोड़ गईं।
कितनी ही कंवारी अबलाएँ माँ बाप की चौखट छोड़ गईं।
इफलाज जदा दहकानों के हल-बैल बिके, खलिहान बिके।
जीने की तमन्ना के हाथों, जीने ही के सब समान बिके।

(साहिर लुधियानवी)

महिला : फिर 9 अगस्त 1942 को भारत में एक बार फिर अंग्रेजों भारत छोड़ो के नारे गूँज उठे।

(नारों का ध्वनिप्रभाव।)

पुरुष : व्यापक संघर्ष आरम्भ हुआ। 1857 के बाद यह दूसरा अवसर था जब क्रान्ति के भूकम्प ने देश को प्रकम्पित कर दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महिला : सन् 1857 और 1942 की इस क्रान्ति की एक स्पष्ट समानता ये थी कि आक्रमण द्वारा युद्ध में पहल सरकार ने की।

पुरुष : 57 की क्रान्ति में मेरठ के सिपाहियों से हथियार छीनकर सरकार ने बारूद के ढेर में चिंगारी फैलाई थी।

महिला : और 42 की क्रान्ति में ब्रह्ममुहूर्त में ही, सोये नेताओं को गिरफ्तार कर मानो देशभर को जगा दिया।

पुरुष : जैसे कहा हो–हे लम्वी नींद के सोने वालो उठो, तुम्हारे जागरण का समय आ गया।

महिला : फिरंगियों का रूप कब का पहचाना जा चुका था, फिर उभरने लगे थे राष्ट्रीयता के स्वर–भाषा और भावना एक थी।

अन्य स्वर : सुनी राष्ट्रभाषा की जब से, भव्य मनोहर तान।
मिटी मोह माया की निद्रा, गए रूप पहचान।
छिपी छुरी नीचों के छल में
देख दम्भ दुष्टों के दल में
बढ़ आगे हो सजग, मेंट तू, क्षण में नाम निशान
चूम चरण मत चोरों के तू
गले लिपट मत गोरों के तू
झटक पटक झंझट को झटपट झोंक भाड़ में मान
खलदल वल दलदल में धसका
गा गौरव-गरिमा गुण यश का
क्या किसका गर तू, उकसाता, अपना प्राण महान्
आप आप कर अब न अपर को
बना बाप मत वंचक नर को
अगर उतरना पार चाहता दिखा शक्ति बलवान।
मिटी मोह माया....।

(महाप्राण निराला)

महिला : आह्वान के स्वर निरन्तर जारी थे....

गीत : हिमांद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतन्त्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो-बढ़े चलो
असंख्य कीर्ति रश्मियाँ, विकीर्ण दिव्य दाहसी
सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी
हिमाद्रि....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अराति सैन्य सिन्धु में सुवाड़वाग्नि से जलो
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
हिमाद्रि....

(जय शंकर प्रसाद)

सन् 42 की क्रान्ति ने अंग्रेजी ताज के शासन की लगभग समाप्ति कर दी थी। 9 अगस्त के दिन राज्य क्रान्ति का जो युद्ध आरम्भ हुआ था वो लगभग 3 वर्षों तक चला।

महिला : फिर आया 15 अगस्त सन् 1947 –और तब

(ध्वनि प्रभाव–बिगुल)

अन्य स्वर : भ्रमर का गुंजार वह भी स्वाधीन
पक्षियों का कलरव–वह भी स्वाधीन
उदय अस्त दिनकर का–
सब है स्वाधीन
बहती है समीर।
पुष्प के शून्य उर में–लेती स्वाधीन साँस
पाती है सुरभि स्वाधीनगति
आवर्तन-परिवर्तन-नर्तन सुख कीर्तन में
विपुल उल्लासमय-विश्व के क्षण-क्षण में
भूधर महान और क्षुद्र कण-कण में
एक स्वाधीनता का गूँजता है विपुल हर्ष।

(महाप्राण निराला)

गीत : (सिर्फ एक अंतरा)
जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी
जय नवभारत हे, जय नवभारत हे
जय नवीन आकाश धरा नव
चंचल, अंचल हर्ष भरा भव
जय नवीन आकाश धरा नव
चंचल, अंचल हर्ष भरा भव
जय विमुक्त विहगों के कलरव
नव जीवनमय नवचेतनमय जय नव जाग्रत हे।

(सोहन लाल द्विवेदी)

महिला : स्वतन्त्र भारत का दायित्व सम्भालते ही पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था–

अन्य स्वर : हम एक दूसरे के विरुद्ध गुटों में बँधी शक्तियों अथवा समूहों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से अलग रहेंगे/जिनकी वजह से पहले भी विश्व युद्ध हुए।

महिला : अब से सिर्फ 50-60 वर्ष पूर्व अधिकांश देश दासता में थे—किन्तु जैसे-जैसे देश आजाद होते गए उन लोगों की संख्या बढ़ती गई, जो शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व में आस्था रखते हैं।

पुरुष : इसके उपरान्त भी आज मानव जाति ऐसे नाजुक कगार पर खड़ी है—कि कभी भी सर्वनाश हो सकता है। गुटनिरपेक्ष देशों के सातवें सम्मेलन में 7 मार्च 83 को श्रीमती गाँधी ने कहा था—

अन्य महिला स्वर : भारत ने बहुत उतार-चढ़ाव देखा है और इस दुर्गम पथ पर सहिष्णुता का दर्शन ही हमारा आकाश दीप रहा है—अस्तित्व तभी सम्भव है जब सह अस्तित्व कायम हो।

पुरुष : और इसीलिए भारत बार-बार दुहराता है—

अन्य स्वर : **ये सरजमीन है गौतम की और नानक की**
इस अर्जेपाक में वहशी चल न सकेंगे कभी
हमारा खून अमानत है नस्ले—नौ के लिए
हमारे खून पे लश्कर न पल सकेंगे कभी।
कहो की आज भी हम सब अगर खामोश रहे
तो इस दमकते हुए खाकदां की खैर नहीं
जुनू की ढाली हुई एटमी बलाओं से
जमी की खैर नहीं आसमां की खैर नहीं
गुजशता जंग में घर ही जले मगर इस बार
अजब रहीं कि ये तनहाइयाँ भी जल जाएँ
गुजशता जंग में पैकर जले मगर इस बार
अजब नहीं कि ये परछाइयाँ भी जल जाएँ

(साहिर लुधियानवी)

महिला : तब फिर—सम्पूर्ण विश्व को हर मानवता के पुजारी को इस आस्था को नए सिरे से उद्घोषित करना होगा—

पुरुष : स्वतन्त्रता, विकास, निरस्त्रीकरण और शान्ति परस्पर अविभाज्य हैं—और यह सब न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए है—

महिला : भारतीय संस्कृति विश्वास की संस्कृति है पूरब का सूरज शान्ति और आस्था की आभा से मंडित है जिसकी किरणें अखिल विश्व में व्याप्त हैं।

सस्वर : **पूरब में सूरज ने छेड़ी, जब किरणों की शहनाई**
चमक उठा सिन्दूर गगन में, पश्चिम तक लाली छाई।

(पंक्ति दुहराते हुए धीरे-धीरे स्वर मंद होकर समाप्त।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे नगमों को नींद आती है

(‘रघुपति सहाय’ फिराक गोरखपुरी पर केन्द्रित रूपक)

गम्भीर संगीत के साथ शे'र का वाचन–

नाम भी लेना है जिसका इक जहाने रंगो बू
आज उस ईसा नफस दमसाज की बातें करो।
दोस्तो उस नौ बहारे-नाज की बातें करो।

प्रथम स्वर : फिराक गोरखपुरी जो आज गमे-फिराक है लेकिन हर दिल आज जुदाई के इस गम को अपने में बसा लेना चाहता है, उसकी बात करना चाहता है उसे याद करना चाहता है–

द्वितीय स्वर : एक ऐसी शख्सियत, जिसमें हर खासोआम की बेचैनी और दर्द समाया हुआ है, जो दोजख और जन्नत दोनों से मिलकर बनी है इसमें शदीद बाहमीयत (तीव्र परस्पर मिलन) पाई जाती है। जो इन्सानियत से बड़ी मुहब्बत करती है। उनकी हर ग़ज़ल उनकी शख्सियत (व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब) का इजहार करती है–

गजल : **शामेगम कुछ इस निगाहे नाज की बातें करो**
बे खुदी बढ़ती चली है राज की बातें करो।
निकहते जुल्फें परीशां दास्ताने शामेगम
सुबहा होने तक इसी अंदाज की बातें करो
कुछ कफस की तीलियों से छन रहा है नूरसा
कुछा फजा कुछ हसरते परवाज की बातें करो
नाम भी लेना है जिसका इक जहाने रंगो बू
दोस्तो उस नौ बहारे नाज की बातें करो।

प्रथम स्वर : 28 फरवरी सन् 1896 शहर गोरखपुर फिराक साहिब की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जन्मभूमि (जाय पैदाइश)। बचपन से ही आपकी तबीयत बहुत हस्सास (भावुक) थी। आप सूरदास के भजन और तुलसी की रामायण से बहुत हद तक और खासतौर से मुतास्सिर (प्रभावित) थे। इतना ही नहीं वे अफसाने वे वाकए वे मनाजिर (दृश्य) जिनमें फिराक साहिब के बचपन की जेहनियत (प्रकृति) कोई बात पाती थी, उनसे भी वे मुतास्सिर होते थे। और एक अहसास की शुरुआत हो जाती थी। अपनी इस जेहनियत के बारे में वे कहते हैं—

अन्य स्वर : ''घबराहट बेसब्री और तनहाई का एहसास भी शुरू से ही इतना तेज था कि अब तक फैसला न कर सका कि इसको क्या कहूँ।''

प्रथम स्वर : लेकिन इतना सब होने पर भी उन्होंने जिन्दगी की तलाश की।

उनकी राय में जिन्दगी को हर जगह खोजा जा सकता है, सहर में, सबा में, सदा और फजा में।

द्वितीय स्वर : वे जिन्दगी को हमेशा एक बुलन्दी देना चाहते हैं और इसीलिए उसकी तलाश पर जोर देते हैं—

नगमा : **हयात ढूँढ़ते चलो-2**
जवानियों की आग में, मुहब्बतों के राग में
हसीनों के सुहाग में
हयात ढूँढ़ते चलो-चलो
शफक-शफक जमाल में उड़े-उड़े गुलाल में
फिराक में विसाल में सबा के माहोसाल में
हयात ढूँढ़ते चलो-चलो
शफक के मुस्कुराने में सहर के गुन-गुनाने में
सबा के टूट जाने में कली के कसमसाने में
हयात ढूँढ़ते चलो-चलो
पुलक-पुलक हवाओं में, सितारों की सभाओं में
धुँआ-धुँआ सदाओं में खुली-खुली फजाओं में
हयात ढूँढ़ते चलो....

प्रथम स्वर : हर आदमी की जिन्दगी में खुशी और गम यास और अलम का आना जाना एक आम बात है। अपनी ही जिन्दगी के बारे में फिराक साहब ने कहा है—

अन्य स्वर : मेरी इजदिवाजी (वैवाहिक) जिन्दगी इतनी नाखुशगवार साबित हुई कि मैं यह कह नहीं सकता कि उसने मुझे बिगाड़ दिया या बना दिया, शायद दोनों हालातों में ज्यादा फर्क नहीं। लेकिन इजदिवाजी जिन्दगी की तल्खी ने इतना बेदिल कर दिया था कि (देशप्रेम) हुब्बे वतन या झूठी सच्ची खिदमते वतन में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पनाह लेनी चाही। तमाम मुलाजमतों से इन्कार करके कांग्रेस में शामिल हो गया और कैदे फिरंग की सैर भी की। मेरे लिए आज तक कामयाबी और खुशी एक चीज न हो सकी।

प्रथम स्वर : लेकिन इतना सब होने के बावजूद अपने दर्दोगम को उन्होंने कोई अहमियत नहीं दी। लेकिन वो ये मानते थे कि शायरी में लहजा सबसे जरूरी चीज है। शायरी तमाम आलम के दुःख दर्द के एहसास को बगैर बताए, अगर उसमें नर्मी और जुजवए बरकत समो सके तो यही चीज शायरी को अजमत दे सकती है। और इसीलिए शायद वो दर्द को बगैर बताए और बगैर छिपाए ही अपनी बात कह जाते हैं। अगर दर्द भरी आवाजें सुकून नहीं तो यह नगमा कहाँ ये तो चीख हो गई।

गजल : **ये तो नहीं कि गम नहीं, हाँ मेरी आँखें नम नहीं**
तुम भी तुम नहीं हो आज, हम भी तो आज हम नहीं
नशा सम्हाले है मुझे बहके हुए कदम नहीं
मौत अगरचे मौत है मौत से जिस्त कम नहीं
अब न खुशी की है खुशी गम भी तो आज गम नहीं
ये तो नहीं....
सोमो सलात से फिराक मेरे गुनाह कम नहीं
ये तो नहीं कि गम नहीं....

प्रथम स्वर : इंसान के बदलते हुए मिजाज का एहसास फिराक की शायरी है। हयात और कायनात पर उनका इमान कायम रहा। वो ये मानते हैं कि–

अन्य स्वर : **ये माना जिन्दगी है चार दिन की**
बहुत होते हैं यारो चार दिन भी
खुदा को पा गया वाइज मगर है
जरूरत आदमी को आदमी की।

प्रथम स्वर : वो ये मानते हैं कि दौलते गम बड़े काम की है क्योंकि गम में इन्सान इन्सानियत के क़रीब होता है। उनकी शायरी में, उनकी लय में, ठहराव और बहकाव का ऐसा इम्तिज़ाज है जो बिना किसी कोशिश के उनसे और उनके हर ख्याल से हमआहंग करा देता है, सहमत करा देता है–

ग़ज़ल : **ग़ज़ल के साज उठाओ बड़ी उदास है रात**
नवाए मीर सुनाओ बड़ी उदास है रात
समेट लो कि बड़े काम की है दौलते गम
इसे यूँ ही न गँवाओ बड़ी उदास है रात
इसी खंडहर में कहीं कुछ दिये हैं टूटे हुए
इन्हीं से काम चलाओ बड़ी उदास है रात

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुना है पहले भी ऐसे में बुझ गए हैं चराग
दिलों की खैर मनाओ अभी उदास है रात
दिए रहो अभी कुछ और देर यूँ ही हाथ में हाथ
अभी न पास से जाओ बड़ी उदास है रात

प्रथम स्वर : फिराक साहब आशिकाना और इंकलाबी दोनों किस्म के शायर हैं उनकी एक ही नज्म में जहाँ इश्क लहरे मारता हुआ नजर आता है—वहाँ इन्कलाब आग उगलता हुआ भी दिखाई देता है।

द्वितीय स्वर : कहते हैं शायर अपनी जिन्दगी की बात तो करता ही है, अपने माजी की बात भी वो अपनी शायरी में कहता है लेकिन फिराक साहब ने तो अपनी जिन्दगी से बहुत आगे जाकर अपनी बात कही, अपनी शायरी को उन्होंने जिन्दगी का आइना बनाया और उस आइने में अपने मुस्तकबिल को (भविष्य) देखा और कहा—

अन्य स्वर : ''अब कमजोरी मुझ पर छाती जा रही है, ये मेरे जीवन की शाम है, शायरी मैंने इरादे से कभी नहीं की। फिराक ने तो बस इतना ही चाहा है कि इन्सानी जिन्दगी को अपनी जिन्दगी बना लें।''

प्रथम स्वर : और इतना कहकर ही वे इस दारेफानी को छोड़ गए, राहे जन्नत हुए—हाँ जाते-जाते अपने फर्ज को, एक शायर के फर्ज को, निभाते हुए साजे गजल को सम्भालने की दावत देते हुए कहा—

अन्य स्वर : **अब तुमसे रुखसत होता हूँ आओ सम्हालो साजे गजल।**
नए तराने छेड़ो कि मेरे नगमों को नींद आती है।।

(धीरे-धीरे मंद होता स्वर। समाप्त)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जसोदा हरि पालने झुलावै

(कृष्ण जन्माष्टमी पर संगीत रूपक)

आरम्भ संगीत-पंक्ति : जसोदा हरि पालने झुलावै, (दो पंक्तियाँ मात्र)।

ध्वनिप्रभाव–तेज वर्षा, बादलों की गड़गड़ाहट, बिजली के कड़कने के बीच स्वर का उभरना।

प्रथम स्वर : भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, योगेश्वर कृष्ण का अवतरण, बालक कृष्ण का जन्म।

द्वितीय स्वर : जन्म? जो अजन्मा है, अनादि और अनन्त है, उसका जन्म?

प्रथम स्वर : हाँ, उसी निराकार का साकार रूप। किन्तु ये जन्म प्रकृति के मनुष्यों के सदृश होते हुए भी नहीं है।

द्वितीय स्वर : तो क्या ये प्रकृति को अधीन करके योग माया से प्रकट होने का प्रमाण है?

प्रथम स्वर : प्रमाण ही है, क्योंकि इसके पीछे कारण है, हमारा आपका भी जन्म हुआ है, परन्तु हम इसका कारण नहीं जानते।

द्वितीय स्वर : वो कारण क्या है? क्या कोई विशेष प्रयोजन था? जो निर्गुण को सगुण रूप में प्रकट होना पड़ा।

प्रथम स्वर : निश्चित प्रयोजन या जिसे स्वयं योगेश्वर कृष्ण ने स्पष्ट किया।

श्लोक : **यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे॥

अन्य स्वर : हे भारत, जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ। साधु पुरुषों के उद्धार और दूषित कर्म करनेवालों के नाश के लिए धर्म स्थापना के प्रयोजन से मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ। *(संगीत। ध्वनि प्रभाव।)*

प्रथम स्वर : और इस तरह अपनी ही रची लीला से बालक कृष्ण ने कारागार में अपनी आँखें खोलीं, पहरेदार सो गए।

द्वितीय स्वर : वसुदेव रातों-रात बालक कृष्ण को लेकर यमुना पार कर गोकुल आ गए।

प्रथम स्वर : जहाँ प्रतीक्षारत थी माँ यशोदा, उसकी चिरपोषित अभिलाषा पूरी हुई, इसकी गोद हरी हो गई।

द्वितीय स्वर : नन्द को पुत्र मिला, उनके हर्ष का पारावार नहीं।

प्रथम स्वर : पुत्र जन्म के अवसर पर आमोद-प्रमोद, हर्ष उल्लास का, वातावरण छा गया।

द्वितीय स्वर : ढोल-मंजीरे बज उठे हैं, ललनाएँ सोहर गाती हैं, बधाई का स्वर गूँज उठा है।

प्रथम स्वर : गरीबों और याचकों के लिए नन्दराज ने रत्न लुटाए।

द्वितीय स्वर : पुत्र जन्म की कोई भी रीति-नीति छूटी नहीं है।

प्रथम स्वर : चन्दन की लकड़ी का रत्नजड़ित पालना यशोदा के पास पहुँचाया गया है।

प्रथम स्वर : पालने में शिशु को पौढ़ाकर, अपलक निहारती हैं यशोदा, हल्के-हल्के झोंके देती हैं।

द्वितीय स्वर : कौन झूल रहा है, झुला कौन रहा है, इतनी सुध कहाँ है?

गीत : **जसोदा हरि पालने झुलावै, जसोदा हरि पालने झुलावै।**
मन झूलत लख लाल मधुर छवि, निरख-निरख बल जावे।
को झूलत अरू कौन झुलावत, महामोद सरसावें।
जसोदा हरि पालने सुलावे....

इक टक चकित चेत चित झूलत, मन मोहित सुख पावे।
श्याम रूप सुचि रूचिर कसौटी, चित कंचन हि कसावें।
जसोदा हरि पालने झुलावै.....

मधुर हास लालन को लखकर, भूल अपुन को जावे।
ढगिसि रहि कृष्ण कवी जसोदा, परा प्रेम दरसावें।
जसोदा हरि पालने झूलावै.... (पं. कृष्ण कवि)

प्रथम स्वर : माँ के जीवन का सच्चा सुख तब झलकता है जब उसका कुँवर कन्हैया, उसकी गोद में किलकारी भरता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : माँ यशोदा की तीव्र अभिलाषा है, कितने शीघ्र उसका कन्हैया बोलने लगे, दौड़ने लगे।

प्रथम स्वर : अभी तक वो अपने कृष्ण कन्हैया के वास्तविक रूप को जानती ही कहाँ है।

द्वितीय स्वर : पहली बार उसे कृष्ण के वास्तविक रूप का दर्शन तब हुआ जब उनके मुख से मिट्टी उगलवाई।

प्रथम स्वर : नाराज है यशोदा, कहती है, 'मोहन काहे न उगली माटी'

द्वितीय स्वर : मोहन और जोर से मुख बन्द कर लेते हैं।

प्रथम स्वर : माँ यशोदा हाथ में साँटी उठाती हैं और मोहन का मुख खुल जाता है।

(संगीत प्रभाव)

प्रथम स्वर : अखिल ब्रह्माण्ड, नदी, वन, पर्वत, स्वर्ग, पाताल, धरती।

द्वितीय स्वर : साँटी छूट जाती है हाथ से, माँ यशोदा का मुख खुला का खुला रह जाता है, बालक की भुजा छोड़ देती है, जान जाती हैं मेरा कन्हैया कौन है।

(संगीत प्रभाव)

प्रथम स्वर : माँ यशोदा बौरा जाती हैं क्या ये बालक भगवान है?

द्वितीय स्वर : नित्य स्वरूप, सच्चिदानन्द यही है? परम भक्ति को प्रदान करनेवाले पुरुषोत्तम यही है?

प्रथम स्वर : उत्तर सकारात्मक ही है, कारण, व्याख्याकारों ने स्पष्ट किया है।

श्लोक : ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसः श्रियः
ज्ञान वैराग्य योर्युक्तः षऽणामूभक्तिम् जनः।

द्वितीय स्वर : सम्पूर्ण ऐश्वर्य, अपूर्व बलवीर्य, अक्षय यश, अद्भुत सौन्दर्य, अनन्त ज्ञान और पूर्ण वैराग्य ये 6 गुण जिसमें विद्यमान हैं और सतत् विद्यमान है और जो इनका अधिष्ठाता है, वो भगवान् है।

प्रथम स्वर : और ये सभी गुण श्री कृष्ण में सतत् रूप से प्रवहमान हैं।

द्वितीय स्वर : वे गोपियों के कृष्ण हैं और योगियों के भी कृष्ण हैं।

प्रथम स्वर : वे रसरूप मुरली मनोहर भी हैं और विश्वरूप परमेश्वर भी।

द्वितीय स्वर : योग इतना कि गोवर्धन को धारण करते हैं, मात्र एक अंगुली पर।

प्रथम स्वर : और श्रेय देते हैं ग्वालों को कि सबने लकुरी लगाकर सहारा दिया।

द्वितीय स्वर : विराट दावानल को मुट्ठी में भर लेते हैं और पी जाते हैं।

प्रथम स्वर : श्रीकृष्ण अपनी इस क्षमता को अनदेखा रखना चाहते हैं।

द्वितीय स्वर : वे अपने ऐश्वर्य को बार-बार झुठलाते हैं, इसीलिए कि वे सहज मानवीय प्रेम का आस्वाद कम नहीं करना चाहते।

प्रथम स्वर : श्रीकृष्ण की शक्ति तो ब्रजवासियों का अपार प्यार है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : लोक में रमने से अधिक गहरा होता है लोक से रमना।

प्रथम स्वर : लोक मंगल से अधिक गहरा है लोकरंजन, यह रंजन ही लोक को लोकातीत बना देता है।

द्वितीय स्वर : यह सनातन वृन्दावन रचता है, और उसमें सनातन विहार रच देता है।

(कोयल व अन्य पक्षियों का स्वर–सुखद संगीत के साथ पार्श्व में कॉमेन्ट्री के साथ।)

प्रथम स्वर : फिर तो पनघट पर, यमुना तट पर, वंशीवट में प्रेम का रस निरन्तर बरसता ही रहता है।

द्वितीय स्वर : झूले पड़ जाते हैं डाल-डाल पर श्रीकृष्ण छुपाए नहीं छुपते।

प्रथम स्वर : और न छुपता है, श्रीकृष्ण के लिए उमड़ता प्यार।

द्वितीय स्वर : झूलने आ जाती है राधा, देह मन हो जाता है, और मन हो जाता है मन मोहन।

प्रथम स्वर : श्रीकृष्ण बंसी फूँक देते हैं गोपांगनाओं का प्यार प्रकाशित हो उठता है।

द्वितीय स्वर : जब देह में श्रीकृष्ण भरते हैं। सिन्धु के लिए सरिता तट तोड़ देती है।

पद :

हिंडोरन हरि संग झूलन आई
पंचरंग बरन पाट की डाणि
अतिहिं सोज बनाई....
हिंडोरन....
झूलत जुवती नन्द लाल संग
एक बसे एक दाई
हिंडोरन हरि संग झूलन आई....
सूरदास प्रभु मोहन नागर
आपुनि झूल झुलाई....
हिंडोरन हरि संग झूलन आई (सूरदास)

प्रथम स्वर : अपने जीवन में श्रीकृष्ण सतत् दो विरोधी धारणाओं के साथ चलते हैं।

द्वितीय स्वर : वे आदर्श प्रेमी भी हैं और निष्काम कर्मयोगी भी।

प्रथम स्वर : उनका जीवन सतत् संघर्षमय है परन्तु इस संघर्ष में कहीं राग या द्वेष उत्पन्न नहीं होता।

द्वितीय स्वर : उनकी मुरली के स्वर का अर्थ है, निष्काम में कामना का उदय हो जाना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : कर्म की आवश्यकता न होते हुए भी लोक कल्याण के लिए कर्म में प्रवृत्त हो जाना।

द्वितीय स्वर : कुरुक्षेत्र में युद्ध से अर्जुन का पलायन, कर्महीनता की स्थिति थी।

प्रथम स्वर : श्रीकृष्ण के लिए सबसे सरल था कि वे अर्जुन की बात से सहमत हो जाते।

द्वितीय स्वर : किन्तु श्री कृष्ण अर्जुन के सभी सन्देहों का समाधान करते हैं और उसे विश्वास दिलाते हैं कि युद्ध से विमुख हो जाना जीवन से विमुख हो जाने के समान है।

प्रथम स्वर : योगीराज कृष्ण के सामने नाना शंकाएँ, विविध जिज्ञासाएँ अर्जुन ने व्यक्त की थीं। उसने पूछा था– *(परिवर्तन संगीत। बाँसुरी।)*

अर्जुन : हे जनार्दन जिसे आप सर्वश्रेष्ठ योगी मानते हैं वैसा मैं भी बन सकता हूँ क्या?

श्रीकृष्ण : हे पार्थ तुम मुझमें ही आसक्त मनवाले होकर और मेरा ही आश्रय लेकर निःसन्देह मेरे समग्र रूप को जान जाओगे। उस समग्र रूप को जानने के लिए मैं तुम्हें विज्ञान सहित ज्ञान सम्पूर्णता से बताऊँगा, जिसे जानकर फिर तुम्हारे लिए इस मनुष्य लोक में कुछ भी जानना शेष नहीं रहेगा।

अर्जुन : जब ऐसी बात है, तब फिर सब मनुष्य आपके समग्र रूप को क्यों नहीं जान लेते?

श्रीकृष्ण : हजारों में से कोई एक मनुष्य अपने कल्याण के लिए यत्न करता है उन यत्न करनेवाले साधकों में कोई एक ही मेरे समग्र रूप को तत्व से जानता है।

अर्जुन : आपको न जानने में मुख्य कारण क्या है?

श्रीकृष्ण : हे भरतवंशी मुझे न जानने में मुख्य कारण है राग और द्वेष से उत्पन्न होनेवाला द्वन्द्वमोह। इसी द्वन्द्वमोह से मोहित सम्पूर्ण प्राणी संसार में जन्म-मरण को प्राप्त होते रहते हैं।

(परिवर्तन संगीत। बाँसुरी।)

प्रथम स्वर : अनन्त है श्रीकृष्ण का चरित्र, अगाध है उनका गीतोपदेश। एक धर्मग्रन्थ के रूप में भगवद्गीता व्यक्ति की इच्छा-शक्ति को पूरी स्वतन्त्रता प्रदान करती है।

प्रथम स्वर : साथ ही हर स्वेच्छाचारी कर्म को वर्जित करती है। गीता जीवन का सत्य उद्घाटित करती है, वो जीवन का अध्याय है।

द्वितीय स्वर : जो पाठकों या साधकों के मानसिक क्षितिज को और अधिक व्यापक कर सकता है।

प्रथम स्वर : इसके अध्ययन के बाद कोई भी रूढ़िवादी और विज्ञान विरोधी धर्म के सीमित सांकेतिक चौखटों में बन्द होकर नहीं रहना चाहेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : गीता में स्वयं श्रीकृष्ण ने जीवन और जगत् का सारतत्व सारे विश्व के नागरिकों के लिए प्रस्तुत किया है।

प्रथम स्वर : मात्र भावना का आवेग या कल्पना की उड़ान किसी चरित्र या ग्रन्थ को कालजयी नहीं कर सकती।

द्वितीय स्वर : श्रीकृष्ण काल से परे है, काल उनसे ही उपजता है।

प्रथम स्वर : भारतीय मानस में लौकिक अलौकिक के बीच कृष्ण ही है।

द्वितीय स्वर : वे सबके हैं, इसीलिए विलक्षण हैं, और इसीलिए मोहक हैं बिसारे नहीं बिसरते।

प्रथम स्वर : वसुदेव देवकीनन्दन घर-घर के नन्दन हैं, हर माँ का लाल उसकी गोद में खेलता बालकृष्ण है।

द्वितीय स्वर : यदि ऐसा न हो तो संसार असहनीय हो जाए, संसार को जीवित जगत बनाने में यही बालरूप सहायक है।

गीत : **वसुदेव देवकी नन्दना, हे गोप गोपी रंजना।**
हे दुष्ट दानव मर्दना, जय-जय जयाधि दयाघना।
वसुदेव देवकी नन्दना....
हे गोप गोपी रंजना....
हे अरूपा सगुन रूपा, अनन्त वेषा श्रीनिवासा।
उदार कीर्ति प्रताप ज्योति, संत वरदा श्रीधरा॥
वसुदेव देवकी नन्दना
हे गोप गोपी रंजना....
जग जन जीव जनार्दना, बटु रूपधारिनारायणा।
महिमामया निगमागमा, हे माधवा मधु सूदना।
वसुदेव....
हे योगयोग योगेश्वरा, हे मेघ श्याम मयूरेश्वरा।
रूक्मणि वरा शारंगधरा, हे ब्रह्मपूर्ण परमेश्वरा॥
वसुदेव.....

(डॉ. देवधर)

(मंद होते गीत के स्वर से समाप्ति।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोहन से महात्मा

सार-संक्षेप

2 अक्तूबर, महात्मा गांधी का जन्मदिवस। ये दिन भारत में राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन अर्चना के अगणित स्वर मिलकर विविध रूप में इस युग के महामानव की वन्दना करते हैं।

राष्ट्र को उनकी देन मात्र स्वाधीनता ही नहीं है बल्कि भारतीय और विश्व समुदाय पर उनका ऐसा व्यापक प्रभाव है जो आज भी अक्षुण्ण है।

प्रस्तुत रूपक गांधीवाद के दार्शनिक और व्यवहारिक दोनों पक्ष यानी--जीवन और दर्शन, विचार और कर्म को रेखांकित करता है।

संगीत प्रभाव के बीच पंडित नेहरू के भाषण का अंश– (यथार्थ स्वर)

''मुमकिन है कि हमारी आवाज कमजोर हो। लेकिन जिस पैगाम को हम इस आवाज से कहते हैं, वो कोई कमजोर सन्देश नहीं है। क्योंकि उसके पीछे सच्चाई की ताकत है और इसीलिए मुझे कोई शक नहीं कि आखिर में उस पैगाम की जीत होगी। आज इस खयाल को और इस प्रतिज्ञा को लेकर हम अपने बड़े नेता, अपने प्यारे नेता की याद करें। हालांकि वो चले गए, हम जानते हैं कि अब भी वो हमें घेरे हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि हम उनके काबिल होंगे। उनके और उनके सन्देश के और इस भारत के। हमारा प्यारा वतन और मातृभूमि इसकी खिदमत में हमने अपने को इतने बरसों से सौंपा है।''

प्रथम स्वर : ये आवाज है पं. जवाहर लाल नेहरू की।

द्वितीय स्वर : इस आवाज को भला कौन नहीं पहचानता? लेकिन वे किसके पैगाम की बात कर रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : किस बड़े नेता के बारे में कहा है, उन्होंने ये सब।

द्वितीय स्वर : कौन चला गया? किसके पास थी सच्चाई की ताकत? कौन था वो, जो आज भी हमें घेरे हुए है?

प्रथम स्वर : इन सब सवालों का जवाब क्या है।

द्वितीय स्वर : जवाब है, जवाब है, एक ऐसी शख्सियत—एक ऐसा व्यक्तित्व, जो सहिष्णुता, त्याग, संयम और सादगी की मूर्ति है।

प्रथम स्वर : जो विश्वासों का विश्वास है, समस्त मानव जगत की आस है।

द्वितीय स्वर : विश्व बन्धुत्व का खुला आकाश है—जाति, नीति और धर्म का जीवन प्रकाश है।

प्रथम स्वर : असहाय और गरीब तबके की आस है, और है, सत्य, अहिंसा और नैतिकता का चरम विकास यानि मोहनदास करमचन्द गांधी।

सस्वर पाठ (गायन) : मोहन से तुम हुए महात्मा,
जग में अमर कहानी है।
वंदनीय हे बापू तेरी,
गिरा अमर कल्याणी है॥

प्रथम स्वर : 2 अक्तूबर 1869 को मोहनदास ने भारत-भू पर जन्म लिया।

द्वितीय स्वर : और देखते ही देखते वे 'व्यक्ति' से संस्था होते चले गए। मोहन से महात्मा स्वीकार होते गए।

प्रथम स्वर : सबको सुखी और सम्पन्न बनाने की दिशा में वे सबसे अधिक क्रियाशील हैं।

द्वितीय स्वर : वे हमेशा सम्बन्धों की मधुरता और सद्भावना के पक्षधर थे।

प्रथम स्वर : सामाजिक अन्याय के विरोध में उन्होंने तीव्रता से अपनी करुणा भरी आवाज उठाई।

द्वितीय स्वर : गांधीजी की सबसे बड़ी विशेषता है कि—जो सुधार वो दूसरों को सिखाते हैं, उन सुधारों की कीमत पहले खुद चुकाते हैं।

प्रथम स्वर : एक अवसर पर आचार्य विनोबा भावे ने कहा था— (यथार्थ स्वर

''महात्मा गांधी, एक व्यक्ति नहीं। वो अगर व्यक्ति होते तो इतने निर्मल निश्चल पुरुष थे। बड़ा हमारा भाग्य के हमने अपनी आँखों से उनको देखा। उनके चरणों में कुछ काम करते। वो व्यक्ति नहीं थे। सारे समाज के पाप का बोझ सिर पर ढोने वाले पुरुष थे। और आज तक खिस्ती समाज कहता है कि ईसा मसीह ने दुनिया के....। खैर इस प्रकार की भाषा हम दूसरे किसी पुरुष के लिए बोलें, शायद उचित नहीं माना जाएगा। क्योंकि ईसा मसीह तो ईसा मसीह ही थे। आजकल हमारे लिए वो देवता हो गए हैं। इसीलिए उनके साथ किसी दूसरे पुरुष की तुलना मैं अपने मन में भी नहीं करना चाहता। लेकिन इतना कहने में कोई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोष नहीं होगा, कि जिस तरह दुनिया के पाप की जिम्मेवारी ईसा मसीह महसूस करते थे, उसी तरह गांधीजी संबके पापों की जिम्मेवारी महसूस करते थे।''

प्रथम स्वर : उनके विचार, सिद्धान्त और कार्य एक वाद के रूप में स्थापित हुए।

द्वितीय स्वर : सिर्फ भारत ही नहीं, भारत से बाहर समूचे विश्व में लोग उनसे प्रभावित हुए।

प्रथम स्वर : उनके जीवन की छाप, लोगों के खान-पान, रहन-सहन, भाव, विचार और भाषाशैली पर उभरी।

द्वितीय स्वर : इतना ही नहीं, काव्य और कला, दर्शन और धर्म व्यवहार और कर्म गांधी से प्रभावित हुए।

प्रथम स्वर : पंडित नेहरू ने अनुभव से उपजे इस सत्य को अपने शब्दों में व्यक्त किया– (यथार्थ स्वर)

''जब जब पहले मैं हिन्दुस्तान से बाहर गया था तो लोग मुझसे बहुत कुछ सवाल करते थे–हिन्दुस्तान के और मैं आजादी से उनका जवाब देता था, कुछ शान से जवाब देता था। हमेशा सवाल में और जवाब में एक बड़ा हिस्सा गांधीजी का होता था और दुनिया के सामने हिन्दुस्तान, एक गांधी का मुल्क समझा जाता। गांधीजी का नाम घर-घर, गरीब-अमीर हर एक के यहाँ पहुँचा था। चाहे उसे ठीक-ठीक ये भी न मालूम हो कि नक्शे पर हिन्दुस्तान कहाँ है। वाकिया ये है कि हिन्दुस्तान की इज्जत अगर हम पुरानी बातों को छोड़ दें यानि पुरानी दौलत जो हमारी संस्कृति और सभ्यता की है, जिसमें दुनिया के समझदार लोग हिन्दुस्तान की बड़ी कदर बहुत दिनों से करते हैं। अगर उस बात को हम छोड़ दें तो हिन्दुस्तान की इज्जत हुई है दुनिया में और आजकल की पेचीदा दुनिया में तो गांधीजी के काम से और जो उन्होंने दुनिया को सन्देश हिन्दुस्तान के जरिए से दिया, उसी दौलत पर खजाने पर हम रहते आए हैं।''

प्रथम स्वर : गांधीजी ने चरखे को अहिंसा के प्रतीक के रूप में स्वीकार कर भारत के ग्राम्य जीवन की महत्ता को स्वीकार किया।

द्वितीय स्वर : और प्राचीन ग्रामोद्योगों का मशीनों के वर्तमान युग में भी उज्ज्वल किया।

प्रथम स्वर : सन् 1930 में अंग्रेज सत्ता ने एक एवार्ड द्वारा लाखों हरिजनों को समाज से अलग कर दिया, तो गांधी की आत्मा कराह उठी।

द्वितीय स्वर : उन्होंने 30 अप्रैल 1930 को 21 दिन के उपवास की घोषणा की।

प्रथम स्वर : और 6 दिन के उपवास के अल्प समय में ही अंग्रेज सत्ता को हरिजन एवार्ड वापस लेना पड़ा।

द्वितीय स्वर : भारत में उपेक्षित और पददलित समाज को गांधीजी ने 'हरिजन' कह के पुकारा। हरिजन सेवासंघ की स्थापना की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : अछूतोद्धार कार्यक्रम शुरू किए। स्वयं हरिजनों की बस्ती में रहने गए।

द्वितीय स्वर : उनके इस कार्य से समाज की धारणा बदली, घृणा, प्रेम में परिवर्तित हुई।

प्रथम स्वर : कुएँ का पानी और मन्दिर के पट खुले, सबके लिए। 'निषेध'–प्रवेश में तब्दील हुआ।

द्वितीय स्वर : आज गांधी के आदर्शों पर चलना एक जोखिम भरा काम समझा जाता है।

प्रथम स्वर : एक अवसर पर, गांधी विचार और दर्शन पर बोलते हुए–स्वतन्त्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल सी. राजगोपालचारी ने कहा था– (यथार्थ स्वर)

"We should cultivate a ruin selfish and detached attitude even when we are most busily engaged in material activities."

हिन्दी अनुवाद–सुपर-इम्पोज–

अन्य स्वर : हम भौतिकवादी क्रियाकलापों में व्यस्त रहते हैं। गांधी के विचार में विश्व में रह रहा हर प्राणी एक पवित्र आत्मा है। वे हमेशा प्रार्थना पर जोर देते हैं, उनका विचार लिप्सा, क्रोध और व्यक्तिगत स्वार्थ से परे है। समाज के कल्याण के लिए, हर आवश्यक कार्य को, वे ईश्वरीय कार्य मानते हैं और अपने प्रत्येक कार्य के परिणाम को ईश्वर पर छोड़ते हैं।

"The good and bravo man does not lose heart when he faces difficulties and that is Geeta teaching."

प्रथम स्वर : गांधीजी में अद्भुत नेतृत्व शक्ति थी।

द्वितीय स्वर : उन्होंने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतृत्व किया।

प्रथम स्वर : सविनय अवज्ञा आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, रॉलेट एक्ट, नमक कानून, दांडी यात्रा–

द्वितीय स्वर : ये सब राष्ट्रीय आन्दोलन में मील का पत्थर साबित हुए।

प्रथम स्वर : गांधीजी के व्यक्तित्व में एक जादुई आकर्षण था।

द्वितीय स्वर : इसी कारण राष्ट्र के अनेक बुद्धिजीवी, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, धार्मिक सन्त सब एक साथ–तन मन धन से राष्ट्र कार्य में सन्नद्ध हो, मन्त्रमुग्ध से गांधीजी को समर्पित हुए–

सस्वर पाठ (गायन) : **हे मानवता के अग्रदूत, हे नीतिधर्म के अनुगामी,**
हे नम्र, उग्रपशुता ढक दी, हे विना शस्त्र के सेनानी।
हे जनभारत के निर्माता, हे नए लक्ष्य के अभियानी,
करता है राष्ट्र प्रणाम तुम्हें, स्वीकार करो हे बलिदानी॥

प्रथम स्वर : सत्य, अहिंसा और सादगी गांधी के जीवन की त्रिवेणी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : इन गुणों का संगम थी उनकी काया, और इस काया के लिए उन्होंने सम्पूर्ण जीवन एक लंगोटी में बिताया।

प्रथम स्वर : रेल के तीसरे दर्जे के डिब्बे में यात्रा की। वचन और कर्म में सादगी और एकरूपता बरती।

द्वितीय स्वर : वचन और कर्म की यही एकरूपता गांधीदर्शन के रहस्य का भाष्य है।

प्रथम स्वर : भारत में राष्ट्रीय एकता का स्वरूप सर्वधर्म समभाव पर टिका है—

द्वितीय स्वर : यही व्यक्ति और राष्ट्र की उन्नति का सोपान है।

प्रथम स्वर : जिस स्वतन्त्रता को पाने के लिए सबने एक साथ मिलकर संघर्ष किया।

द्वितीय स्वर : अब वही संघर्ष आपस में है।

प्रथम स्वर : जिस साम्प्रदायिक समन्वय के लिए हिन्दू, मुस्लिम एकता के लिए—

द्वितीय स्वर : महात्मा गांधी ने अनेक बार उपवास किए—

प्रथम स्वर : वही साम्प्रदायिकता और जातिवाद, भारतीय राजनीति का अस्त्र बन चुके हैं—

द्वितीय स्वर : राजनीति का भस्मासुर भारतीय समाज को निगलने को तत्पर है।

प्रथम स्वर : स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद, महात्मा गांधी की 78वीं सालगिरह पर बोलते हुए—मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने कहा था— (यथार्थ स्वर)

''उनकी जिन्दगी के पूरे पचास बरस अमन, इन्सानियत, इन्सानी फर्जों की खिदमत में, प्रचार में बसर हुए हैं। ये हकीकत में गांधीजी की सालगिरह नहीं है। अमन और इंसानियत के मकसद की सालगिरह है। सवाल ये है कि हम अचानक क्या से क्या हो गए हैं और हम जा किस पथ पर रहे हैं। अभी कल की बात है कि हम अपने मुल्क की आजादी के लिए रो रहे थे। और तमाम दुनिया में हिन्दुस्तान के कौम जागृति का शोर मच गया। क्या-क्या नक्शे नहीं हैं जो हमने आजाद हिन्दुस्तान के नहीं बनाए और क्या-क्या ख्वाब नहीं हैं जो हमने कौमी जिन्दगी के नए उठानों में नहीं देखे। अगर हम चाहते हैं कि अपनी मुल्क की आजादी को इस खतरे से सलामत निकाल लिया जाए, तो हमें चाहिए कि पहले ठीक तौर पर समझ लें कि खतरा क्या है? और फिर उससे मुल्क को बचाने की तदबीर करें। खतरा जो आज हमें पेश आ गया है। वो मुल्क की बदनामी और बदनज्मी का खतरा है। आपको भी चाहिए कि इस काम में हुकूमत का हाथ बटाएँ और हर तरह की बदनज्मी को रोकें। आप अपना ये फर्ज उन पर अदा कर सकते हैं, उसकी तफसील में मैं नहीं जाऊँगा। अगर आप दिल की सच्ची लगन के साथ तैयार हो गए हैं तो आपको बतलाने की जरूरत नहीं कि आपको इस मुल्क की खिदमत को कैसे अंजाम देना चाहिए।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : वे हिन्दी को राष्ट्र की आत्मा मानते थे, उन्होंने दक्षिण में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा जैसी संस्थाओं की नींव डाली।

प्रथम स्वर : भारतीय भाषा और साहित्य पर गांधी का व्यापक प्रभाव पड़ा।

द्वितीय. स्वर : विदेशी लेखकों ने गांधी पर लिखकर अपने को धन्य माना।

प्रथम स्वर : साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित, ज्येष्ठ गांधीवादी विचारक, लेखक श्रीपाद जोशी उनके विषय में कहते हैं–

सुपर इम्पोज– (मराठी स्वर में)

''मेरे विचार से अपने देश में ऐसा अग्रणी नेता और कोई नहीं हुआ कि जिसके सम्बन्ध आम आदमी से हों। वे किसी को भूलते नहीं थे। दुनिया भर से उनके पास पत्र आते थे, वे सब पत्रों का उत्तर देते थे। गांधी के पीछे लोग दीवाने क्यों हुए, वे कोई जादूगर नहीं थे, लेकिन मनुष्य के अन्तःकरण को स्पर्श करने की क्षमता उनमें थी।''

प्रथम स्वर : सन् 1942 का आन्दोलन–करो या मरो–स्वाधीनता का निर्णायक आन्दोलन था।

द्वितीय स्वर : सत्य और अहिंसा इस आन्दोलन के प्रमुख अस्त्र थे। उनकी धारणा थी कि यदि सत्याग्रही हिंसक बनता है, तो वह दूध में जहर मिलाने के समान है।

प्रथम स्वर : उनकी मान्यता है कि असत्य को माँगना ही हिंसा है।

द्वितीय स्वर : इस विषय में वे कहते हैं– (यथार्थ स्वर)

''कितने लोग आज सत्याग्रह चला रहे हैं। वो समझ-बूझकर करें। अगर वो असत्य है, उसमें कुछ भी जबरदस्ती की जाती है तो उसको छोड़ें। छोड़ने से उनको अच्छा होगा। उनका काम में अच्छा होगा और उसमें उसका चैन भरा है। आज अगर वो याद रहे–असत्य है चीज जो माँगते हैं वो, वो हक भी उनको नहीं है और फिर से वो माँगना शुरू कर देते हैं, जिस चीज पर उनका हक नहीं है। उसको माँगने में वो कहें मैं तो अहिंसा का इस्तेमाल करता हूँ, जो माँगना वही हिंसा है। वो अहिंसा को क्या इस्तेमाल करेंगे। लेकिन यहाँ तो जो आदमी एक असत्य चीज माँगता है और पीछे गुमान करे कि मैं अहिंसा से वो कर लूँगा, वो कर नहीं सकता, जो कहे कि मैं कोशिश करना चाहता हूँ।''

प्रथम स्वर : बापू, जिन्होंने विश्व सत्ता के साथ अपने को एकाकार किया।

द्वितीय स्वर : वो ये मानते हैं कि बुद्धि की अपेक्षा प्रेम ही ईश्वर के मन्दिर का मार्ग दिखलाता है।

प्रथम स्वर : उनका धर्म भौगोलिक सीमाओं में नहीं बँधा। धर्म को लेकर शोर-गुल मचाने के पक्ष में भी वे कभी नहीं रहे।

द्वितीय स्वर : वे सभ्यता के पक्षधर थे और संस्कारों के पोपक। वे शान्तिपूर्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझौतों के, अन्तिम क्षण तक के हिमायती थे। उनकी मान्यता है कि शराफत मनुष्यता का गहना है–

प्रथम स्वर : 6 दिसम्बर 1947 को अपने एक भाषण में उन्होंने कहा–(यथार्थ स्वर)

"आज हमारा मुँह तो काला हो जाता है। क्योंकि हमारा मुँह हमेशा सफेद रहा है, हाँ, अगर हम गुण्डागर्दी से ही अपनी आजादी ले लेते तो दूसरी बात थी। लेकिन हमने तो शराफत से अपनी आजादी ली ऐसा सारी दुनिया कहती है। लेकिन जब बाहर की दुनिया कहती है। सबके सब कहते हैं कि आपने जो आजादी ली है, जो आजादी मिली है वो शराफत से ली है तब मैं कहूँगा की जो शराफत से चीज मिली है, उस चीज को रखने के लिए भी हमें शरीफ होना चाहिए। शराफत से ली वो हम गुण्डाबाजी से थोड़ी ही रखने वाले हैं। कभी नहीं रखनेवाले, वो हम गँवा देनेवाले हैं, इसीलिए मैं कहता हूँ कि हम अभी इस तरह से अपना आचार रखें।"

प्रथम स्वर : ये अमर वाणी है बापू की, जो नैतिक मूल्यों के साथ, सामाजिक कर्मक्षेत्र में प्रवेश का आदेश देती है।

द्वितीय स्वर : लेकिन आज गांधी के आदर्शों को झुठलाया जा रहा है–राजनीति बन गई है ऐश्वर्य और सम्पन्नता की दासी।

प्रथम स्वर : और विशेष अवसर की वर्दी बन गई, खादी।

द्वितीय स्वर : गांधी का नाम राजनीति के लिए विघ्नहर्ता और मंगल का दाता है, भोली जनता को ठगने,

प्रथम स्वर : सम्पन्नता और सत्ता को भोगने का गुरुमन्त्र है....

(ध्वनिप्रभाव)

द्वितीय स्वर : मानवता के लिए सर्वस्व समर्पण का भाव प्रदान करती है, बापू की वाणी, त्याग ही उनकी प्राप्ति है।

प्रथम स्वर : शस्त्र के बिना धर्म युद्ध, शास्त्र के बिना शिक्षा और औषधी के बिना उपचार करनेवाले,

द्वितीय स्वर : इस महात्मा की मोहिनी वाणी, अमर है।

सस्वर पाठ (गायन) :

मोहन से तुम हुए महात्मा,
जग में अमर कहानी है।
वन्दनीय हे बापू तेरी,
गिरा अमर कल्याणी है।।

(मंद होते स्वर से समाप्ति।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके पदचिह्नों पर

(लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जन्म शताब्दी 2002 पर विशेष रूपक)

गायन : है जयप्रकाश वह नाम जिसे इतिहास समादर देता है।
बढ़कर जिसके पद चिह्नों को, उर पर अंकित कर लेता है।
वह सुनो भविष्य पुकार रहा, वह दलित देश का त्राता है।
स्वप्नों का दृष्टा जयप्रकाश भारत का भाग्य विधाता है।

प्रथम स्वर : गंगा और सरयू का दियारा,

द्वितीय स्वर : दियारा—यानि दो नदियों द्वारा छोड़ा गया वो भू-भाग, जो वर्षा ऋतु में नितान्त जलमग्न हो जाता है।

प्रथम स्वर : उसी छोटे गाँव सिताव दियारा के कायस्थ टोले में, बाबू हरसू दयाल और फूलरानी के घर जन्मा एक बालक।

(संगीत प्रभाव)

प्रथम स्वर : विजयादशमी का दिन तारीख 11 अक्टूबर सन् 1902,

द्वितीय स्वर : बाबा देवकी बाबू ने, अपने घर के इस चौथे चन्द्र को देखा तो फूले न समाये।

प्रथम स्वर : किन्तु जब इस सामान्य से बालक के 4 वर्ष तक दाँत न निकले और बोल भी न फूटे,

द्वितीय स्वर : तब माँ ने इस बालक को बड़ल जी, यानी बौराजी कहकर पुकारा।

प्रथम स्वर : तब कौन जानता था, बहुत कम बोलने वाला, शर्मीला-सा ये बड़लाजी यानी जय प्रकाश, इतना बोलेगा कि सारा संसार मन्त्रमुग्ध होकर सुनेगा।

द्वितीय स्वर : सयानों की भाँति एक-एक शब्द सोचकर और तौलकर बोलते इस बालक को देख एक दिन पिता ने कहा—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्य स्वर : ''ई त बूढ़ लरिका हउअन''

प्रथम स्वर : पिता हरसू दयाल का ये ''बूढ़ा बालक'' देश की अँगड़ाई का, तरुणाई का प्रतीक बन गया।

अन्य स्वर : जय हो भारत के नए खड्ग, जय तरुण देश के सेनानी,
जय नई आग, जय नई ज्योति, जय नए लक्ष्य के अभियानी,
सेनानी करो प्रणाम अभय, भावी इतिहास तुम्हारा है,
ये नखत अमां के बुझते हैं, सारा आकाश तुम्हारा है॥
लौटे तुम रूपक बन, स्वदेश की आग भरी कुर्बानी का,
अब जय प्रकाश है नाम, देश की आतुर हठी जवानी का।

प्रथम स्वर : राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का ये हुंकार क्रान्तिकारी युगपुरुष जयप्रकाश के व्यक्तित्व का ही गर्जन है।

द्वितीय स्वर : स्वयं जयप्रकाश ने कवि दिनकर की 70वीं जयन्ती पर 24 नवम्बर 1977 को कृष्ण मेमोरियल हॉल पटना में आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए कहा था.... (यथार्थ स्वर)

''मैं मद्रास में था दिनकर जी मिलने आए थे और मुझे अपनी एक कविता सुनाई थी, किसी कारण से मैं उनकी कविता का एक प्रिय विषय बन गया था। बहुत कुछ उन्हें करना बाकी था, जिस भारत का स्वप्न उन्होंने देखा था, जिसके गीत गाए थे, जिन गीतों से एक पीढ़ी सारी भारत की प्रभावित हुई थी, हमारे बीच होते तो कुछ नए-तर्ज गीत सुनने को मिलते, स्वराज के बाद एक नया विहान होता।''

प्रथम स्वर : कितनी सरलता कैसी भावुकता है, एक जयप्रकाश के अन्दर के अनेक चित्र।

द्वितीय स्वर : तभी तो उनकी पत्नी प्रभावती से महात्मा गांधी ने कहा था—

अन्य स्वर : बेटी प्रभा ये जो तुम्हारा पति है ना? इसे सम्हाल कर रखना, मेरे बाद ये देश और दुनिया के बहुत काम आएगा।

प्रथम स्वर : बापू के कथन की सत्यता, साबित हुई।

द्वितीय स्वर : इतिहास साक्षी है—जयप्रकाश जी की धर्मपत्नी प्रभावती देवी अपने विवाह के समय से ही गाँधीजी के साथ रह रही थीं।

प्रथम स्वर : गांधी जी के आश्रम में रहते समय उन्होंने—बेटी प्रभावती से आजीवन ब्रह्मचारी रहने का संकल्प ले लिया था।

द्वितीय स्वर : जयप्रकाश जी जब अपनी पढ़ाई पूरी कर अमेरिका से लौटे, तो युवा जयप्रकाश का, पत्नी प्रभावती से साक्षात्कार हुआ।

—प्रभावती ने कहा.....

अन्य स्वर—''मैं तो सारे जीवन अब ब्रह्मचारिणी रहूँगी, तुम चाहो तो अपना विवाह कर सकते हो।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : जयप्रकाशजी ने संकल्प की पूर्णता की, उन्होंने कहा–

अन्य स्वर : ''प्रभा तुम देश के लिए ब्रह्मचर्य व्रत ले सकती हो, तो क्या मैं इतना दुर्बल हूँ। मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा और सहज रूप से अपने संकल्प पर टिका रहूँगा।''

प्रथम स्वर : कैसी आत्म-कैसा विचार-त्याग देश के लिए, संकल्प देश के लिए, संघर्षो का वरण देश के लिए, जीवन और मरण देश के लिए।

द्वितीय स्वर : जनवरी सन् 1921, महात्मा गाँधी का असहयोग और सत्याग्रह आन्दोलन भड़क रहा था।

प्रथम स्वर : नौजवानों में होड़ लग रही थी, कि कौन ज्यादा सहयोग दे।

द्वितीय स्वर : एक दिन पटना में मौलाना आजाद ने विशाल जनसभा को सम्बोधित किया।

प्रथम स्वर : इस भाषण ने जयप्रकाश जी के हृदय में हलचल पैदा कर दी।

द्वितीय स्वर : दूसरे दिन दृढ़ निश्चय के साथ विद्यालय छोड़ दिया।

प्रथम स्वर : लेकिन ससुर श्रीब्रजकिशोर की सलाह पर, राजेन्द्र बाबू की निगरानी में सदाकत आश्रम में चल रहे बिहार विद्यापीठ में चले गए।

द्वितीय स्वर : इंटर के बाद बी.एस-सी. हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ने से आपने मना कर दिया।

प्रथम स्वर : जयप्रकाश और प्रभावती जी इलाहाबाद आ गए।

द्वितीय स्वर : नेहरू परिवार के साथ तालमेल बढ़ा। उन दिनों जयप्रकाशजी के सुपुर्द एक बड़ी जिम्मेदारी थी–देशभर में घूमना और कांग्रेस संगठन को मजबूत करना।

प्रथम स्वर : 17, 18 मई 1934 को पटना में आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में समाजवादियों की राष्ट्रीय स्तर पर पहली मीटिंग हुई।

द्वितीय स्वर : फिर बम्बई में अक्टूबर सन् 1934 में, बाकायदा कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी कायम की गई। जयप्रकाश जी नई पार्टी के जनरल सेक्रेट्री नियुक्त हुए।

प्रथम स्वर : जयप्रकाश जी की निर्भीकता, क्रान्तिकारी भावना, मनुजता, पौरुष, सौजन्य और आकर्षण शक्ति पर सारा देश मन्त्रमुग्ध हो उठता।

द्वितीय स्वर : क्रान्तिकारी भावना से अनुप्राणित नवयुवक उन पर प्राण न्यौछावर करते।

प्रथम स्वर : 7 मार्च 1940 को जयप्रकाश जी को पटना में गिरफ्तार किया गया। इस गिरफ्तारी से देश में क्रोध की लहर दौड़ गई।

द्वितीय स्वर : इस गिरफ्तारी को दुर्भाग्यपूर्ण घटना कहते हुए 12 मार्च को महात्मा गांधी ने कहा–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्य स्वर : "वो कोई साधारण कार्यकर्ता नहीं, बहुत कुशल योद्धा है, समाजवाद के महान विशेषज्ञ हैं। उनकी कष्ट-सहिष्णुता अतुलनीय है।"

प्रथम स्वर : 9 नवम्बर 1942 को, दीपावली के दिन, हजारी बाग जेल में जयप्रकाश की आत्मा छटपटा रही थी।

द्वितीय स्वर : जेलर की ओर से दावत थी, नाचगाने का भी आयोजन हुआ।

प्रथम स्वर : अवसर का लाभ मिला–धोतियों की रस्सी बनाकर छः मिनट में पाँच मित्रों सहित जयप्रकाश जेल की दीवार लाँघ गए।

द्वितीय स्वर : ब्रिटिश सरकार ने जिन्दा या मुर्दा जयप्रकाश को पकड़ने के लिए दस हजार रुपये का इनाम घोषित किया।

प्रथम स्वर : एक दिन अंग्रेज सरकार को सुराग मिला, जयप्रकाश पकड़ लिए गए।

द्वितीय स्वर : अक्टूबर 1943 से यातनाएँ देने का दौर शुरू हुआ।

प्रथम स्वर : जनवरी 1945 में लाहौर के किले से उन्हें आगरा सेन्ट्रल जेल भेजा गया।

द्वितीय स्वर : लेकिन अगस्त क्रान्ति के योद्धा जयप्रकाश, समग्रक्रान्ति के स्वप्न तक अबाधगति से आगे बढ़ते रहे।

प्रथम स्वर : विभिन्न मजदूर संगठन और यूनियनों का नेतृत्व, यूरोप और मध्य एशिया में शान्ति संदेश लेकर यात्राएँ।

प्रथम स्वर : नागालैण्ड में शान्ति मिशन की स्थापना, राष्ट्रपति अय्यूब के निमन्त्रण पर पाकिस्तान की यात्रा।

द्वितीय स्वर : 19 अगस्त 1965 को मैगसेस से पुरस्कार प्राप्त करना, दलविहीन लोकतन्त्र का विचार प्रस्तुत करना।

प्रथम स्वर : नक्सलियों के बीच निर्भीक होकर पहुँचना 1972 में चम्बल के सैकड़ों डाकुओं की बन्दूकें शान्त कर उनसे आत्मसमर्पण करवाना और

द्वितीय स्वर : 5 जून, 1974 को सम्पूर्ण क्रान्ति की घोषणा करते जयप्रकाश ने कहा– (यथार्थ स्वर)

5 जून 1974 को छात्र संघर्ष समिति ने आम सभा बुलाई थी उसमें जब मैं बोल रहा था तो बोलते-बोलते सहज ही मेरे मुँह से ये शब्द निकले कि यह क्रान्ति जो शुरू हुई है वह आपकी जो दस-बारह माँगें हैं, केवल उनकी प्राप्ति के लिए नहीं हैं, यह तो एक सम्पूर्ण क्रान्ति की शुरुआत है। समाज में सम्पूर्ण परिवर्तन हो, सर्वांगीण परिवर्तन हो, ऐसी एक सम्पूर्ण क्रान्ति की कल्पना मैंने उस समय पेश की थी। पहली बार उसी समय इस शब्द का मैंने उच्चार किया था। (इतिहास में जो क्रान्तियाँ अब तक हुई हैं वो सभी मेरे ख्याल से राजनीतिक क्रान्तियाँ, इस्डस्ट्रियल रेव्ल्यूशन औद्योगिक क्रान्ति जिसको कहते हैं, उसे छोड़कर?) राजनीतिक क्रान्तियाँ जितनी हुई हैं वे हिंसा के माध्यम से हुई हैं और हम चाहते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं कि हमारे यहाँ भारत में गाँधीजी के रास्ते से एक सामाजिक, आर्थिक क्रान्ति अहिंसा के साधनों से हो, साधन और साध्य दोनों हैं। इसको कह सकते हैं यानि सम्पूर्ण क्रान्ति हुई तो एक नया समाज बनेगा जो हर दृष्टि से भिन्न होगा, नया होगा और उन्नत होगा।

प्रथम स्वर : आजाद भारत में भी जयप्रकाश तड़प उठे।

द्वितीय स्वर : उन्हें लगता देश की शिक्षा-पद्धति व्यर्थ है। इससे न हाथों को काम न पेट को रोटी।

प्रथम स्वर : देश के राजनैतिक दल, दलदल बनते जा रहे हैं। जन प्रतिनिधि जनता का प्रतिनिधि होता ही नहीं।

द्वितीय स्वर : धीरे-धीरे अनैतिक धनपतियों का प्रवेश राजनीति में बढ़ता जा रहा है।

प्रथम स्वर : अपराधी तत्वों का शिकंजा भारत की राजनीति पर कसता जा रहा है, जनता कराह रही है।

द्वितीय स्वर : लोकतन्त्र का पिरामिड उल्टा लटका है, इस तन्त्र में लोक नदारद है।

प्रथम स्वर : तब इस दुर्दशा का अन्त कैसे हो।

द्वितीय स्वर : आज भी अनुत्तरित इन प्रश्नों के लिए एक बार फिर 8 जून 1974 को पटना में एक मौन जुलूस निकाला गया।

प्रथम स्वर : अस्वस्थ होने के बाद भी इस बिहार आन्दोलन का जयप्रकाश ने नेतृत्व किया।

द्वितीय स्वर : बिहार आन्दोलन के समय छात्रनेता रहे श्री रघुपति जी कहते हैं– (यथार्थ स्वर)

''जब बिहार में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनी थी 67 में। उस समय मैं छात्र था, और जब बिहार जल रहा था तो उस समय जयप्रकाश जी ने अपने रचनात्मक कामों के द्वारा गाँवों-गाँवों में पानी देने का जो काम दिया तो एक विद्यार्थी होने के नाते, छात्र होने के नाते मेरे विचार पर उनका असर पड़ा और वैचारिक रूप से उसी समय जयप्रकाश जी मेरे मन में समा गए थे। 27 मार्च को जो हम लोगों ने जब सिविल नाफरमानी का प्रयोग किया उसमें जब हम लोगों की पिटाई हुई और हमको जेल में बन्द किया गया उसके बाद जो जे.पी. ने बयान दिया कि ये निहत्थे और निर्दोष छात्रों पर लाठियाँ चलती रहेंगी और मैं बैठा रहूँगा, ये नहीं हो सकता और जयप्रकाश जी आन्दोलन में आ गए।''

प्रथम स्वर : छात्रों और जनता की प्रार्थना पर इस आन्दोलन की बागडोर जयप्रकाश ने सम्हाली थी। अख्तर हुसैन की स्मृतियों में सारा दृश्य जस का जस उभर आता है– (यथार्थ स्वर)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जे.पी. का जो हमारा सबसे बड़ा आकर्षण रहा वह ये रहा कि वो व्यक्ति 42 से लगातार समाज के प्रति पार्टी और समाज इन दोनों से कैसे समाज का विकास होगा और देश की समृद्धि होगी? ये हमेशा सोचते रहे। उसका जो सबसे बड़ा असर था वह था गाँधी का। हाँ जे.पी. का ये ध्येय था कि सत्ता जो है, वो जनता के हाथ में जाए न कि कुछ लोगों के हाथ में रहे, ये सम्पूर्ण क्रान्ति का महत्त्वपूर्ण नारा हमारा था।"

प्रथम स्वर : देश में एक परिवर्तन चाहते थे जय प्रकाश, किन्तु हुआ क्या?

द्वितीय स्वर : आन्दोलन से जुड़े ठाकुर विजय प्रताप सिंह कहते हैं–(यथार्थ स्वर)

"आज सबसे बहुत दुःख ये है कि जो लोग हमारे मित्र सत्ता में गए उन लोगों ने जे.पी. की सारी बातों को भुला दिया और फिर समाज को कइयक भागों में, टुकड़े-टुकड़े में बाँट दिया है लोगों ने, आज समाज की स्थिति 74 की अपेक्षा बहुत बदतर है। लेकिन आज जयप्रकाश की आवश्यकता हमारे समझ में महसूस हो रही है कि आज जयप्रकाश को होना चाहिए था।"

प्रथम स्वर : जयप्रकाश को लगने लगा था कि देश वर्तमान-नैतिकता, सिद्धान्त और जीवनमूल्यों से दूर होता जा रहा है। इनके बिना वास्तविक लोकतन्त्र सम्भव नहीं।

द्वितीय स्वर : जयप्रकाश जी के विचारों की प्रासंगिकता की बात करते हुए बिहार में नेता प्रतिपक्ष–सुशील मोदी (यथार्थ स्वर)

"जयप्रकाश जी के साथ लगभग पाँच वर्षों तक बहुत नजदीक से काम करने का मुझे मौका मिला और इतना संवेदनशील व्यक्ति मैंने आज तक नहीं देखा है और आन्दोलन के दौरान कहीं कोई हिंसा की घटना हो जाए, कहीं कोई ऐसी चीज हो जाए तो इतने संवेदनशील, इतने भावुक थे कि उनकी आँखों से आँसू निकलने लग जाते थे। किसी की गरीबी को देखकर, किसी के दर्द को देखकर और एक दूसरी विशेषता उनमें ये थी कि अपने सहयोगी समर्थक भी यदि गलत काम करते हैं तो उनको भी कण्डेम करना, उनकी भी भर्त्सना करने से कभी पीछे नहीं हटते थे। समस्याएँ आज भी हैं और मैं समझता हूँ कि उनके विचार आज भी उतने ही सामयिक हैं। चूँकि उनकी एक ही बात वो कहते थे कि "शान्तिपूर्ण तरीके से ही समस्याओं का समाधान हो सकता है। हिंसा से किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। ऐसा ही उन्होंने नारा दिया था–

"हमला चाहे जैसा होगा हाथ हमारा नहीं उठेगा।"

और ये सामान्य बात नहीं थी कि बिहार के अन्दर पुलिस गोलियाँ चला रही है, लाठियाँ चला रही है जे.पी. पर लाठीचार्ज हुआ लेकिन फिर भी एक पत्थर भी छात्रों के द्वारा नहीं फेंका गया। ये जे.पी. की विशेषता थी क्योंकि उस समय में कुछ लोग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये समझते थे कि विशेषकर नक्सलवादी आन्दोलन से जुड़े लोग कि हिंसा से ही समाज में बदलाव आ सकता है और जे.पी. ने एक प्रयोग करके दिखला दिया बिहार आन्दोलन के द्वारा कि सत्ता का परिवर्तन या समाज में बदलाव बिना हिंसा के, शान्तिपूर्ण तरीकों से लाया जा सकता है, इस पर उनकी गहरी आस्था थी।

प्रथम स्वर : जयप्रकाश जी की चिन्ता थी कि यन्त्र ने लोगों के हाथ का काम छीन लिया है तो तन्त्र निरन्तर उनकी उपेक्षा कर रहा है।

द्वितीय स्वर : महिला चरखा समिति कदम कुँआ के केयरटेकर नवलजी की पीड़ा यही है। –(यथार्थ स्वर)

''जे.पी. ने जो दर्शन दिया, जे.पी. ने त्याग की बात कही लेकिन आज कौन राजनयिक त्याग की बात करते हैं? सब कुर्सी की ही बात करते हैं। 77 के चुनाव में जब इन्दिरा जी हार गईं तो बलछी काण्ड में वो हाथी पर चढ़कर गईं और जे. पी. से मिलने आईं तो पहले दोनों जन खूब रोये फिर जे.पी. ने आशीर्वाद दिया कि मैं भूतपूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी से नहीं बल्कि बेटी इन्दू से मिल रहा हूँ, प्रेस वालों ने क्रॉस किया कि आपको उन्होंने जेल में मार ही दिया और आपका आशीर्वाद है तो फिर जे.पी. बहुत झल्लाकर बोले–'बाबा तुम लोग क्यों दुखी हो मैं उसको क्या दे सकता आशीर्वाद के सिवाय।' इसी पर आचार्य रजनीश ने लिखा था कि जे.पी. राजनीतिक होते हुए सन्त हैं।''

प्रथम स्वर : जयप्रकाश की सेवा में समर्पित गुलाब जी उन क्षणों को याद करते भावुक हो जाते हैं–(यथार्थ स्वर)

''यहाँ बहुत सूना-सूना लगता है पुराने लोग भी चले गए धीरे-धीरे सब निकल गए, नए चेहरे भी हैं कुछ दिन के बाद तो हमको लगता है कि आप नवल जी न रहेंगे तो हमको कोई चीन्हने वाला भी नहीं रहेगा। बताना पड़ेगा कि हम उनके थे गुलाब। तब भी यहाँ रहने का मौका मिलेगा या नहीं कहना मुश्किल है।''

द्वितीय स्वर : महिला चरखा समिति के पटना के उपाध्यक्ष जयनारायण सहाय की यादों में जयप्रकाश–(यथार्थ स्वर)

''जयप्रकाश जी जो थे बहुत सुसंस्कृत व्यक्ति थे, संस्कृत ही नहीं बहुत विनम्र थे वो और भाषा, चालढाल, आचार-व्यवहार उसमें वो बहुत ही एकदम शिष्ट थे। वो कोई बनकर के नहीं वो उनका स्वभाव था।

विनोबा जी से हजार डिफ्रेन्स हुआ लेकिन उनको अपना गुरु उन्होंने माना विनोबा जी को, और एक शब्द विनोबा जी के विरोध में वो सुनने को तैयार नहीं थे, विचार में कहीं भेद हो गया, बाबा ने कहा तुम रन छोड़ बन जाओ, अब वो अर्जुन बन गए ये डिफ्रेन्स हुआ। ह, ह ह ह ह.....''

प्रथम स्वर : जयप्रकाश के जीवन की परिभाषाएँ भिन्न थीं, उन्होंने कहा था–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्य स्वर– सफलता और विफलता की,
परिभाषाएँ भिन्न हैं मेरी,
इतिहास से पूछो कि वर्षों पूर्व
बन नहीं सकता था, प्रधानमन्त्री क्या
किन्तु मुझ क्रान्तिशोधक के लिए
कुछ अन्य ही पथ मान्य थे उद्दिष्ट थे
पथ त्याग के, सेवा के, निर्माण के
पथ संघर्ष के सम्पूर्ण क्रान्ति के
जग जिन्हें कहता विफलता
थी शोध की वे मंजिलें

प्रथम स्वर : अनेकानेक भावों और प्रभावों से गुजरा है जयप्रकाश का जीवन।

द्वितीय स्वर : वे अमेरिका में पढ़े, पर प्रभावित हुए साम्यवाद से।

प्रथम स्वर : ट्राटस्की से प्रेरणा ली और एम.एन. राय के मित्र बने।

द्वितीय स्वर : शिष्य बने गांधी के, पर विचार साम्य हुआ लोहिया और आचार्य नरेन्द्र देव से।

प्रथम स्वर : आचार्य विनोबा भावे का साथ पा भूदानी बने और खान अब्दुल गफ्फार खान के साथ मन्त्रणा की।

गायन : कहते हैं उसको जयप्रकाश, जो नहीं मरण से डरता है,
ज्वाला को बुझते देख कुंड में कूद स्वयं जो पड़ता है।
हाँ जयप्रकाश है नाम देश की करवट का अँगड़ाई का,
भूचाल बवंडर के दावों से, भरी हुई तरुणाई का॥

प्रथम स्वर : जीवन के अन्तिम क्षणों में जयप्रकाश, महाभारत और गीता सुना करते थे। उन्होंने कहा–I too believe in God. मैं भी भगवान् को मानता हूँ। उन्हें भक्ति पद गाकर सुनाने वाली बहिन डॉ. शान्ति जैन कहती हैं–(यथार्थ स्वर)

"भागवत पुराण से एकदम से इतना कुछ उनको कण्ठस्थ था ताआज्जुब होता है संस्कृत के इतने श्लोक उनको कण्ठस्थ थे, श्रीमद्भगवद् गीता का दसवाँ, ग्यारहवाँ अध्याय उनको बहुत पसन्द था, और पूरी तरह से याद था और जब मैं पढ़ती थी, साथ में पढ़ते थे। हाँ एक अच्छा प्रसंग याद आ रहा है, दिन तो ठीक-ठीक याद नहीं है लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी जी इस समय पर राष्ट्र मन्त्री थे और वो किसी भाषण के सिलसिले में आए थे और सुबह में सात-साढ़े सात बजे जयप्रकाश जी के यहाँ थी और उनको मैं जयदेव का पद सुना रही थी, गीत-गोविन्द से। उसी समय वाजपेयीजी आ गए और मैंने बन्द कर दिया, तो कहने लगे कि 'मैंने क्या कसूर किया है मैं क्यों नहीं सुनूँगा' फिर वाजपेयी जी बैठे और उन्होंने गीत गोविन्दम् का पाठ सुना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–'प्रलय पयोधि चले......जय जगदीश हरे'।

संगीत के मामले में सूर को तो बहुत पसन्द करते थे, कबीर को बहुत पसन्द करते थे और थोड़े कुछ दिनों के बाद तो मैं उनको गालिब की गजलें भी सुनाने लगी थी।

और वे प्रेम से सुनते थे। गीत सुनते थे, गजलें सुनते थे। लोकगीत सुनते थे, विद्यापति सुनते थे लेकिन निर्गुण उनको ज्यादा पसन्द थे और पता नहीं एक अजीब तरह का कोइन्सिडेन्स जिसको कहूँ कि 6 अक्टूबर को मैंने उनको सुनाया था अन्तिम पद–'अमर पुर ले चलो हो सजना.....' और यही अन्तिम गीत बन गया।

गायन : अमरपुर ले चलो ओ सजना....

प्रथम स्वर : इतिहास सिर्फ तारीखों या आंकड़ों का ब्यौरा नहीं होता।

द्वितीय स्वर : दरअसल इतिहास हमारे समय का सच सामने रखता है।

प्रथम स्वर : मार्क्सवाद, समाजवाद और सर्वोदय के पड़ावों को तय करते हुए जयप्रकाश सम्पूर्ण क्रान्ति तक पहुँच गए।

द्वितीय स्वर : 1942 की अगस्त क्रान्ति के नायक जयप्रकाश, सन् 1974 के जनआन्दोलन में लोकनायक हो गए।

प्रथम स्वर : उनके जीवन की सुगन्ध आज भी जनमन में व्याप्त है।

द्वितीय स्वर : तभी तो उनके प्रति एक आश्वासन अभिव्यक्त है–

गायन : तुम चले गए लेकिन जे.पी. विश्वास करो
परिवर्तन का संघर्ष नहीं लेगा विराम
सम्पूर्ण क्रान्ति की लौ निष्कम्प जलेगी ही
इस ऋणी देश का ग्रहण करो शत-शत प्रणाम।

प्रथम स्वर : अतीत का आईना कभी धुँधला नहीं होता।

द्वितीय स्वर : वो हमें अपने वर्तमान को परखने की दृष्टि देता है और देता है भविष्य के लिए दिशा तय करने का विवेक।

प्रथम स्वर : वर्तमान सामने है, आमूल परिवर्तन का नारा लगाने वाले, लोग भी हैं, राजनेता भी।

द्वितीय स्वर : हजारों हजार छात्र, युवा, रंगकर्मी और पत्रकार हैं।

प्रथम स्वर : बुद्धिजीवी, कवि और लेखक हैं, हैं तो स्वप्नदृष्टा भी और तत्ववेत्ता भी।

द्वितीय स्वर : लेकिन इन सबमें कहाँ है जयप्रकाश का संघर्ष, देश के लिए उत्सर्ग?

प्रथम स्वर : तब कौन होगा–उनका अनुयायी जो चलेगा–सही अर्थों में उनके पदचिह्नों पर–

(सरोद के गम्भीर ध्वनि प्रभाव से समाप्त.....)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेजोमय पुरुषोत्तम राम

(विजयादशमी पर विशेष रूपक)

सस्वर पाठ। तानपुरे के साथ–

तेजोमय पुरुषोत्तम राम, अगणित गुण गण भूषितराम
धर्मस्थापन तत्पर राम, भक्ति परायण मुक्तिदराम
सर्वचराचर पालक राम, सर्व भयाभय वारक राम
शुद्ध ब्रह्म परात्पर राम, कालात्मक परमेश्वर राम,
रावण निधनम् प्रस्थितराम, वानर सैन्य समादृत राम
समस्त लोकाधारक राम, रघुपति राघव राजाराम।

परिवर्तन (संगीत)

प्रथम स्वर : आश्विन शुक्ल दशमी, अक्षय स्फूर्ति का एक दिवस।

द्वितीय स्वर : दैवी और दानवी शक्तियों में संघर्ष, सात्विक और तामसी प्रवृत्तियों का संघर्ष, सत्य से असत्य का संघर्ष।

प्रथम. स्वर : और इस संघर्ष में दैवी शक्तियों की विजय का दिवस–विजया दशमी।

द्वितीय स्वर : अत्याचारी रावण को पराजित कर न्याय और सदाचार की स्थापना करनेवाले पुरुषोत्तम श्रीराम की विजय का दिवस–विजयादशमी।

प्रथम स्वर : सर्व दिव्य गुणों की समवाय माँ दुर्गा द्वारा राक्षसी सामर्थ्य पर विजय का दिवस–विजया दशमी और.....

द्वितीय स्वर : शक्ति तथा भक्ति के सामंजस्य का दिवस–विजयादशमी।

परिवर्तन (संगीत)

द्वितीय स्वर : शक्ति, जिसकी उपासना स्वयं श्रीराम ने की, रावण से अन्तिम युद्ध के पूर्व एकासन पर बैठे श्रीराम पूजन में लीन.....(संतूर)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : आराधना शक्ति की, और शक्ति द्वारा परीक्षा भक्ति की। श्रीराम का 108 नीलकमल के अर्पण का संकल्प और अन्तिम नीलकमल हाथ न लगने पर उनका विकल्प–

अन्य स्वर : राम–कहती थीं माता मुझे सदा राजीव नयन
दो नीलकमल हैं शेष अभी यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन

प्रथम स्वर : श्रीराम बाण से एक नेत्र निकालने को तत्पर–और तभी ....*(संगीत)*

तीसरा स्वर : काँपा ब्रह्माण्ड हुआ देवी का त्वरित उदय,
साधु-साधु साधक धीर धर्मधन धन्य राम
कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वर वन्दन कर
होगी जय जोगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महा शक्ति राम के वदन में हुई लीन।

.....*संगीत (श्रीराम की शक्ति पूजा से)*

प्रथम स्वर : अत्याचारी और विधर्मी रावण पराजित हुआ, और राम अत्याचार, अनाचार, निराशा और हताशा से निरन्तर संघर्ष और अन्त में विजयी होनेवाले व्यक्ति का प्रतीक बन गए।

द्वितीय स्वर : रामकथा सूर्यवंशी राजा की गाथा नहीं बल्कि जन-जन की कहानी बनी।

प्रथम स्वर : और उनका यशगान मात्र राजा का गुण-गान न होकर लोक नायक पुरुषोत्तम राम का उदात्त चरित्र बना, जिसके साथ सारा जनमानस एकाकार हुआ।

द्वितीय स्वर : श्रीराम के जीवन संघर्ष, उदात्त चरित्र, धर्मोपदेश और राज्य स्थापना की पावन स्मृतियाँ लोकमानस में विस्तार पाती गईं।

प्रथम स्वर : न केवल भारत बल्कि भारत की सीमा के पार एशियाई देशों में भी रामकथा की व्यापक लोकप्रियता और परम्परा भारत की तरह ही समृद्ध और शाश्वत हुई है।

द्वितीय स्वर : बौद्ध जातक कथाओं में रामकथा का समावेश है। बौद्ध मन्दिरों की दीवारों पर रामकथा के चित्र अंकित हैं।

प्रथम स्वर : थाइलैण्ड, मलेशिया, इण्डोनेशिया, बर्मा और मॉरिशस आदि देशों का जनजीवन भी रामकथा से प्रभावित और स्पन्दित है।

द्वितीय स्वर : और कुछ एक देशों में तो भारत की तरह ही, रामलीला और रामकथा के प्रसंगों को विभिन्न नाट्य शैलियों में, प्रस्तुत किया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : मात्र भावुकता और श्रद्धा के बल पर कोई कथा या प्रसंग इतने व्यापक रूप में लोकप्रिय नहीं हो सकता।

द्वितीय स्वर : रामकथा शाश्वत 'मन्दाकिनी' है। जो शोक ताप निवारण कर जीवन देती रही है। राम का चरित्र हमारे जीवन का स्पन्दन है।

प्रथम स्वर : लोकनायक राम, व्यक्ति के उदात्त जीवनमूल्यों, श्रेष्ठतम गुणों, आदर्शों का मूर्तिमान रूप है।

द्वितीय स्वर : अपने जीवनकाल में प्रत्यक्ष आचरण से धर्म के सर्वमान्य रूप की स्थापना और उसे व्यवहार की वस्तु बनाना उनके जीवन का परम उद्देश्य बना।

प्रथम स्वर : सत्य और सदाचार तथा धर्म और नैतिकता से जिस सेतु को श्रीराम ने बाँधा, अपने बाद भी उसकी रक्षा होती रहे, इस प्रयोजन से भावी पीढ़ी से सविनय प्रार्थना की....

सस्वर : "भूयो-भूयो भाविनो भूमिपालाः नत्वा-नत्वा याचते रामचन्द्रः
सामान्योयं धर्मसेतुर्नराणाम्ः काले-काले पालनीयो भवद्भिः।"

राम : (हे भविष्य में होनेवाले भूमि पालो ये रामचन्द्र आप लोगों से अत्यन्त विनम्रतापूर्वक प्रणाम कर याचना करता है कि आप लोग मेरे द्वारा बाँधे हुए धर्म सेतु की रक्षा करते रहें।)

परिवर्तन (संगीत)

प्रथम स्वर : लोक कल्याण के लिए अवतरित प्रभु श्रीराम का विश्वास था कि समाज में जब सब लोग आत्मनियन्त्रण के साथ, अपने ही अनुशासन से, धर्म का पालन करेंगे तो एक सुखी और सम्पन्न समाज का निर्माण होगा।

द्वितीय स्वर : समाज में न्याय और अन्याय को लेकर होनेवाले संघर्षों की कमी नहीं है।

प्रथम स्वर : व्यक्तिगत समृद्धि, भौतिक सुखों की कामना, संघर्ष और हिंसा सामान्य ऐतिहासिक क्रम है। राम के युग में भी ऐसे ही संघर्ष मिलते हैं।

द्वितीय स्वर : अयोध्या का राज पद ही राम के वनवास का कारण बना।

प्रथम स्वर : बालि ने सुग्रीव को भगाकर किष्किन्धा पर अपना अधिकार कर लिया था।

द्वितीय स्वर : रावण ने अपने भाई कुबेर से इन्द्रासन पद के लिए ही युद्ध किया। रावण से अपमानित होकर ही विभीषण राम की शरण आया था।

प्रथम स्वर : राम-रावण युद्ध में सीता हरण और उसकी प्राप्ति प्रधान न होकर कारण मात्र है, प्रधान है अत्याचारी रावण का संहार, उसका नाश।

द्वितीय स्वर : राजवंश के राम के लिए यह सहज था कि सीता हरण होने पर अयोध्या की सज्जित सेना बुलाकर आक्रमण कर देते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : किन्तु सुविधामय जीवन और मार्ग के प्रति अनासक्त राम ने यह स्वीकार नहीं किया।

द्वितीय स्वर : वे चाहते तो किसी अन्य स्थान में वनवास की अवधि सुख और शान्ति से व्यतीत कर सकते थे।

प्रथम स्वर : परन्तु राम के सामने था अत्याचारों से त्रस्त जनजीवन, राक्षसों का आतंक और अपनी प्रतिज्ञा।

द्वितीय स्वर : पंचवटी और दण्डकारण्य में भटकते हुए उन्होंने चुनौतियों को स्वीकार किया।

प्रथम स्वर : उनका आचरण मात्र राजकुल का आचरण नहीं, लोक नायक का आचरण है। वे स्वयं विधान नहीं बनाते, बल्कि विधान का पालन करते हैं।

द्वितीय स्वर : प्रभुता और राजपद का उन्हें थोड़ा भी गर्व नहीं था। वे जनमत का आदर करते थे तभी तो प्रजाजनों को बुलाकर उन्होंने कहा था—

सस्वर : **सुनहुं सकल पुरजन मम बानी,**
कहऊ न कछु ममता उर आनी
नहि अनीति नहि कछु प्रभुताई
सुनहुं करहुं जो तुमहिं सुहाई
जो अनीति कछु भाखो भाई
तो मोहि वरजहु भय बिसराई

प्रथम स्वर : कितनी सरलता, कितनी विनयशीलता और कितनी निश्छलता है उनके कथन में।

द्वितीय स्वर : यही तो है राम के उदात्त चरित्र का रहस्य, जो मार्गदर्शन करता है।

प्रथम स्वर : राम ने तो प्रत्येक मनुष्य के जीवन चरित्र में भी धर्म के शासन और नैतिक आचरण की आवश्यकता पर बल दिया है।

द्वितीय स्वर : फिर भला राष्ट्र के जीवन में इनकी आवश्यकता क्यों न हो।

प्रथम स्वर : आज देश जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है उन विघटनकारी परिस्थितियों को सुधारने के लिए रामचरित के आलोक की बड़ी आवश्यकता है, उपयोगिता है।

द्वितीय स्वर : रामराज्य तो महात्मा गांधी का आदर्श स्वप्न ही था।

प्रथम स्वर : जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता को दूर करने के लिए शबरी के प्रति उनके व्यवहार का स्मरण मात्र ही पर्याप्त है।

द्वितीय स्वर : पिता की आज्ञा मानकर चौदह वर्ष का वनवास और भरत के स्नेह के लिए राजपद का त्याग पारिवारिक सम्बन्धों में आदर्श की स्थापना है।

प्रथम स्वर : अत्याचारी रावण से प्रभु राम के न्याय युद्ध का विचार अकारण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बढ़ रही विश्व युद्ध की सम्भावनाओं को समाप्त कर सकता है।

प्रथम स्वर : पुरुषोत्तम राम के चरित्र से प्राप्त प्रेरणाएँ चिन्तनधाराएँ और विचार न केवल एक व्यक्ति, बल्कि सम्पूर्ण जनसमाज के लिए आदर्श हो सकते हैं।

द्वितीय स्वर : इसीलिए उनकी कथा युग-युग से विचार और काव्य का विषय है।

प्रथम स्वर : राष्ट्रकवि स्वर्गीय श्री मैथिलीशरण गुप्त की संवेदना ने अभिव्यक्त किया था—

अन्य स्वर : राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है
कोई कवि बन जाए, सहज सम्भाव्य है

प्रथम स्वर : राम के साथ जनमानस एकाकार हो जाता है, उसे प्रतीत होता है कि राम उसकी अपनी बात कर रहे हैं।

द्वितीय स्वर : परिस्थितियों से राम नहीं वो स्वयं जूझ रहा है।

प्रथम स्वर : व्यक्ति की एकाग्रता समानधर्मिता उसे रामकथा से ऐसा जोड़ देती है, कि वो राममय हो उठता है।

द्वितीय स्वर : राम के चरित्र में दुःख के प्रति सहिष्णुता और मर्यादा की भावना चरम बिन्दु पर है।

प्रथम स्वर : और सम्भवतः यही कारण है कि निज के जीवन में दुःख के प्रति सहिष्णुता के लिए विख्यात, राम का राज्य, सर्वसुखदाता का आदर्श राज्य है।

द्वितीय स्वर : लौकिक दृष्टि से राम का चरित्र आपदाओं से घिरा है। संघर्षपूर्ण है लेकिन दूसरों के हितों के लिए वे साधक हैं, और पूर्ण सफल भी।

प्रथम स्वर : वाल्मीकि के राम कहते हैं :

राम : देव ने मुझ पर विपत्तियाँ डालीं और मैंने, मनुष्य ने, उन्हें जीता।

प्रथम स्वर : भवभूति के राम का कथन है—

राम : राम में चेतना—दुःख संवेदना झेलने के लिए ही है।

प्रथम स्वर : और निराला के राम भी अपने जीवन पर दृष्टिपात करते हुए यही कहते हैं—

राम : धिक जीवन को, जो सहता ही आया विरोध
धिक साधन जिसके लिए किया सदा ही शोध

प्रथम स्वर : पर तुलसी के राम की बात और है, तुलसी के राम परमब्रह्म हैं, जो मानव लीला कर रहे हैं, वास्तव में वे अनाथों के नाथ और पापपुंजहारी हैं, वे दीनबन्धु हैं और दीनानाथ हैं।

सस्वर गायन : तू दयालु, दीन हौं, तू दानी, हौं भिखारी
हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंजहारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोंसों
मो समान आरत नहीं आरति हरतोसों
ब्रह्म तू, हौं जीव हों, तू ठाकुर हौं चेरो
तात मात गुरु सखा तू सब विधिहितु मेरो
तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो भावै
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरन सरन पावै

प्रथम स्वर : तुलसी ने कलियुग का जो वर्णन किया है वो आज सर्वत्र दिखाई दे रहा है जहाँ दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से ग्रस्त व्यक्ति समाज और व्यवस्था हो।

राम स्वर : राम, रामराज्य के संस्थापक हैं।

प्रथम स्वर : ये कलियुग यथार्थ है, तो क्या रामराज्य स्वप्न?

द्वितीय स्वर : नहीं, रामराज्य स्वप्न नहीं है। राम कवि का कल्पनागत चरित्र नहीं है।

प्रथम स्वर : अब आवश्यकता है इन कवियों के राम की परिक्रमा करने की, उसी परिक्रमा में हमें अपने राम भी मिल जाएँगे।

द्वितीय स्वर : आवश्यकता है निरन्तर शोध यात्रा की, अपने से बाहर अपनी संकीर्णताओं से बाहर अपने सुरक्षा रथों से उतरकर राम की तरह काँटों, कुशों के बीच प्रकृति के साथ सुख पाते हुए सबके होकर, सबके साथ चलने की।

प्रथम स्वर : रामराज्य की स्थापना का ये सुखद स्वप्न महान स्वप्न है, युग का स्वप्न है। हर व्यक्ति अपने भीतर कहीं न कहीं राम और रामराज्य की सुखद कल्पना संजोए है।

प्रथम स्वर : लोकशक्ति जब संगठित होकर आत्मोत्सर्ग की भावना से अनुप्राणित हो जाती है, तो शोषण और विषमता के रावण रूपी मानव का विनाश हो जाता है।

द्वितीय स्वर : राम असहाय स्थिति में निरन्तर संघर्ष, ऊँचे मनोबल के साथ जूझने और अन्त में विजयी होनेवाले व्यक्ति का प्रतीक हैं।

प्रथम स्वर : अनन्त है, राम का चरित्र चिरन्तन दीप है वह, मार्गदर्शक है मानवता के लिए।

द्वितीय स्वर : राम जनमन में है, कण-कण में हैं सकल-जगत में जो व्याप्त है, वही राम है।

सस्वर : **राम नाम जग आधार साधु संतकर विचार**
यही निरधारसार, गाव वेद संतु है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्रह्मा विष्णु महेश सागर धरनी दिनेश
राम नाम को प्रातप जगत जीव जन्तु है
जानहु कृशानु भानु पृथ्वीजल अनिल वियोम
रोम-रोम राम राम राम नाम तंतु है।
वेदचार फन हजार वाणी वीणा अपार
पायो न काहू पार महिमा अनन्त है।

(स्वर का मंद होकर समाप्त होता जाना।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रद्धा के दीप

(दीपावली पर केन्द्रित संगीत रूपक)

(आरम्भ गीत की पंक्तियों से)
श्रद्धा के दीप जले.....
.....जय देवी कमले।

एक स्वर : सौम्य प्रभा और दीपोल्लास का पर्व दीपावली।
अंधकार अज्ञान और दरिद्रता के शमन का पर्व दीपावली।
धन धान्य और ज्ञान वैभव की समृद्धि का पर्व, दीपावली।
कार्तिक द्वादशी से-कार्तिक पूर्णिमा तक के मनोन्मेष का पर्व दीपावली।

भगवान महावीर, स्वामी रामतीर्थ और महर्षि दयानन्द के पुण्य स्मरण का पर्व दीपावली और भू देवी, जगधात्री, वैभव की अधिष्ठात्री, सुलक्षणा, कल्याणी, शेषशायी भगवान् विष्णु की वामांगी, देवी नारायणी के पूजन का दिवस दीपावली।

सस्वर : सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते।

गीत :

श्रद्धा के दीप जले
पूजा के फूल खिले
आस्था की अक्षत है अर्पित
जय देवी कमले....2
तुम सम्मोहन ध्यान तुम्हीं
वीणा का नवगान तुम्हीं
करूणे शरणे चिर सुख सदने
रत्न श्रेष्ठ विमले, जय देवी कमले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नव प्रकाश हर घर आंगन में
विमल हास श्री के प्रांगण में
मधुर-मधुर दीपक ज्यों नभ में
तारागण उजले, जय देवी कमले।
है संस्कृति का उज्ज्वल प्रसाद
जीवन कानन का विपुलनाद
दिशा-दिशा में दिग् दिगन्त तक
वैभाव थाल सजे, जय देवी कमले।
श्रद्धा के दीप जले,
पूजा के फूल खिले
आस्था की अक्षत है अर्पित
जय देवी कमले

महिला स्वर : भगवती लक्ष्मी के आविर्भाव की अनेक गाथाएँ व प्रसंग पुराणों और धार्मिक ग्रन्थों में उल्लिखित हैं।

पुरुष स्वर : ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार, सृष्टि के आदि में, श्रीकृष्ण के महारास के अवसर पर उनके वामांग से स्थिर यौवना भगवती लक्ष्मी प्रकट हुई।

महिला स्वर : समुद्र मंथन से लक्ष्मी के प्रकट होने की कथा प्रचलित है, इसी पुराण के अनुसार, दुर्वासा के शाप के कारण लक्ष्मी ने स्वर्ग त्यागा और फिर हरि की आज्ञा मानकर समुद्र की कन्या बनी, भगवान की रची लीला के कारण ही देवों-दानवों में संघर्ष के फलस्वरूप समुद्रमन्थन हुआ और लक्ष्मी प्रकट हुई।

पुरुष स्वर : धम्म पद के अनुसार पूर्व दिशा के दिक्पाल धतरट्ट की पुत्री है लक्ष्मी।

महिला स्वर : चीनी बौद्ध ग्रन्थों में कुबेर के प्रमुख पार्षक मणिभद्र की पुत्री और जापानी बौद्ध कथाओं में—हरीति की कन्या स्वरूपा है देवी लक्ष्मी।

(संगीत)

अन्य स्वर : रक्तांगे विश्व के सदन में
रक्त कोकनद के उपर
राजी तुम राजीव चरण
रखकर राजीव-नखर सुन्दर
रक्ताम्बर शस्य के शीर्षपर
और शंख आरक्त अधर
वसुन्धरा की मधुर धारणा
अंश विष्णु की प्रिया सुघर
सदोलोक की छायालग्ना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गृह की हुई सदा प्रतिमा
धन्या माता और प्रेयसी
पत्नी गरिमा फिर लघिमा
कन्या पुत्र वधू रक्षा की
एक समीक्षा जैसी तुम
सभी ओर से पोषण की प्रिय
एक प्रतीक्षा जैसी तुम।

(संगीत)

पुरुष स्वर : लक्ष्मी की प्रतीक्षा किसे नहीं होती? देवी लक्ष्मी अन्नपूर्णा हैं, लाभ स्वरूपा है, उनके बिना सुखी-जीवन की कल्पना सम्भव नहीं।

महिला स्वर : इसीलिए न केवल भारत बल्कि विश्व के कई अन्य देशों में भी लक्ष्मी पूजन महोत्सव या प्रकाश पर्व मनाए जाने की परम्परा है।

पुरुष स्वर : ईसा से 30 वर्ष पूर्व विश्व में ये महोत्सव इसी रूप में मनाया जाता था। जहाँ-जहाँ आर्य संस्कृति का प्रभाव रहा वहाँ-वहाँ दीप-पर्व की महत्ता देखी गई है।

महिला स्वर : मिस्रवासी नवम्बर माह के दूसरे सप्ताह के प्रारम्भ में भगवान आसिरिस और उनकी पत्नी ईसिस के प्रति श्रद्धावनत होकर ये पर्व मनाते हैं।

पुरुष स्वर : आसिरिस पोषण के देवता—यानी भारतीय मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु और ईसिस पोषण की देवी अर्थात् भगवती लक्ष्मी।

महिला स्वर : जापान और चीन में आज भी सितम्बर में पितृपक्ष के रूप में पूर्वजों एवं देवताओं का आह्वान करने की दृष्टि से ये पर्व मनाया जाता है।

पुरुष स्वर : भारत में दीपावली का पर्व वसुवारस अर्थात् कार्तिक द्वादशी से, कार्तिक पूर्णिमा तक मनाते हैं। वसुवारस गो-पूजन है। बछड़े को दूध पिलाती गाय का पूजन इस दिन होता है।

• **महिला स्वर :** फिर धनतेरस आती है। धनतेरस, आरोग्य के देवता धनवन्तरि का जन्मदिन है। आरोग्य, जीवन का आधार है और सुखी जीवन के लिए आवश्यक भी, अतः आरोग्य जीवन की कामना का पर्व ही धनतेरस है।

पुरुष स्वर : और फिर आता है प्रकाश पर्व दीपावली। *(संगीत)....*

जगमगाते दीपों ने शताब्दियों से यही सन्देश दिया—

तमसो मा ज्योतिर्गमय

महिला स्वर : अन्धकार चाहे अज्ञान, दरिद्रता अथवा दुर्बलता का ही क्यों न हो, इन सब पर विजय का पर्व है दीपावली।

पुरुष स्वर : मान्यता है कि भगवान राम जब अत्याचार और अन्याय के अन्धकार रूपी रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे, तब समस्त अयोध्या में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नगरवासियों ने घर-घर घी के दिये जलाकर, क्षमाशील और भक्ति के प्रकाशरूपी प्रभु श्रीराम का स्वागत किया।

गायन : **घर-घर आँगतन होत बधाई,**
रामचन्द्र सिंहासन बैठे,
चामर छत्र डुलाई,
घर-घर आँगन होत बधाई।

महिला स्वर : इसी तरह माँ दुर्गा द्वारा महिषासुर के वध के बाद सुरसमाज में शान्ति हुई और इन्द्रलोक प्रकाशित हुआ।

पुरुष स्वर : भगवान् कृष्ण तो दीपोत्सव के प्राण पुरुष हैं। नरकासुर वध से लेकर गोवर्धन पर्वत उठाने तक की उनकी महिमा का गान ग्वाल बाल दीवारी गा-नाच कर बृज से लेकर बुन्देलखण्ड तक आज भी करते हैं।

महिला स्वर : बुन्देलखण्ड में दीवाली की रात सुराती की रात के रूप में मनाई जाती है। इस रात सौभाग्यवती स्त्रियाँ गेरू अथवा हल्दी से दीवार पर राधा कृष्ण के चित्र बनाकर उनके सम्मुख घी के दिये जलाती हैं।

पुरुष स्वर : तुलसी ने लिखा है–

अन्य स्वर : तिरिया अपने कारने लिख पूजत है भीत
सुफल होय मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीत।

महिला स्वर : कहीं-कहीं पूजन के बाद ओद-कोद या ओट-बोट की भी परम्परा है। इस प्रथा में घास का एक छोरा गट्ठर बनाकर उसमें आग लगाई जाती है। जिसे लंका दहन का प्रतीक मानकर भगवान राम का यशगान भी करते हैं।

अन्य स्वर : **धनुष चढ़ाए राम ने भैया थकत भये सब भूपरे**
मगनभई श्री जानकी जू देख राम को रूप रे
आज दीवाली गा लो भैया, काल की जाने राम रे
बाजत आवें ढोल रे भैया, नाचत आवें ग्वाल रे।

पुरुष स्वर : दीपावली के इसी दिन से किसान कहीं अपनी भूमि से धान की फसल प्राप्त करने की तैयारी करता है, तो कहीं गेहूँ की बुवाई की।

महिला स्वर : वणिक वर्ग के लिए इस दिन का विशेष महत्त्व है। उनके बहीखाते का हिसाब-किताब, लेनदेन को पुर्ननिर्धारित करता है ये दिन।

पुरुष स्वर : प्रत्येक व्यक्ति अपने घर-द्वार को साफ सुथरा कर सजाता सँवारता है–लक्ष्मी पूजन के लिए। दीपक की पवित्र ज्योति घर-घर को आलोकित करती है।

महिला स्वर : मन्त्रमुग्ध करनेवाला ये दीपोत्सव, ये लक्ष्मीपूजन अन्य पर्वों की तरह ही प्रतीकात्मक भी है। देवी लक्ष्मी के हाथ में गेहूँ की बालियाँ श्रेष्ठ कृषि, दूसरे हाथ का मंगलघट जीवनरस की पूर्णता, तीसरे हाथ का कमल, कला, सौन्दर्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और संस्कृति का प्रतीक और चौथे हाथ का चक्र काल के अनन्त प्रवाह की ओर संकेत करता है।

पुरुष स्वर : काल का प्रभाव जिससे कोई भी समाज व्यवस्था या देश अछूता नहीं रह सकता। कहना होता है कि भारत प्रभावित है समय चक्र से।

महिला स्वर : दीपावली यदि व्यक्ति की समृद्धि का पर्व है तो राष्ट्र के जीवन की श्री समृद्धि और यश और-और क्यों न बढ़े।

पुरुष स्वर : विश्व को शान्ति, एकता, चरित्र और नैतिकता की शिक्षा देने वाला भारत आज अपनी ही समस्याओं से जूझ रहा है।

महिला स्वर : सामाजिक विषमता का अँधियारा क्यों बढ़े।

पुरुष स्वर : अच्छी नीतियों और प्रयासों के उपरान्त भी अशिक्षा, गरीबी बेरोजगारी और मँहगाई रूपी अन्धकार का नाश क्यों नहीं हुआ, अपेक्षित परिणाम क्यों नहीं मिले?

पुरुष स्वर : शायद इसलिए कि व्यक्ति के चरित्र ने राष्ट्र के चरित्र को धोखा दिया?

महिला स्वर : व्यक्तिगत ईमानदारी की कमी ने भ्रष्ट आचरण (भ्रष्टाचार) को बढ़ावा दिया।

पुरुष स्वर : निहित स्वार्थों ने सामाजिक भावना और व्यक्ति की व्यापकता को समेट लिया है।

महिला स्वर : हमने दिया तो जलाया लेकिन दीपक की तरह जलना न सीखा। दीपक स्वयं जलकर जग को प्रकाश देता है।

पुरुष स्वर : हमारे कई महापुरुषों ने अपने जीवन को जलते दीपक-सा बनाया था, उन्होंने खुद जलकर जो प्रकाश दिया उसी कारण भारत श्रद्धा पुरुषों का राष्ट्र बना।

महिला स्वर : राष्ट्रीय जीवन पर छा रहे अँधियारे को दूर करने के लिए, हमें दीपक बनना होगा, नए संकल्प करने होंगे।

पुरुष स्वर : समृद्धि की प्रतीक लक्ष्मी, मात्र दीप जलाने, नैवेद्य चढ़ाने और आरती उतारने से नहीं आती।

सस्वर स्वर : उदयोगिनः पुरुषसिंहमुपैतिलक्ष्मीः
देवे न देय इति का पुरुषा वदन्ति।

महिला स्वर : हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने से उजाला नहीं होता।

पुरुष स्वर : जीवन का आधार ही कर्म है, उद्योग है।

सस्वर स्वर : उद्यमेन ही सिद्धयन्ति कार्याणि न मनौरथेः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे भृगाः।

महिला स्वर : समाज का जीवन सुधरेगा कर्म से, लक्ष्मी पूजन के इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पावनपर्व पर दीप जलाने के साथ-साथ अपने अन्तर्मन में भी एक दीप जलाएँ। पहले स्वयं प्रकाशित हों।

पुरुष स्वर : न केवल राष्ट्र बल्कि विश्व को आलोकित करने का व्रत लें— सार्थकता दें इस दीपोत्सव को—
आइए दीप जलाएँ—

गीत :

समूह स्वर : आओ हम दीप जलाएँ
मिटे अँधेरा जग का सारा
ऐसी ज्योति जलाएँ
कितना मधुर सुहावन पावन
दीपों का उत्सव मनभावन
इतना करें परिश्रम मिलकर
जग प्रकाश बन जाएँ
जलता दीपक कहता हमसे
खुद जलकर तुम करो उजाला
हो गम्भीर उठें इतना कि
गगन धरा हो जाएँ
हर आँगन को मिले उजाला
हर मन को सपनों की माला
संध्या की लाली से सब घर
नित नूतन हो जाएँ
आओ हम दीप जलाएँ
मिटे अँधेरा जग का सारा
ऐसी ज्योति जलाएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अलविदा के साज पर स्वागत के स्वर

(वर्ष समाप्ति और आरम्भ पर केन्द्रित संगीत रूपक)

सस्वर : **स्वागत, सुस्वागत अब नव वर्ष**
शेष न कोई रहे संघर्ष
सामने जीवन का उत्कर्ष
स्वागत सुस्वागत नव वर्ष

प्रथम स्वर : आगत का स्वागत न केवल हमारी बल्कि प्रत्येक संस्कृति की अपनी विशेषता है, और साथ ही है, स्वागत की उसकी अपनी शैली।

द्वितीय स्वर : स्वागत उसका, जो आ रहा है, और स्मरण उसका, जो जा रहा है, या जाने वाला है।

प्रथम स्वर : जो आगे निकल गया, या हमसे पीछे छूट गया, शेष रह गई, उसकी यादें। जो बन गई हमारा अतीत।

द्वितीय स्वर : अतीत के बिना जीवन का अध्याय पूर्ण नहीं, और विश्लेषण के बिना स्वाध्याय पूर्ण नहीं, विश्लेषण का आधार है अतीत।

प्रथम स्वर : अतीत पर ही खड़ा होता है वर्तमान और वर्तमान आधार है भविष्य का।

द्वितीय स्वर : सुखद भविष्य का सपना भला कौन नहीं देखता, सुनहरे दिनों की कल्पना हर मन में होती है।

प्रथम स्वर : लेकिन इन सुनहरे दिनों को पाने के लिए हर बीता साल हमारे सोच और विचार के लिए एक नया धरातल देता है।

द्वितीय स्वर : अपनी खुशियों और पीड़ाओं का बयान करता है, और अपेक्षा करता है हमसे, कि हम इन पीड़ाओं को न केवल सुनेंगे बल्कि समझेंगे भी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत : बीत गया मैं एक वर्ष हूँ, कैसे कटे हैं दिन न पूछो
मेरे अन्तर के प्रश्नों का, अब मुझसे उत्तर न पूछो।
कभी अमावस, कभी पूर्णिमा
दिवसों को ये कैसी उपमा
स्वप्न छले गए अपनों से ही
पर उनका अभिशाप न पूछो,
बीत गया मैं एक वर्ष हूँ.....

अधरों पर मुस्कान थकी सी
जीवन की पहचान थकी सी
अपनों से संग्राम हुआ तो
किसका है उपहास न पूछो
बीत गया मैं एक वर्ष हूँ....

थोड़ा सा मृदुहास बहुत है
एक पल का, मधुमास बहुत है
अनजाने से इस उपवन का
कैसा है इतिहास न पूछो,
बीत गया मैं एक वर्ष हूँ....

बीत गया मैं एक वर्ष हूँ, कैसे कटे हैं दिन न पूछो
मेरे अन्तर के प्रश्नों का, अब मुझसे उत्तर न पूछो॥

प्रथम स्वर : ये वर्ष जो बीत गया–अपने पीछे छोड़ गया है तमाम घटनाएँ, दुर्घटनाएँ, अनुभव और आशंकाएँ, तमाम अफसाने और कहानियाँ।

द्वितीय स्वर : ये कहानियाँ हमें पढ़नी हैं, साथ ही एक जिज्ञासा और है, और वो ये कि इस वर्ष की अपनी क्या कहानी है, ये कब आरम्भ हुआ, वर्ष का पता कैसे चला, महीने कैसे बने? आइए वर्ष की कहानी सुनें।

(परिवर्तन संगीत)

तृतीय स्वर : समय का साल के रूप में विभाजन काफी पुराना है। संस्कृत में साल के लिए वर्ष, शरद आदि शब्दों का प्रयोग इस बात का संकेत करता है।

चतुर्थ स्वर : एक वर्षा ऋतु के बाद दूसरी वर्षा ऋतु के आने पर या एक शरद ऋतु के बाद दूसरी शरद ऋतु आने पर लोगों को वर्ष या साल बीत जाने का पता चला।

तृतीय स्वर : और इस तरह साल के लिए वर्ष या शरद जैसे शब्दों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रयोग चला—जीवेत शरदः शतम् अर्थात् 100 साल तक जीने की कामना का आशीर्वाद।

चतुर्थ स्वर : समय को नापने और उसका हिसाब-किताब रखने की आवश्यकता मनुष्य को उसके विकास के अत्यन्त प्रारम्भिक काल में ही पड़ी।

तृतीय स्वर : आज हमारे पास समय को नापने के जितने भी रूप या साधन हैं उनमें कुछ तो प्राकृतिक हैं और कुछ हमारे अपने निर्मित साधन हैं।

चतुर्थ स्वर : मनुष्य को सबसे पहले प्रकाश और अन्धकार के कारण दिन-रात का पता चला, स्पष्ट है कि इस विभाजन का आधार सूर्य है।

तृतीय स्वर : वर्ष मूलतः पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर घूमने पर आधारित है। इसी प्रकार महीना चन्द्रमा के पृथ्वी के चारों ओर घूमने पर आधारित है।

चतुर्थ स्वर : विभाजन के ये दोनों ही आधार प्राकृतिक हैं, किन्तु इन दिनों के विपरीत सप्ताह का विभाजन कृत्रिम है। और इसी कारण विश्व में प्राचीन समय में एकरूपता नहीं मिलती।

तृतीय स्वर : प्राचीन यूनान में महीना 10-10 दिनों के तीन भागों में बँटा था। रोम में भारत के कुछ क्षेत्रों की भाँति आठ-आठ दिन का अठवारा होता था। चीन में 10-10-बारह-बारह दिनों के विभाजन थे, यही नहीं पश्चिम अफ्रीका में 4-4, मध्य अमरीका में 5-5 तथा रोगो की एक जाति में 6-6 दिन का सप्ताह भी होता था।

चतुर्थ स्वर : लेकिन आज पूरे विश्व में 7 दिनों का सप्ताह होता है। प्रश्न उठता है—ये एकरूपता आखिर कहाँ से आई, कैसे हुई।

तृतीय स्वर : इतना ही नहीं इन सात दिनों की गणना और उनके नामों में भी काफी समानता है।

चतुर्थ स्वर : ऐसी स्थिति में यह अनुमान लगाना बहुत गलत न होगा कि मूलतः किसी एक देश में ये विचार जन्मा होगा—और वहीं से चारों ओर फैला।

तृतीय स्वर : और वो देश भारत भी हो सकता है, क्योंकि प्राचीनकाल से हमारे यहाँ 7 ग्रह माने जाते थे। बराहमिहिर में सात ग्रह हैं।

चतुर्थ स्वर : इन्हीं 7 ग्रहों के आधार पर 7 दिन का सप्ताह बना और इनके नाम भी इन ग्रहों के आधार पर रखे गए। रविवार से शनिवार तक।

तृतीय स्वर : अंग्रेजी के संडे, मंडे, सैटर्डे आदि इन्हीं के विकास हैं। संडे का 'सन' सूर्य है तो मंडे का मून अथवा चन्द्रमा।

चतुर्थ स्वर : ईरान और अरब में भी शायद यही पद्धति पहुँची पर उन लोगों ने अनुवाद न करके क्रम के आधार पर नामकरण किया। आइए थोड़ा उसे भी जान लें—

(इस्लामी संगीत का ध्वनि प्रभाव)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्य स्वर : रविवार को अरबी में यौमुल अर्थात् पहला दिन कहते हैं। यौम यानि दिन अहद यानि एक। सोमवार को यौमुल इसनैन, इसनैन यानि दो अर्थात् दूसरा दिन। मंगल को यौमुल सलासा, सलासा यानि तीन अर्थात् तीसरा दिन। बुधवार को यौमुल अरबआ अर्थात् चौथा दिन। गुरुवार को यौमुल खमीस अर्थात् पाँचवाँ दिन। शुक्रवार को यौमुल जुमआ कहा जाता है। चूँकि शुक्रवार को सभी मुसलमान भाई जमा होकर एक साथ नमाज पढ़ते हैं इसलिए उसे क्रम के अनुसार न कहकर जमा होने का दिन–यानी यौमुल जुमआ कहा गया। शनिवार के लिए अरबी में यौमुल सब्त है। मान्यता है कि खुदा ने 6 दिन संसार को बनाया और सातवें दिन आराम किया अतः ये यौमुल सब्त या आराम का दिन है।

(इस्लामी प्रभाव का संगीत)

प्रथम स्वर : सप्ताह के इन दिनों को मिलाकर महीना बनता है और 12 महीनों से 1 वर्ष।

द्वितीय स्वर : अगर शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से अनुमान लगाया जाए तो एक वर्ष 365.242199 दिनों का और 12.36827 महीनों का होता है।

प्रथम स्वर : और एक महीना 29.53059 दिनों का आँका गया है।

प्रथम स्वर : वर्ष महीना तथा दिन के आधार पर समय को नापने के लिए विश्व में अनेक कैलेण्डर प्रचलित हैं और रहे हैं। इनमें कुछ प्रमुख कैलेण्डर हैं–

द्वितीय स्वर : इकलेसिऐस्टिकल, चीनी, मिस्र, बेबीलोनी, सुमेरी, यूनानी, रोमन, मुसलमानी और मेक्सिकन आदि।

प्रथम स्वर : भारत में विक्रम संवत्, शक संवत्, हिजरी सन्, शालीवाहन शाके, बंगला संवत्, नेपाली संवत् आदि 33 से भी अधिक सन् या संवत् प्रचलित रहे हैं।

द्वितीय स्वर : अंग्रेजी महीनों का सम्बन्ध रोमन कैलेण्डर से है और आज यही रोमन कैलेण्डर विश्व में सबसे अधिक प्रचलित है।

प्रथम स्वर : प्रश्न उठता है–इस सर्वाधिक प्रचलित रोमन कैलेण्डर और उसके 12 महीनों का ये वर्तमान रूप ही पहले से रहा या इसमें भी परिवर्तन हुए।

द्वितीय स्वर : परिवर्तन हुए और बहुत अधिक हुए, महीनों की कहानी तो और भी रोचक है।

(संगीत प्रभाव)

तृतीय स्वर : रोमन कैलेण्डर का आरम्भ 800 वर्ष ईसा पूर्व या उससे भी पहले हुआ था। कुछ लोग इसका प्रारम्भ रोमुलस से मानते हैं।

चतुर्थ स्वर : कई प्रमाणों से ये सिद्ध होता है कि प्रारम्भ में रोमन कैलेण्डर का वर्ष केवल 304 दिनों का होता था। और वर्ष में केवल 10 महीने थे। और वर्ष का आरम्भ मार्तिअस यानी वर्तमान मार्च से होता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तृतीय स्वर : उल्लेखनीय है कि भारतीय वर्ष आज भी चैत्र यानि मार्च से ही आरम्भ होता है।

चतुर्थ स्वर : कुछ महीनों बाद यूनानी प्रभाव से वर्ष के अपेक्षाकृत अधिक सही काल का पता चला और लगभग 700 ईसा पूर्व में न्यूमा पाम्पिलिअस नामक राजा ने दो महीने और जोड़ दिए।

तृतीय स्वर : ये महीने थे—जैतुअरिअस और फेवुअरिअस, बाद में ये जनवरी-फरवरी अन्त में न समझे जाकर प्रारम्भ में समझे जाने लगे और वर्ष का आरम्भ मार्च के स्थान पर जनवरी से माना जाने लगा।

चतुर्थ स्वर : ये परिवर्तन 414 ई. पू. दस मजिस्ट्रेटों की समिति ने किया साथ ही फरवरी को 28 दिन का निश्चित किया।

तृतीय स्वर : लेकिन इतना हो जाने पर भी कैलेण्डर का रूप अभी तक ठीक नहीं था और कैलेण्डर के महीने मौसम से दूर होते जा रहे थे।

चतुर्थ स्वर : जूलिअस सीजर के समय लोगों ने इस बात की शिकायत की। और इन गड़बड़ियों को ठीक करने के लिए जूलिअस सीजर को फिर परिवर्तन करने पड़े।

तृतीय स्वर : रोमन कैलेण्डर का ये रूप जूलियन कैलेण्डर कहलाता है। तथा जूलिअस की कैलेण्डर विषयक महान सेवाओं के लिए 7वें महीने को जूलिअस कहा गया जो अंग्रेजी में वर्तमान जुलाई है।

प्रथम स्वर : जनवरी से दिसम्बर तक के इन 12 महीनों के एक वर्ष का ये वर्तमान रूप अनेक परिवर्तनों और अलग-अलग देशों की यात्रा के बाद उभर कर आया है।

द्वितीय स्वर : और इसीलिए, यही कारण है कि नववर्ष के स्वागत की अलग-अलग प्रथाएँ अलग-अलग देशों में प्रचलित हैं।

प्रथम स्वर : ग्रेट ब्रिटेन और यूरोपीय देशों में पारिवारिक और सामाजिक तरीके से नव वर्ष का स्वागत खूब शान-शौकत से खा-पीकर जश्न के साथ किया जाता है। केक, पेस्ट्री और शराब के दौर चारों ओर दिखाई देते हैं।

द्वितीय स्वर : अमरीकी इस मौके पर इतने मदहोश हो जाते हैं कि वहाँ प्रतिवर्ष रिकॉर्डतोड़ दुर्घटनाएँ इस दिन होती हैं।

प्रथम स्वर : जोश में भरे पुर्तगाली लोग ढोल पीटकर नववर्ष का स्वागत करते हैं।

द्वितीय स्वर : जर्मनी में नाचने, गाने और खुशियाँ मनाने के अलावा देश के कुछ भागों में पिनपनी नामक त्यौहार इस अवसर पर मनाया जाता है। इसमें पिता अपनी पुत्रियों को एक हजार पिनों के मोल का उपहार भेंट करते हैं।

प्रथम स्वर : रोम में स्थित वेटिकन सिटी में इस अवसर पर धार्मिक आयोजन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होते हैं। जिनमें हर वर्ष उनके धर्मगुरु पोप शुभ नववर्ष के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हुए विश्व को सुख शान्ति का सन्देश देते हैं—

द्वितीय स्वर : इटली में उत्साहपूर्वक मौज के साथ चितकबरी खूबसूरत पोशाकें पहने लोग नववर्ष के उपलक्ष्य में एक दूसरे को उपहार देते हैं।

प्रथम स्वर : जापान में भी नववर्ष खुशियों के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। भवनों की सफाई उनकी परम्परागत सजावट और उपहारों का आदान-प्रदान यहाँ की विशेषता है।

द्वितीय स्वर : जापान में टिप की प्रथा खूब प्रचलित है। इसलिए इस मौके पर डाकियों की बड़ी मौज रहती है। उपहारों के पार्सल देने जब वे घर-घर जाते हैं तो बदले में कोई न कोई गिफ्ट उन्हें भी मिल जाती है।

प्रथम स्वर : यह आनन्द पर्व मनाने में कम्युनिस्ट भी पीछे नहीं, रूस में नववर्ष का स्वागत दो बार यानि पहली और 13 जनवरी को किया जाता है।

द्वितीय स्वर : इसका कारण ये है कि जनवरी को वे ईसाई नववर्ष मनाते हैं जबकि 13 जनवरी परम्परागत कैलेण्डर के अनुसार मनाई जाती है।

प्रथम स्वर : भारत में जैसे गाय की पूँछ पकड़ना शुभ माना जाता है उसी तरह युगोस्लाविया में इस अवसर पर सुअर के बच्चे की पूँछ पकड़ना शुभ माना जाता है। और दीवाली जैसी आतिशबाजी भी होती है।

द्वितीय स्वर : भारत में भी खुशियाँ मनाकर परम्परागत नववर्ष के अलावा इस जनवरी के नववर्ष को मनाने का रिवाज भी चल पड़ा है।

प्रथम स्वर : दिल्ली के होटलों में नृत्यगान युक्त रात्रि भोज के लिए सीट रिजर्व कराने के ही 5-6 हजार रुपये लग जाते हैं।

(संगीत का प्रभाव)

प्रथम स्वर : नववर्ष का अवसर वर्ष भर के लिए शुभकामनाएँ प्रकट करने का नायाब मौका देता है।

द्वितीय स्वर : समूची दुनिया में इस अवसर के लिए 'ग्रीटिंगकार्ड' भेजने का प्रचलन धीरे-धीरे प्रथा या रिवाज हो चला है। यूनिसेफ के 'ग्रीटिंग कार्ड' इनमें विशेष दर्जा रखते हैं।

प्रथम स्वर : उनका सोद्देश्य होना भी उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन क्या मात्र शुभकामनाओं का आदान-प्रदान और ग्रीटिंग कार्ड्स का भेजना ही नववर्ष के स्वागत की सार्थक पूर्णता है।

द्वितीय स्वर : विचार करना होगा कि इस नए साल के सार्थक स्वागत के लिए गुजरे वर्ष ने हमसे क्या कहा?

प्रथम स्वर : टटोलना होगा अपने आपको, अपने से दूर होते जा रहे अपनों को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : अन्यथा हमारी सारी प्रगति, हमारी सारी उपलब्धियों का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा।

द्वितीय स्वर : इतिहास गवाह है कि लम्हों की खता ने, क्षण भर की त्रुटियों ने सदियों को सजा दी है।

प्रथम स्वर : ये सजाएँ सदियाँ महसूस कर रही हैं आँखें देख रही हैं।

द्वितीय स्वर : पर यहाँ एक विचार का विषय ये भी है कि किसी भी सुअवसर के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ये अभिनन्दन पत्र मिलना प्रायः मुश्किल ही होता है।

प्रथम स्वर : जहाँ वर्ष के प्रथम दिन की अभिव्यक्ति ही अपनी भाषा में न हो सके तो वहाँ शेष वर्ष अपनापन खोजने में ही बीत जाए तो क्या आश्चर्य–

द्वितीय स्वर : और एक यही नहीं, सिर्फ एक वर्ष नहीं, हमारे और भी कई वर्ष गुजरे हैं, अपनापन खोजने में–ऐसा लगता है वर्ष दर वर्ष हम टूट रहे हैं–टूट रही हैं हमारी परम्पराएँ। आस्थाएँ जैसे चरमरा रही हों–पर क्यूँ।

प्रथम स्वर : सिक्के के दो पहलू की तरह ही इस गुजरे वर्ष के बारे में भी दो तरह से विचार हो सकता है।

द्वितीय स्वर : एक विचार तो ये कि वर्ष बीत गया–पीछे छूट गया हम आगे निकल आए।

प्रथम स्वर : लेकिन इसके विपरीत दूसरे मत में ये वर्ष आगे निकल गया हमसे बहुत आगे, इस वर्ष में हम अपनी आकांक्षाओं को पूरा न कर सके।

द्वितीय स्वर : इसकी रफ्तार के साथ हम कदम न मिला सके, हम लगभग स्थिर रहे और आश्चर्य ये कि अपनी अनेकानेक उमंगों के साथ स्थिर रहे। रह गई इच्छा कि हमने अपने-अपने स्तर पर कार्यों को पूरा क्यूँ न किया? आपस में झगड़ते रहे और देश अशान्त (होता रहा) करते रहे।

प्रथम स्वर : काल के सतत् प्रवाह में, प्रगति के चक्र में दूसरा मत ही अधिक श्रेष्ठ है। क्योंकि समयरूपी देवता को हम सिर्फ आगे होकर ही रोक सकते हैं।

द्वितीय स्वर : हमें उसकी प्रतीक्षा पूरी तैयारी से करनी होगी वो हमारी प्रतीक्षा में ठहरेगा नहीं, गति ही उसका स्वभाव है। उसकी गति से हमें अपनी गति मिलानी होगी।

प्रथम स्वर : अब हमारे सामने है एक नया वर्ष, अनेकानेक नई आशाओं–सुखद सम्भावनाओं, नवीन कल्पनाओं, कुछ चुनौतियों और अपेक्षाओं, आकांक्षाओं तथा नवशुभकामनाओं से भरा नया वर्ष।

आइए सब मिलकर उसका स्वागत करें, और करें अभिनन्दन–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत : चलो मिल स्वागत करो सहर्ष
समूह स्वर : कि देखो आया नया है वर्ष
जगत में फैला नवल प्रकाश
पुलक कलियों में नया विकास
प्रात की बहती नवल समीर
शान्ति की समिधा लिए अधीर
चलो मिल.....

प्रथम स्वागत में नत हेमन्त
शिशिर भी करता प्रेम उदन्त
दिवस कुछ ठहरा अभी बसन्त
वर्ष का उत्सव चले अनन्त
चलो मिल....

हो रहा चेतन का सत्कार
ले रही समता नव आकार
विश्व अब लेता नव विस्तार
परम तक अम्बर के उस पार

चलो मिल स्वागत करो सहर्ष
कि देखो आया नया है वर्ष॥

(धीरे-धीरे मंद होता स्वर। समाप्त।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीतों का गुनगुन

(संगीत। सरोद या सितार की सुखद धुन....)

महिला स्वर : मन के भावातिरेक के कारण जब अनुभूति तीव्र हो जाती है, तो अभिव्यंजित होती है और जिस अभिव्यक्ति में निजीपन के कुछ रागात्मकता होती है साथ ही संक्षिप्तता के साथ भाव की एकता होती है, तो ऐसी अभिव्यक्ति बन जाती है गीत।

पुरुष स्वर : यानि गीत हम उसे कहते हैं, जिसमें संगीतात्मकता, सरस प्रवाहपूर्ण कोमलकान्त पदावली, आत्मनिवेदन यानि निजि रागात्मकता, संक्षिप्तता और एक भाव की प्रधानता हो।

महिला स्वर : गीतों के दो रूप देखने को मिलते हैं, एक पारम्परिक गीत, जो प्रसन्नता या हर्षोल्लास के क्षणों में लोककण्ठों से अनायास ही फूट पड़ते हैं जिन्हें हम लोकगीत कहते हैं इन पर कभी किसी ने अपना अधिकार नहीं जताया।

पुरुष स्वर : दूसरे, साहित्यिक गीत, जो साहित्यकार की कलम से मनोभावों को छन्दबद्ध करके रचा जाता है। साहित्यिक गीतों में कोमलता मिश्रित पौरुष भावना का प्राधान्य पाया जाता है।

महिला स्वर : ये गीत विशिष्ट वर्ग के होने के कारण इनका प्रभाव क्षेत्र भी सीमित रहता है और इनमें कवि के व्यक्तित्व की प्रधानता रहती है।

पुरुष स्वर : प्रसाद के गीतों में दार्शनिकता तो है फिर भी अधिकांश गीतों में ऐसा माधुर्य और आकर्षण है जो प्रिय होने के कारण सबको सुलभ जान पड़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत : तुमुल कोलाहल कलय में मैं हृदय की बात रे मन....2
(1) विकल होकर नित्य चंचल, खोजती जब नींद के पल
चेतना थक सी रही, तब मैं मलय की बात-रे मन
(2) चिर विषाद विलीन मन की
किस व्यथा के तिमिर वन की
मैं उषा सी ज्योति रेखा कुसुम विकसित प्रात रे मन
(3) जहाँ मरू ज्वाला धधकती,
चातकी तन को तरसती
उन्हीं जीवन घाटियों की मैं सरस बरसात रे मन....
(4) पवन की प्राचीर में रुक
जला जीवन जी रहा झुक
इस झुलसते विश्व दिन की मैं कुसुम ऋतुरात रे मन....
(रचना–जय शंकर प्रसाद)

पुरुष स्वर : गीत काव्य की परम्परा बहुत प्राचीन है गीत शब्द का पूर्ण महत्व गीत में ही आकर प्रस्फुटित हुआ। गीत का अर्थ ही है–'जो गाया जा सके।'

महिला स्वर : बौद्धों की थेर-गाथाएँ भी गीत हैं–उनमें वैराग्य के प्रति हृदय की भावुकता और उत्साह की झाँकी मिलती हैं।

पुरुष स्वर : वैदिक साहित्य में, प्रचुर मात्रा में गीत सामग्री है। जयदेव के गीत गोविन्दम् में गीत काव्य के सभी लक्षण हैं। जयदेव ने अपना उद्देश्य व्यक्त करते हुए कहा–

श्लोक (गायन) : **यदि हरि स्मरणो सरस मनो**
यदि विलास कलालुकुतुहलम्।
सरस कोमल कान्त पदावलीम्
श्रुणु तदा जयदेव सरस्वतीम्॥

महिला स्वर : जयदेव के इसी आदर्श का, बाद के सभी गीतकारों ने, रचनाकारों ने लगभग पालन किया है।

पुरुष स्वर : महादेवी ने तो गीतों में ऐसी पूर्णता भर दी है जो सहज ग्राह्य, मनोरम और साथ ही आराधना के भाव से वन्दनीय है।

गीत : **प्रिय सान्ध्य गगन मेरा जीवन**
नारी स्वर में : **यह क्षितिज बना धुंधला विराग**
नभ अरुण-अरुण मेरा सुहाग
प्रिय सान्ध्य....
छाया सी काया वीत राग
सुधि भीने स्वप्न रंगीले धन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साधो का आज सुनहरापन
प्रिय सान्ध्य....
घिरता विषाद का तिमिर गहन
सन्ध्या का नभ से मूक मिलन
यह अश्रुमती हँसती चितवन
प्रिय सान्ध्य....

पुरुष स्वर : एक ओर जहाँ महादेवी के गीतों में अनुभूति की गहराई के साथ हृदय पक्ष की प्रधानता है वहीं एक विलक्षणता ये भी है कि गीतों में व्यक्त भावनाओं के अनुसार कलात्मक चित्र बनाए जा सकते हैं–

गीत : मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

नारी स्वर में : युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल, प्रियतम का पथ आलोकित कर
तू जल-जल चित ना होता क्षय
वो समीप आता छल ना मय
मधुर मिलन में ही जाना तू....मधुर....

(रचना : महादेवी वर्मा)

पुरुष स्वर : पन्त के गीतों की भाषा अत्यन्त मधुर और कोमल है। प्रकृति पर वे मुग्ध हैं और इसीलिए उनके गीतों में अनेक रंग अनेक रूप हैं।

महिला स्वर : गुंजन और ज्योत्सना के गीतों में कला का अच्छा प्रदर्शन है, वहीं कुछ गीतों में जीवन की मार्मिक व्यथा भी है–

गीत : (1) शैवालिनी जाओ मिलो तुम सिन्धु से....
अनिल आलिंगन करो तुम गगन का,
चन्द्रिके चूमो तरंगो के अधर,
उड़गनो गाओ पवन वीणा बजा
पर हृदय सब भाँति तू कंगाल है,
उठ किसी निर्जन विपिन में बैठकर
आँसुओं की बाढ़ में अपनी बिकी
छद्म भावी को डुबो दे आँख सी
शैवालिनी.... ....

(2) स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार
चकित रहता शिशु सा नादान
विश्व की पलकों पर सुकुमार,
विचलते हैं जब स्वप्न अजान
न जाने नक्षत्रों से कौन निमन्त्रण मुझको देता मौन

(रचना : सुमित्रानन्दन पन्त)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरुष स्वर : पन्त के काव्य में सुकुमारता अपनी चरम सीमा पर है साथ ही भावुकता और कोमल माँसलता के प्रति आकर्षण भी है।

महिला स्वर : कवि की पैनी सूक्ष्म दृष्टि, भाव के सूक्ष्माति-सूक्ष्म स्पन्दन और क्रियाओं को भी अपने शब्दों से बाँधने में नहीं चूकी है।

गीत : अरे वह प्रथम मिलन अज्ञात
विकम्पित मृदु उर पुलकित गात।
सशंकित ज्योत्सना-सी चुपचाप
जड़ित पद नमित पलक दृग पात
अरे वह प्रथम....
पास जब आ न सकोगी प्राण
मधुरता में सी भरी अजान
लाज की छुई-मुई सी म्लान
प्रिये प्राणों की तुम हो प्राण
अरे वह प्रथम.....

पुरुष स्वर : महादेवी वर्मा ने गीत की परिभाषा करते हुए कहा भी है—

अन्य स्वर : "साधारणतया गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख-दुखात्मक अनुभूति का वो शब्दरूप है, जो ध्वन्यात्मकता में गेय हो।"

महिला स्वर : अनुभूति और गीतकार की वैयक्तिकता ही तो यह कहलवाती है—

पुरुष स्वर : "ये गीत तुम्हारे लिए रचे तुमको ही अर्पित है लालायित जग से मुझको क्या? अभिलाषित जग से मुझको क्या? संकेत तुम्हारा है यदि तो मैं गाए देता हूँ—

गीत : मेरे लिए तो बस वही पल है हँसी बहार के
तुम सामने बैठी रहो
मैं गीत गाऊँ प्यार के
मैं जानता हूँ प्यार की पूजा यहाँ अपराध है
अपराध ये हर पल करूँ मन में यही इक साध है
मुझको मिली है ये खुशी जीवन की बाजी हार के
तुम सामने बैठी....
सीखा नहीं मैंने कभी संयम से मन को बाँधना
है साधना मेरी तुम्हारे रूप की आराधना
तुम साथ दो तो तोड़ दूँ सारे नियम संसार के
तुम सामने बैठी....

(रचना : अंजान)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरुष स्वर : मन की सत्यावस्था और चेतना को साज-सज्जा देकर छन्दबद्ध प्रस्तुत करना गीतकार का कुशल कर्म है। जिसे वाणी पर विश्वास है वो उस अभिव्यक्ति को छन्द के बल पर द्विगुणित कर सकता है।

महिला स्वर : उसके प्रत्येक शब्द में उसका अपना इतिहास बोलने लगता है–

दृष्टि ओझल पलक भीगे, क्यूँ तुम्हें विश्वास होगा।
गीत का हर शब्द लेकिन मेरा ही इतिहास होगा।।

गीत : कितनी बार मिले तुम मुझसे
कितनी बार मैं तुम तक आयी
हाय रे वैरन लाज की मारी
मन की बात नहीं कह पायी।

कितनी बार ये सोचा मैंने
अव ये दर्द नहीं पालूँगी
आज घुटन ये अन्तर मन की
तुम से सारी कह डालूँगी
लेकिन फिर भी कहते-कहते
सहमी झिझकी मैं शरमायी।
कितनी बार मिले तुम...

ये भी कैसी मजबूरी
ना तो दर्द सहा जाता है
और अगर चाहूँ चुप रहना
चुप भी तो न रहा जाता है
कैसी उलझन की ये बदली
मेरे जीवन पर है छाई।
कितनी बार मिले तुम....

(रचना : योगेश)

पुरुष स्वर : वैयक्तिक अनुभूतियों और भावनाओं के अतिरिक्त ऋतु गीतों की या प्रकृतिपरक गीतों की भी अपनी विशिष्टता है।

महिला स्वर : ऐसे अलंकृत, मानवीकृत, माधुर्य मण्डित और साधारणीकृत, प्रकृति विम्ब सम्भवतः अपने आप में अनोखे हैं–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत : सतरंग चूनर नवरंग पाग
मधुर मिलन त्यौहार गगन में
मेघ सजल विजली में आग....
पावस ऋतु नारी, नर सावन
रस रिमझिम संगीत सुहावन
सारस के जोड़े सरोवर में
सुनते रहते बादल राग
सतरंग चूनर....
उपवन-उपवन कंत कामिनी
गगन गुंजाए मेघ दामिनी
पत्ती-पत्ती पर हरियाली
फूल-फूल पर प्रेम पराग
सतरंग चूनर....
पवन चलाए बान बूँद के
सहती धरती आँख मूँद के
बेलों से हठखेली करते
मोर मुकुट पहने बन बाग
सतरंग चूनर....

(रचना : पं. नरेन्द्र शर्मा)

पुरुष स्वर : गीतों के विषय में कवीन्द्र रवीन्द्र ने इतने गीत लिखकर भी एक गीत में कहा है–

अन्य स्वर : "प्रियतम जो गीत गाने के लिए मैं तेरी सभा में आया था, उन्हें आज तक नहीं गा सका। यह जीवन केवल अपनी वीणा के तारों का स्वर साधने में ही बीत गया।"

महिला स्वर : गीत लाखों हृदयों को नया जीवन देगा और देगा नया प्रकाश। समय के साथ इन गीतों का प्रकाश और भी बढ़ेगा।

पुरुष स्वर : गायक की कण्ठवीणा मौन न होगी, उसके तन की वीणा में कम्पन बना रहेगा और उसकी ध्वनि सूर्य-किरणों का आलोक बनकर विश्व में व्याप्त होगी।

महिला स्वर : ये विश्वास इसलिए कि–

गीत और संगीत का एक अंश हर जीवन में है। इन स्वरों की गूँज ही अनुगूँज मन में है।

(संगीत)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वन और जीवन

लघु रूपक

ध्वनि प्रभाव : हवा–रिमझिम, पक्षियों के कलरव के साथ संगीत–

प्रथम स्वर : प्राचीन भारत के तपोवन में एक दिन महासाधना के जिस वट वृक्ष ने अपना उन्नत मस्तक उठाया था, तब उसकी कालजयी शाखाओं ने एक नहीं चारों दिशाओं में अपना अधिकार किया था।

द्वितीय स्वर : वनवासी राम ने वन में एक आदर्श चरित नायक की भूमिका का निर्वाह किया, महावीर तीर्थंकर को वन की शान्ति ने ज्ञान की अनन्तता प्रदान की, गुरु नानक को प्रकृति ने सहज मानवीय प्रेम की पवित्रता दी और वाल्मीकि जैसे चंचलमना को वन ने महाकाव्य दिया।

प्रथम स्वर : कदाचित् इसीलिए भारत में वृक्षों की रक्षा ही नहीं वरन् उनकी पूजा की जाती है। मत्स्य पुराण के अनुसार–10 कुएँ खोदने का पुण्य एक तालाब बनवाने के बराबर है। और 10 तालाबों के निर्माण का मूल्य 1 झील बनवाने के बराबर है। 10 झीलों के बनवाने में उतना ही पुण्य है, जितना एक गुणवान पुत्र प्राप्त करने में तथा 10 पुत्र प्राप्त करने का यश उतना ही होता है, जितना एक वृक्ष लगवाने का।

द्वितीय स्वर : वृक्षारोपण करने वाले व्यक्ति को पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होता है।

प्रथम स्वर : भारतीय काव्य साहित्य में भी वन और प्रकृति प्रेम को अत्यधिक महत्व मिला है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में वन सौन्दर्य के वर्णन में अपूर्ण निष्ठा व्यक्त की है।

अन्य स्वर (गायन) : **राम सैल वन देखन जाहीं**
जहं सुख सकल, सकल दुःख नाहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झरना झरहिं सुधासम बारी
त्रिविध ताप हर त्रिविध बयारी।
विकसे सरसिज नाना रंगा।
मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा
सुन्दर खग गन गिरा सुहाई
जात पथिक जनु लेत बुलाई।

प्रथम स्वर : वृक्षों और मनुष्यों के बीच का सम्बन्ध बहुत पुराना है। कल्पवृक्ष के रूप में मनुष्य ने न जाने कब जीवनदाता वृक्ष की कल्पना की थी। जिसकी शीतल छाया में खड़े होकर मनवांछित फल उसे प्राप्त होता था।

द्वितीय स्वर : वनों की शान्त और गहरी छाया के नीचे, भारत के महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति के ऐसे अध्यायों की रचना की जिन्होंने भारत के आध्यात्मिक और चिन्तनशील मानस को पूरे विश्व में प्रतिष्ठापित किया।

प्रथम स्वर : महाकवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् के माध्यम से वनों के प्रति अपने गहरे प्रेम को व्यक्त किया।

द्वितीय स्वर : कविवर पन्त प्रकृति को ही अपनी कोमल कल्पना की उड़ान का आधार मानते रहे। और आज का कवि भी प्रकृति से कम प्रभावित नहीं है, वनों ने उसे आन्दोलित किया है—और उसके मुख से अपनी बात कहनी चाही है।

कवि : **मैं वन हूँ**
न काटो मुझे
मैं तुम्हारा ही जीवन हूँ।
सच मानो, मैंने आज तक नहीं माँगा किसी से कुछ
दिया ही है सब कुछ।
हवा, रोटी, पानी
और भी बहुत कुछ, जो तुमने चाहा है।
तुम्हें रहने को मकान दिया है, तुम्हारे बच्चों को खिलौने
तुम्हारी कितनी ठण्डी रातों को मैंने जल-जलकर गर्म किया है।
उबलते सैलाब को नर्म किया है।
और इसीलिए तुमसे कहता हूँ—मैं वन हूँ
न काटो मुझे, मैं तुम्हारा ही जीवन हूँ।

प्रथम स्वर : हाँ, इसमें दो मत नहीं कि जंगल और पेड़ पौधे मनुष्य के मित्र हैं। और केवल मित्र ही नहीं उसके जीवन रक्षक भी हैं।

द्वितीय स्वर : ताजी हवा के अभाव में आदमी की साँस मुरझा जाती है। और अगर देर तक वायु न मिले तो मनुष्य का जीवन ही समाप्त हो जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : भारत जैसे विकासशील देश के लिए मौसम की अनुकूलता सर्वोपरि है, क्योंकि आज भी हमारे यहाँ खेती और अन्न की पैदावार मौसम पर ज्यादा निर्भर है। और मौसम वनों से प्रभावित होता है।

द्वितीय स्वर : और वन के इसी महत्व से प्रभावित होकर सर्वप्रथम सन् 1950 में श्री कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी ने वन महोत्सव के नाम से एक राष्ट्रीय पर्व का श्रीगणेश किया।

प्रथम स्वर : इसके अनुसार देश के विभिन्न राज्यों में वहाँ की भौगोलिक दशाओं के अनुसार विभिन्न समयों पर एक पखवाड़े का यह त्यौहार मनाया जाता है।

द्वितीय स्वर : मध्य प्रदेश में जुलाई के प्रथम पखवाड़े में यह वन महोत्सव मनाया जाता है।

प्रथम स्वर : ये अक्षरशः सत्य है कि वन राष्ट्रीय सम्पत्ति है। और मानवीय सभ्यता की रक्षा हेतु वनों की रक्षा करना नितान्त आवश्यक है।

द्वितीय स्वर : हरे-भरे पेड़ों को देखकर मन हल्का होता है। श्रम की थकान कम होती है। हवा के हल्के झोंके जीवन के दर्द और तनाव को, अपने साथ न जाने कहाँ उड़ा ले जाते हैं।

प्रथम स्वर : आधुनिक व्यस्त जीवन की आपाधापी में—मनुष्य जब कभी नन्दन वन, केलिवन, अशोकवन की कल्पना करता है तब उसके मन में अनोखे आनन्द का संचार होता है। उसे शान्ति का अनुभव होता है।

द्वितीय स्वर : क्या हम नहीं चाहते कि नन्दन वन या अशोक वन की आनन्ददायी हमारी कल्पना पुनः साकार हो। हमें शान्ति मिले—आनन्द मिले।

प्रथम स्वर : चाहते हैं—हर कोई चाहता है सुख और शान्ति।

द्वितीय स्वर : तो आइए संकल्प करें कि प्रकृति और हमारे बीच का सेतुबन्ध कभी न टूटे। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि से हमारी मैत्री अटूट रहे।

(ध्वनि प्रभाव—'हवा, बारिश और पक्षियों की चहचहाहट' से समाप्त।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतिपल मंगल

(7 अगस्त आकाशवाणी छतरपुर के उद्घाटन दिवस पर विशेष रूपक)

ध्वनि प्रभाव–(संकेत धुन, शहनाई)

प्रथम स्वर : 7 अगस्त 1976, बुन्देलखण्ड के कला संस्कृति और साहित्याकाश पर एक स्वर लहरी, ध्वनि तरंग उभरी और इसकी गूँज अनुगूँज बनकर नित्य प्रातः घर-घर में गूँजने लगी।

(शहनाई का ध्वनि प्रभाव)

द्वितीय स्वर : 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' के महत उद्देश्य को सामने रख आकाशवाणी छतरपुर ने अपना कार्य आरम्भ किया और इस अंचल के इतिहास, संस्कृति, कला, साहित्य और लोक जीवन के जीते-जागते चित्र उकेरे।

कलासाधकों ने अभिनन्दन किया और तब से लेकर आज तक अभिनन्दन का ये क्रम अनवरत जारी है।

पत्रोत्तर (भवदीय) का अंश

प्रथम स्वर : श्रोताओं के ये पत्र मात्र कागज के टुकड़े नहीं, इनमें समाई हैं अनुभूतियाँ, जो श्रोताओं के मन में हमारे कार्यक्रमों को सुनकर उपजती हैं।

द्वितीय स्वर : हम अपने कार्यक्रमों में विविध विषयों, सन्दर्भों, पर्व और जयन्तियों की चर्चा करते हैं, हमने प्रस्तुत किया था रूपक–'अवतरण प्रेम का' ये रूपक प्रभु 'यीशू' के महान बलिदान और उनके प्रेम को उद्घाटित करता है।

'रूपक का अंश'–

प्रथम स्वर : जीवन में शान्ति और प्रेम की स्थापना ही मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य है मानवता की विजय ही हम सबकी विजय है, मानव अधिकार दिवस, पर प्रसारित रूपक विजयनी मानवता हो जाए का एक अंश।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'अंश'–

द्वितीय स्वर : प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते, प्रकृति से कटकर तो मनुष्य अपना अस्तित्व खो देगा, उसे अपने पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित रखना ही होगा, यही संकेत करता है रूपक–'धूमिल होती हरि चुनरिया'।

'रूपक का अंश'–

प्रथम स्वर : समस्याओं और सन्दर्भों की चर्चा का माध्यम मात्र रूपक ही नहीं हम अपने केन्द्र पर समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े अधिकारियों, समाजसेवियों आदि को आमन्त्रित भी करते हैं और उन तक स्वयं पहुँचते भी हैं इसी सन्दर्भ में बुन्देलखण्ड में विकास सन्तुलन विषय पर सांसद श्री लोकेन्द्र सिंह से ली गई भेंटवार्ता का एक अंश प्रस्तुत है– (यथार्थ स्वर)

''इस क्षेत्र में पहाड़ियाँ बहुत होने के नाते सिंचाई साधन कम हैं हम चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा सिंचाई के साधन हों ताकि इस कृषि प्रधान क्षेत्र की तभी उन्नति होगी जब यहाँ पर छोटे-छोटे बाग बनेंगे और ज्यादा से ज्यादा क्षेत्र में सिंचाई साधन उपलब्ध होंगे इसके लिए हम लोग संघर्षशील हैं, जहाँ तक पुरातत्व विभाग की बात है तो उसमें तो बुन्देलखण्ड क्षेत्र आगे है दूसरी जगहों से हमारे यहाँ पर प्रसिद्ध खजुराहो के मन्दिर हैं हमारे यहाँ पन्ना जिले में नचना नाम का एक बौद्ध समय का मन्दिर है जिसकी मूरत अनोखी है। हम चाहते हैं कि इस क्षेत्र में टूरिज्म-पर्यटन बढ़े और पर्यटन बढ़ाने का हमारे यहाँ पर बहुत अच्छा इनफ्रस्ट्रक्चर है।''

द्वितीय स्वर : ग्रामीणों की समस्याओं और उनके विकास की चर्चा करता है हमारा ग्रामसभा कार्यक्रम, महिलाओं के लिए घरनी और ग्रामीण बच्चों के लिए किलकारी, ग्रामसभा ग्रामीणों की अपनी सभा है, उनकी बात उनकी अपनी बोली में–

'एक अंश काव्यपाठ का'–

प्रथम स्वर : न केवल गाँव बल्कि गाँव से दूर किसी अंचल के निवासी तक पहुँचने का भी प्रयास हम करते हैं इसी प्रयास का परिणाम था समन्वित रूपक जंगल में खिला गुलाब, सौर जनजाति–सुनिए एक अंश

'रूपकाअंश'–

द्वितीय स्वर : हमारे अंचल का कोई वासी, कोई सपूत जब सम्पूर्ण प्रदेश का गौरव बन जाए तब गदगद हो जाता है मन किन्तु अगले ही क्षण उनके वियोग का स्मरण कर भर आता है मन श्री वियोगी हरि– (यथार्थ स्वर)

भेंटवार्ता–''लोककवि इतने अधिक हुए हैं बुन्देलखण्ड में, औरतें जो गाती हैं उनका क्या कहना? एक बार डॉ. भगवानदास ने कहा है–'लोकगीत जब मिलाता हूँ वेद की ऋचाओं के साथ, तो मुझे दोनों में कोई अन्तर मालूम नहीं होता।' वो ऋचाएँ भी अपठित ऋषियों ने बनाई होंगी कभी, किसने बनाई पता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं, कुछ नाम रख दिए बाद में इस ऋषि का उस ऋषि का। ये जो लोककवि की कविताएँ होती थीं, गाते थे। बुन्देलखण्ड की खास बात कहता हूँ। उसका पता नहीं कौन है। हिन्दुस्तान के तमाम भागों में मैं गया हूँ। लेकिन फिर भी बुन्देलखण्ड को, छतरपुर को खासकर भूला नहीं हूँ।''

जहाँ मेरा पालन-पोषण हुआ, मेरी शिक्षा हुई और उसके बाद बाहर गया लेकिन बीच-बीच में मैं छतरपुर भी जाता था। छतरपुर से ही मैं देखता था, बुन्देलखण्ड को।

'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'–

प्रथम स्वर : रचनाकार और विचारक अपनी रचना और विचार के माध्यम से सदा जीवित होता है, और उसकी इस जीवन्तता का प्रमाण है हमारा नित्यप्रति का कार्यक्रम चिन्तन जिसमें जीवन और जगत् का सार प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

द्वितीय स्वर : इसी प्रयास का एक और माध्यम है नाटक जिसकी कमी की शिकायत श्रोता ने हमेशा की है, और हमने भी अपने अल्पसाधन, अभावों की बात दुहराई, किन्तु इस प्रश्नोत्तर के बीच सृजन भी होता रहा, अभी हाल ही में हमने नाटक वचन प्रस्तुत किया था।

'नाटक का एक अंश'–

प्रथम स्वर : एक और नाटक था 'राखी का मान' सुनिए एक अंश

'नाटक का एक अंश'–

द्वितीय स्वर : जीवन में उमंग-उत्साह भरता है संगीत, लोक संगीत के अलावा शास्त्रीय और सुगम-संगीत के भी हमारे कार्यक्रम हैं, फिल्म संगीत के भी श्रोता कम नहीं, सुनिए हमारे अपने गीत संगीत के कार्यक्रम की एक प्रस्तुति–

'गीत का अंश' सुर सजाओ आज मन के गीत गाने का समय है

प्रथम स्वर : ये गीत भले ही होली की बात करता हो किन्तु गाने और गुनगुनाने का समय तो आज भी है क्योंकि आज केन्द्र का जन्मोत्सव है, अपने जन्म का उत्सव कोई संस्था मनाए या कि फिर कोई व्यक्ति उमंग वही होती है, नए और पुराने आत्मीय देते हैं बधाइयाँ और ये बधाइयाँ आज स्वीकार कर रहा है ये केन्द्र, आकाशवाणी छतरपुर और कह रहा है–श्रोताओं की ओर से श्रोताओं के लिए–

अन्य स्वर : **मैं एक था**
अब अंशों-अंशों में
हजारों के जीवनों में
कदाचित उनकी स्मृतियों में भी
बँट गया हूँ। (कुसुमाग्रज की कविता का हिन्दी अनुवाद)

गीत : लगी री सुख साऊन की झिरियाँ..... से समापन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रकूट महिमा अनन्त

(चित्रकूट पर केन्द्रित रूपक)

(मन्दिर के घंटे, शंख ध्वनि)

सस्वर : चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेस
जा पे विपदा परत है, सो आवत एहि देस।

प्रथम स्वर : चित्रकूट धाम—जहाँ गूँजता है राम नाम,

द्वितीय स्वर : क्योंकि चित्रकूट में भगवान् राम ने साढ़े ग्यारह वर्ष निवास किया, अपनी लीला की।

प्रथम स्वर : मानस में प्रसंग आता है कि जब रामचन्द्र जी ने महर्षि वाल्मीकि से पूछा कि ऐसा कौन-सा स्थान है, जहाँ हमें शक्ति और सिद्धि मिल सकती है।

द्वितीय स्वर : तब महर्षि वाल्मीकि ने कहा—

गायन : कहि मुनि सुनहू भानुकुल नायक
आश्रम कहहु समय सुखदायक
चित्रकूट गिरी करहु निवासू
तह तुम्हार सब भांति सुपासू
नहीं पुनीत पुराण बखानी
अतिप्रिया निज तप बल आनी
सुर सरिधार नाऊ मंदाकिनी
जो सब पातक पोतक डाकिनी
अत्रि आदि मुनिबर बहुं बस ही
करहि जोग जप-तप तन कसही
चलहु सफल श्रम सबकर करहूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम देहु गौरव गिरि बरहू।
चित्रकूट महिमा अमित, कही कहा मुनि गाई
आई नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाई

प्रथम स्वर : महर्षि वाल्मीकि ने ऐसा क्यों कहा—क्या कारण था, इस प्रसंग की चर्चा करते हुए, निर्मोही आश्रम चित्रकूट के श्री प्रेम पुजारीदास जी महाराज—

साक्षात्कार (प्रवचन अंश)—

(यथार्थ स्वर) : महर्षि वाल्मीकि त्रिकालदर्शी सन्त थे।

जानहिं तीन काल निज ज्ञाना
करतल गत आमलक समाना

महर्षि वाल्मीकि ने भगवान् को विष्णु रूप में देखा महर्षि समझ गए ये वही आए हैं प्रभु जिनकी मैंने रामायण 'बाल्मीकि रामायण' में इनके जन्म होने से पहले ही चर्चा छेड़ी थी। वही मुझसे प्रश्न कर रहे हैं कि मैं कहाँ रहूँ? महर्षि ने जवाब न देकर के सवाल पर सवाल पैदा कर दिया और भगवान् से प्रश्न किया—कि आप मुझसे पूछ रहे हैं? कि मैं कहाँ रहूँ? मैं प्रभु आपसे पूछता हूँ कि—

पूछौ मोहिं कि रहौं कहाँ, मैं पूछत सकुचाऊ
जहाँ न होय तहाँ कहो प्रभु तुम्हु दिखाबहुँ ठाऊ

भगवान निरुत्तर हो गए, कोई उत्तर नहीं दे रहे हैं एक-दूसरे का परिचय हो गया महर्षि वाल्मीकि भगवान को पहचान गए।

महर्षि कहते हैं कि आप निशाचर रावण को मारने के लिए निकले हुए हैं, मैं आपको उचित स्थान बताता हूँ—

"चित्रकूट गिरि करहूँ निवासू
तह तुम्हार सब भाति सुपासू"

गायन-स्वर : चित्रकूट महिमा अमित, कहिय महामुनि गाय।
आये नहाय सरित वर सिय समेत दोउ भाय॥

द्वितीय स्वर : मन में जिज्ञासा होती है कि इसे चित्रकूट क्यों कहा गया।

प्रथम स्वर : क्योंकि यहाँ विचित्र-विचित्र पर्वत थे। संस्कृत में एक श्लोक कहा गया है—

अन्य स्वर : सुवर्ण कूटं रजताभि कूटं माणिक्य कूटं मणिरत्न कूटं
अनेक कूटं बहुवर्ण कूटं श्री चित्रकूटं शरण प्रपद्ये।

द्वितीय स्वर : इसका मतलब है कि सोना, चाँदी, मोती और भिन्न-भिन्न प्रकार के रत्नादि के पहाड़ यहाँ थे, इसलिए इसका नाम चित्रकूट पड़ा। ऐसी मान्यता मानी गई है। ऐसे चित्रकूट के शरण जाने की प्रार्थना है।

प्रथम स्वर : चित्रकूट गिरी के पूर्व में मंदाकिनी जी प्रवाहित हैं, यहीं रामघाट भी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : पयस्विनी और मंदाकिनी के संगम स्थल को राघवप्रयाग कहा जाता है।

प्रथम स्वर : राघव प्रयाग से 4 मील दूर कोटतीर्थ और इसी से लगा हुआ थोड़े-थोड़े अन्तर पर देवांगना, हनुमान धारा आदि स्थान है।

द्वितीय स्वर : राघव प्रयाग से दक्षिण दिशा में रामधाम, जानकी कुण्ड प्रमोदवन सिरसा वन, स्फटिक सिला आदि स्थान लगभग 1/1 कि.मी. के अन्तर से हैं।

प्रथम स्वर : दक्षिण में ही महासती अनुसुइया जी का आश्रम है। इस आश्रम के महात्मा शास्त्री जी ने हमें बताया—

साक्षात्कार (यथार्थ स्वर) : यहाँ अनुसुइया आश्रम में महर्षि अत्रि जी तपस्या करते थे। द्वापर युग में ऐसा हुआ कि कुछ लोगों के अन्दर दुर्भावनाएँ व्याप्त हुई अतः जल वर्षा समाप्त हो गई। सूखे की स्थिति आ गई। जब एकाएक अत्रिमुनि की समाधि खुली, अनुसुइया जी से उन्होंने जल की याचना की अनुसुइया जी यहाँ से कुछ आगे जंगलों तक भटकी किन्तु कहीं जल न दिखा, यदि बिना जल के वापस लौटती है तो पति आज्ञा का उल्लंघन होता है। अतः जल कहाँ से मिलें तो उन्होंने वहाँ संकल्प किया कि यदि मैंने मनवचन कर्म से पति की सेवा की हो तो मुझे जल मिलना चाहिए, माँ पृथ्वी ने कृपा की और सहस्रधारा फूट पड़ी यही पैसनी (पयस्वनी) गंगा कहलाती है।

द्वितीय स्वर : पच्छिम दिशा में गुप्त गोदावरी है।

(बहते पानी का ध्वनि प्रभाव)

प्रथम स्वर : इनकी सुन्दरता देखते ही बनती है। पर्यटन केन्द्र गुप्त गोदावरी के पथ प्रदर्शक श्री नारायण सिंह परिहार अब हमें गुप्त गोदावरी के दर्शन करा रहे हैं।

साक्षात्कार (यथार्थ स्वर) : यह त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के वनवास आने से पहले देवताओं द्वारा निर्मित की गई प्राकृतिक गुफाएँ हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी चित्रकूट क्षेत्रान्तर्गत में आकर अपने वनवास समय पर साढ़े ग्यारह वर्ष व्यतीत किए थे। उस बीच में उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि—

निशिचर हीन करहूँ महि, भुज उठाय प्रनकीन
सकल मुनिन के आश्रमन जाय-जाप इत प्रीन।
कंदर्प खोह नदी नदनारे
अगम अगाध न जाय निहारें।

ऐसी सघन गुफाओं के अन्दर छिपकर ऋषि-मुनि तपस्या कर रहे थे। भगवान वहाँ जाकर सभी ऋषि-मुनियों को सुख-शान्ति प्रदान किए थे। उन गुफाओं के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्दर उनके आने का मात्र कारण था कि यहाँ ऋतुकेतु नाम के मुनि तपस्या कर रहे थे, मयंक नाम का राक्षस इन गुफाओं में भारी आतंक कर रहा था। इसलिए भगवान ने यहाँ आकर ऋतुकेतु मुनि को सुख-शान्ति दी और मयंक राक्षस का वध करके यहाँ कुछ समय के लिए निवास किया।

यह गोदावरी नाम की धारा पंचवटी नासिक से आकर सीता-कुण्ड नामक धारा से प्रकट होती है। ये गुप्त गोदावरी की द्वितीय गुफा है इसके गेट के सामने पंचमुखी शंकरजी की प्रतिमा है। इस तरह की प्रतिमाएँ—केवल तीन जगह ही पाई जाती है, काठमाण्डू, मन्दसौर और ये गुप्त गोदावरी, इनमें पाँच भाग हैं पाँचों अलग-अलग हैं।

पहला भाग—सामने गौरी भाग—इस रूप की गौरी जी ने पूजा की थी।
दूसरा भाग—विमल भाग
तीसरा—रुद्र भाग
चौथा—जनशेष भाग
ऊपर—शिव लिंग, पौराणिक प्रतिमा है।

द्वितीय स्वर : इस वर्णन को सुनकर ऐसा लगता है कि कब चित्रकूट पहुँचकर दर्शन किए जाएँ। चित्रकूट दर्शन के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।

प्रथम स्वर : कोई मन्नतें लेकर तो कोई धार्मिक भावना से और कोई-कोई बस घूमने के लिए।

द्वितीय स्वर : ऐसे ही कुछ लोगों से बातचीत हुई—

(कुछ पर्यटकों के साक्षात्कार)

प्रथम स्वर : चित्रकूट के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक महत्व को देखते हुए, सरकार ने इसके लिए विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण का गठन किया है।

द्वितीय स्वर : भक्त लोगों के लिए चित्रकूट परम शान्ति धाम है।

द्वितीय स्वर : भील, गौड, कोल किरात और केवट यहाँ के मूल निवासी हैं।

प्रथम स्वर : केवट लोगों की नैया और जीवन-नैया राम भरोसे है। नाव उनका रोजगार है।

द्वितीय स्वर : दूसरे लोग भी दूध-दही, लकड़ी और कन्द-मूल फल बेच कर अपना गुजारा करते हैं।

प्रथम स्वर : और मगन हैं राम के भजन में।

(भजन का अंश, धीरे-धीरे मुखर होकर कम होता हुआ)

प्रथम स्वर : सारा चित्रकूट क्षेत्र लगभग 25 मील तक फैला है। चित्रकूट गिरि के अन्दर एक विशाल मन्दिर है जहाँ आज भी सन्त-गुणी ज्ञानी जपी-तपी तपस्या करते हुए राम-नाम का जाप करते हैं।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय स्वर : चित्रकूट के श्री शुकदेवजी महाराज के वचन हैं—

साक्षात्कार (यथार्थ स्वर) : ये विश्व की अनोखी तपोभूमि है परन्तु यह इतना निर्जन वन था कि यहाँ पर कोई आ-जा नहीं सकता था। साधु-सन्तों ने अपनी साधना स्थली इसे बनाया। और एकाग्र होकर यहाँ पर तपस्या की।

यहाँ पर अद्वैत ब्रह्मार्त्य विज्ञान का अनुसरण किया जाता है। आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा जोगिया रंग के वस्त्र धारण की परम्परा चलाई गई। यह संन्यास का एक प्रतीक है।

सस्वर : रामकथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारन
तुलसी सुभग सनेह बन श्री रघुवीर विहारू।

प्रथम स्वर : तुलसी के मानस में—श्रीराम वाल्मीकि और श्रीराम-भरत संवाद में—चित्रकूट की चर्चा की गई है।

द्वितीय स्वर : श्रीमद्भागवत, श्रीवाल्मीकि रामायण आदि ग्रन्थों में भी चित्रकूट का वर्णन है। कहा गया है—

अन्य स्वर : **बानिक सूवर्ण कूट बानिक सूपर्ण कूट**
खानिक सुरत्न कूट राजे चहुं खूंट है
शृंग द्रुम पर्ण कूट विहंग सुपर्ण कूट
मातु कपि कूट संत सुरभि संजूट है।
राम मन्त्र-मन्त्र भव्य कामत कल्याण कूट
भावकूट श्रद्धाकूट दृढ़ता अटूट है।
मुक्तिकूट-भुक्तिकूट भक्तिकूट भक्तकूट
जक्तकूट कूटन में कूट चित्रकूट है।

सस्वर : **चित्रकूट चिंता हरण परिक्रमा की धूरि**
उड़-उड़ ज्यों माथे परत पाप होत बड़ दूरि।

(संगीत के साथ समाप्त)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिले की तस्वीर

(टीकमगढ़ जिले की तस्वीर)

(संगीत की स्वर लहरियों के बीच स्वर का उभरना)

प्रथम स्वर–देवी विन्ध्यवासिनी और ओरछा में बिराजे भगवान राम की आदर्श मर्यादाओं से अनुप्राणित, मड़देवरा के सूर्य मन्दिर और कुण्डेश्वर के शिवत्व से अनुप्रेरित, बलदेवगढ़, मोहनगढ़ तथा गढ़कुंडार की ऐतिहासिक परम्पराओं से अनुशासित है जिला टीकमगढ़। महाकवि केशव और रायप्रवीण की काव्य-कलाओं से अनुरंजित, पपौरा तथा आहार जैसे जैन तीर्थों से संस्कारित, बेतवा, धसान, जामिनी जमडार के कलकल जल से निनादित, और भविष्य की अनन्त सुखद सम्भावनाओं तथा उपलब्धियों के प्रति पूर्ण आशान्वित है–जिला टीकमगढ़।

(हल्का-सा सन्तूर या सुरमण्डल)

द्वितीय स्वर–इस जिले की भौगोलिक संरचना अत्यन्त प्राचीन है। सम्पूर्ण क्षेत्र नीस तथा ग्रेनाइट चट्टानों से निर्मित है। पठारी प्रदेश होने के कारण अधिकांश धरातल ऊँचा-नीचा है। समुद्र तल से इसकी औसत ऊँचाई 1400 फुट है।

प्रथम स्वर–कुल क्षेत्रफल 5047 वर्ग किलो मीटर है, जो सम्पूर्ण मध्य प्रदेश राज्य का 1.19 प्रतिशत है। उत्तरी सीमा पर झांसी पूर्व में छतरपुर पश्चिम में ललितपुर तथा दक्षिण में सागर जिला स्थित है। जिले की प्रमुख नदी बेतवा उत्तर-पश्चिम सीमा पर 30 मील क्षेत्र में प्रवाहित होती है।

द्वितीय स्वर–लेकिन, जिले की इस भौगोलिक संरचना की बात करने के पूर्व स्वतः जिले की रचना यानि निर्माण की कहानी, साथ ही साथ ओरछा राज्य की बात भी करनी होगी। क्योंकि अतीत का इतिहास–प्रसिद्ध ओरछा राज्य ही वर्तमान टीकमगढ़ जिला है।

द्वितीय स्वर–बेतवा तट पर बसा सुरम्य ओरछा नगर इसके संस्थापक महाराजा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूद्रप्रताप बुन्देला और उनके अनेक यशस्वी वंशजों की यश-गाथा आज भी कह रहा है।

अन्य स्वर– **नदी बैतवैतीर जहं, तीरथ तुंगा रन्य**
(गायन में) **नगर ओडछै बदु बसै, धरनी तल में धन्य**
आस्त्रम चारि बसे जहां, चारि बर्न सुभकर्म
जपमप विधा वेद विधि, सबै बढ़े धनधर्म
दिन प्रति जहं दूनो लहै जहां दया अरूदान
एक तहां केसव सुकवि, जानत सकल जहान।

द्वितीय स्वर–स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व लगभग 690 वर्ष ओरछा के बुन्देला राजाओं के शौर्य पराक्रम, धर्मपरायणता, साहित्य और कलाप्रेम तथा न्यायप्रियता की कीर्ति पताका फहराती रही है।

प्रथम स्वर–राजा वीर सिंह जूदेव प्रथम का मथुरा में 81 मर्ज स्वर्णदान, दिल्ली दरबार में तिलक लगाकर जाने वाले टिकैत मधुकर शाह, अवध नरेश भगवान राम को ओरछा लाने वाली रानी गणेश कुंवरी और भावज के सतीत्व को निष्कलंक साबित करने के लिए हँसते-हँसते विषपान करने वाले लाला हरदौल।

द्वितीय स्वर–ये सब ओरछा राज्य की कुछ ऐसी घटनाएँ और पात्र हैं जो अनंतकाल तक चिर स्मरणीय हैं। विशेषकर हरदौल का पावन बलिदान पवित्र प्रेम की अलख जगाए है। राजा जुझार सिंह की पश्चाताप से भरी विकल पुकार आज भी गूंजती सी जान पड़ती है

(Echo में हरदौल-हरदौल की आवाजें)

और लाला हरदौल को तो देवता की भांति पूजा जाता है। गाँव-गाँव में इनके चबूतरे बने हुए हैं। और उनकी बलिदान गाथा, जन-जन के कंठ से फूट पड़ती है।

(मैयादीन तिवारी का गाया लोकगीत)

द्वितीय स्वर–लाला हरदौल के इस पावन बलिदान और फिर बाद में भी राजवंश के गृह-कलह के कारण ओरछा राज्य वीरान-सा ही हो गया था। अतः महाराजा विक्रमजीत सिंह ने 1783 ई. में अपनी राजधानी ग्राम टेहरी को बनाया। जिसे बाद में रणछोड़ टीकम कृष्ण के नाम पर टीकमगढ़ नाम दिया गया।

प्रथम स्वर–और फिर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्–ओरछा राज्य के विलीनीकरण के साथ ही 23 अप्रैल सन् 1948 को टीकमगढ़ जिला बन गया।

(संगीत)

द्वितीय स्वर–इस टीकमगढ़ और अतीत के ओरछा की कुछ बातें आज भी विद्यमान हैं। इसी शृंखला में सन् 1935 का वर्ष हिन्दी साहित्य संसार में अविस्मरणीय रहेगा। जब ओरछा के महाराज श्री वीरसिंह जूदेव ने हिन्दी की सेवा के लिए दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहस्र मुद्राओं का देव पुरस्कार दिया था। जो आज भी उसी नाम से प्रदान किया जाता है।

इस ऐतिहासिक दिन की स्मृतियाँ साहित्य सेवियों के जनमानस में जीवंत हैं।

साहित्यकार से भेंटवार्ता

प्रथम स्वर : आज ये जिला शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

द्वितीय स्वर : गाँवों के देश भारत के इस टीकमगढ़ जिले के अन्तर्गत कुल 1003 गाँव हैं। और जैसा कि पूज्य बापू ने कहा था—गाँवों की प्रगति के बिना देश की उन्नति सम्भव नहीं अथवा आचार्य विनोबा का शास्त्र शुद्ध शब्द 'ग्राम्य स्वराज्य' को दृष्टि में रखते हुए गाँवों की चहुंमुखी उन्नति के लिए ग्रामीण विकास अभिकरण के माध्यम से विभिन्न योजनाओं को हाथ में लिया गया है।

ग्रामीण विकास अभिकरण अधिकारी से भेंटवार्ता

प्रथम स्वर : देश में हरित क्रान्ति का दौर चला तो भला टीकमगढ़ जिला इससे अछूता कैसे रहता और वैसे भी ये जिला मुख्य रूप से कृषि प्रधान ही है।

द्वितीय स्वर : सर्वसाधारण कृषक प्रगतिशील है और कोई भी नवीन योजना क्रियान्वित करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। विपुल उत्पादन कार्यक्रम के अन्तर्गत सन् 1968-69 में जिला प्रदेश में सर्वप्रथम रहा।

प्रथम स्वर : जिले की भावी कृषि योजनाओं और कृषि व्यवस्था की चर्चा करते हुए।

जिला कृषि अधिकारी से भेंटवार्ता

प्रथम स्वर : इस जिले का भविष्य कृषि पदार्थों के उत्पादन के साथ-साथ वनोपज पर भी निर्भर करता है। इस जनपद का लगभग 780 वर्ग किमी क्षेत्र वनाच्छादित है। पौराणिक तुंगारण्य ओरछा के निकट ही है। महाकवि केशव ने कहा है—

गायन सस्वर—'चहुं भाग-बाग बन मानहुं सघन घन सोभा की सी साला हंस माला सी सरितबर।'

प्रथम स्वर : और इन्हीं बाग वन सघन घन की सुरक्षा और विस्तार के लिए जिला वनमण्डल प्रयत्नशील है।

जिला वनमण्डलाधिकारी से भेंटवार्ता

द्वितीय स्वर : वित्त और साख सुविधाओं की कमी से किसानों खुदरा व्यापारियों और निज के छोटे-छोटे उद्योग चलानेवालों की सफलता पर विपरीत प्रभाव न पड़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बात को ध्यान में रखकर साख-सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है।

प्रथम स्वर : क्षेत्रीय ग्रामीण विकास बैंक एक्ट 1976 के अन्तर्गत जिले में ....को क्षेत्रीय ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना की गई। इसकी 37 शाखाएँ आज, जिले के विभिन्न गाँवों में कार्यरत हैं। जोकि किसानों की छोटी-छोटी जरूरतों के लिए ऋण उपलब्ध कराती हैं। इस बारे में हमें बताया।

ग्रामीण बैंक के प्रबंधक से भेंटवार्ता

प्रथम स्वर : कृषि के साथ ही साथ ये जिला पशुप्रधान भी है। पूरे प्रदेश में प्रति किलोमीटर सर्वाधिक पशु टीकमगढ़ जिले में ही पाले जाते हैं। यहाँ पशुपालन सम्बन्धी कई योजनाएँ क्रियान्वित की गई हैं।

द्वितीय स्वर : इनमें पशु स्वास्थ्य, पशुप्रजनन और पशुउत्पाद विपणन सम्बन्धी योजनाएँ प्रमुख हैं। एक भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र भी यहाँ है। इस प्रक्षेत्र और पशुपालन की योजनाओं का विवरण देते हुए।

पशुपालन अधिकारी से भेंटवार्ता

प्रथम स्वर : सिंचाई साधनों की दृष्टि से टीकमगढ़ जिला पूर्व से ही समृद्ध और विकसित है। पूरे जिले में 504 हजार हैक्टेयर भौगोलिक क्षेत्रफल में लगभग 962 चन्देलकालीन तालाब हैं। और प्रति गाँव औसतन 40 कुएँ हैं। जो कि पूरे देश में प्रति गाँव की दृष्टि से सबसे अधिक है।

द्वितीय स्वर : वर्तमान में लगभग 35 लघु सिंचाई योजनाएँ निर्माणाधीन हैं। जिनके द्वारा जिले का 4801 हैक्टेयर सिंचाई का रकबा प्रस्तावित है। कार्यपालन मन्त्री सिंचाई विभाग जानकारी देते हुए हमें बताया।

भेंटवार्ता

प्रथम स्वर : इस जिले की गौरवपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक युगयात्रा हरितक्रान्ति और प्राकृतिक साधनों की उपलब्धता के उपरान्त भी, अपनी कुछ विशिष्ट समस्याएँ और आवश्यकताएँ हैं और इसीलिए विकास गति को तीव्र करने की आवश्यकता भी अनुभव की गई है। हाल ही में गठित बुन्देलखण्ड विकास प्राधिकरण की स्थापना इस दिशा में एक नया कदम है। जिले की समस्याओं, आवश्यकता तथा सम्भावना और विकास की चर्चा करते हुए जिला कलेक्टर–

जिला कलेक्टर से भेंटवार्ता

द्वितीय स्वर : तो ऐसी है तस्वीर टीकमगढ़ जिले की। लेकिन ये तस्वीर अभी पूरी कहाँ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम स्वर : अभी तो इसमें विकास के नए रंग और उपलब्धियों के नए दृश्य उभरने हैं।

द्वितीय स्वर : इस महत उद्देश्य के लिए सभी आवश्यक, प्रेरक व आधारभूत सामग्री एकत्र कर एक सर्वांग सुन्दर, सर्वांगपूर्ण जिले का चित्र बनाना है।

प्रथम स्वर : तभी इस जिले की गौरवशाली परम्परा शतगुणित होकर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी।

ये एक विकास यात्रा है और विकास है सतत् गतिशील प्रक्रिया....

(कोई लोकगीत या मधुर संगीत)
(हरे-हरे खेतन में सोनो उपजरओ से समाप्त)

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(....पिछले फ्लैप से जारी)

एक हुनरमंद और सृजनशील व्यक्ति के बूते की बात है। सुनील केशव देवधर रूपक के क्षेत्र में अति परिचित नाम हैं। म.प्र. में उनके काम को प्रशंसा प्राप्त है। राष्ट्रीय नेटवर्क पर भी उनके द्वारा निर्मित रूपकों ने एक कामयाब जगह बनाई है।

इस संग्रह में उनके कुल 15 रूपकों के आलेख प्रकाशित हैं। जहाँ तक विषय चयन का प्रश्न है तो लेखक ने संस्कृति को ही केन्द्र में रखा है जिसमें सांस्कृतिक-साहित्यिक शीर्ष व्यक्तित्व हैं या फिर राष्ट्रीय-सांस्कृतिक पर्व-त्यौहार। ये आलेख इस बात की पुष्टि करते हैं कि लेखक ने विषय में गहरे उतर के इन्हें लिखा है। अध्ययन और शोध को केन्द्र में रखके इनका एक रूप प्रत्यक्ष हुआ है।

संकेतों में संगीत और आवाज के उपयोग को दर्शाया गया है। स्वरों की चयन प्रक्रिया का एक उजागर भी इन लेखों में है। यह गौरतलब है कि लेखक अपने कृतित्व में कविता के अधिक समीप हैं। वे कविताओं से अपने आपको अधिक सुविधा से अभिव्यक्त कर पाते हैं। इस संग्रह में प्रेमचंद, फिराक, महादेवी, जयप्रकाश नारायण, महात्मा गांधी जहाँ एक तरफ वर्तमान सन्दर्भों में हैं वहीं राम और कृष्ण सरीखे मिथकीय चरित्र भी हैं।

इस संग्रह में एक लेखक आरम्भ से अन्त तक उपस्थित है, जो भाषा में अपने विषयों को मूर्त करता है समूची प्रतिबद्धता और सृजनशीलता के साथ। शुभकामनाएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

—लीलाधर मंडलोई